पाठ-1 लाख की चूड़ियाँ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कहानी से

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव बहुत चाव से जाता था, क्योंकि उसे वहाँ रहने वाला बदलू मनिहार लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देता था जो उसे बहुत अच्छी लगती थीं । वह बदलू को मामा न कहकर बदलू काका इसलिए कहता था क्योंकि उस गाँव के बच्चे बदलू को 'बदलू काका' कहकर सम्बोधित करते थे ।

2. वस्तु-विनिमय वह पद्धति है जिसमें किसी वस्तु के बदले मनचाही वस्तु प्राप्त की जाती है । इस प्रकार वस्तुओं के लेन-देन में पैसे की जगह वस्तु का प्रयोग किया जाता है । आज यह चलन नहीं है । आज पैसों के बदले वस्तुएँ खरीदी जाती हैं ।

3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं'- इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने मशीनों के अंधाधुंध प्रयोग करने से उत्पन्न बढ़ती बेरोजगारी की ओर संकेत किया है । केवल कुछ ही मशीनों द्वारा सैकड़ों मनुष्यों के बराबर काम हो जाता है । बेरोजगारी के कारण वे भुखमरी के शिकार हो जाते हैं । लेखक ने कारीगरों की इसी व्यथा की ओर संकेत किया है ।

4. लाख की चूड़ियों के कुशल कारीगर बदलू का काम मशीनों के आने से छिन चुका था । वह असहाय और लाचार हो गया था। जिस काँच की चूड़ियों से उसे नफरत थी आज सब जगह उसे वही दिखाई पड़ रही थीं । अब हाथ की कारीगरी की अपेक्षा सुन्दरता तथा चमक-दमक को महत्त्व दिया जाने लगा था । बदलू के मन की यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी ।

5. मशीनी युग के कारण बदलू का काम छिन गया था । वह बेरोजगार हो गया था । उसे गरीबी का जीवन जीना पड़ रहा था । उसे अपनी गाय बेचनी पड़ी थी । वह कमजोर तथा वृद्ध हो गया था और बीमार तथा चिंतित रहने लगा था।

कहानी से आगे

1. मैंने मेले-बाजार आदि में हाथ से बने रंग-बिरंगे खिलौने, रंगीन मोमबत्तियाँ, हाथ के पंखे, जूट के सामान आदि बिकते देखे हैं । मैंने एक कारीगर से जूट से बने सामान बनाने की कला सीखी । बाद में मैं खुद सामान बनाकर बेचने लगा, इससे मुझे अच्छी आमदनी हुई ।

2. लाख की वस्तुओं का निर्माण राजस्थान, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश आदि में होता है । लाख से चूड़ियों के अलावा खिलौने, सजावटी वस्तुएँ, आभूषण, मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मुहर तथा पैकिंग सील बनाई जाती हैं ।

अनुमान और कल्पना

1. घर में मेहमान के आने पर मैं उनका अभिवादन कर उनका परिचय प्राप्त करूँगा और बैठक में पहुँचाकर उनके जलपान की व्यवस्था करूँगा । मैं उनके परिवार की कुशल-क्षेम पूछकर उनके आने का अभिप्राय पूछूँगा और घर के बड़ों को उनके आने की खबर दूँगा ।

2. मुझे छुट्टियों में अपने नाना-नानी के घर जाना अच्छा लगता है । वहाँ की दिनचर्या बहुत मस्ती भरी होती है । वहाँ स्कूल जाने की चिंता नहीं रहती इसलिए आराम से देर तक सोने को मिलता है । खाने-पीने को कई तरह की चीजें मिलती हैं । नए-नए दोस्त बन जाते हैं ।

3. मशीनी युग में आए दिन अनेक परिवर्तन होते रहते हैं । इस परिवर्तन का एक अच्छा उदाहरण कृषि है । कुछ समय पहले तक खेती-बाड़ी का काम किसान हाथ से तथा जानवरों के द्वारा किया करते थे । लेकिन आज खेती सम्बन्धी हर काम के लिए मशीनों का प्रयोग होने लगा है । इससे जहाँ पैदावार में बढ़त हुई है वहीं कृषि कार्य में लगे मजदूरों की रोजी-रोटी छिन गई है और उन्हें आजीविका के लिए शहर की ओर जाने को मजबूर होना पड़ा है ।

4. बाज़ार में अनेक प्रकार के सामान बिकते हैं । इनमें खाने-पीने के सामानों के अलावा पहनने-ओढ़ने तथा मनोरंजन के सामान भी होते हैं । इन सामानों के डिजाइनों में, विशेषकर कपड़ों के डिजाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है । यह समाज की सोच, रुचि व फैशन आदि में आए परिवर्तन के कारण होता है ।

5. बदलाव प्रकृति का नियम है । बदलाव हर युग में आता है और आता रहेगा । यद्यपि बड़े-बुजुर्ग इस बदलाव को देर से स्वीकार करते हैं परन्तु युवा पीढ़ी इसे तुरंत अपना लेती है । बड़े लोग इसे फैशन का नाम देते हैं और प्रारम्भ में इसका विरोध करते हैं परन्तु आगे चलकर धीरे-धीरे इसे स्वीकार कर लेते हैं ।

भाषा की बात

1. 1. बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूड़ियों से । 2. जो सुन्दरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख की चूड़ियों में कहाँ संभव है ? 3. शहर की बात कुछ और है लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। 4. नाजुक तो फिर होता ही है लला । 5. कहा, जाओ शहर से ले आओ ।

अर्थ : 1. इस वाक्य से बदलू की मनोदशा प्रकट होती है । वाक्य में काँच की चूड़ियों को मशीनी युग का प्रचलन बताया गया है जिससे उस जैसे कारीगर का रोजगार छिना जा रहा है । ये चूड़ियाँ उसे अन्दर ही अन्दर दु:ख और पीड़ा पहुँचा रही हैं । 2. काँच की चूड़ियों को लाख की चूड़ियों से अधिक सुन्दर बताकर कारीगरी को भूलकर बनावटी सुन्दरता और चमक-दमक को महत्त्व देने वालों पर व्यंग्य किया गया है । इस वाक्य में गहरा दर्द छिपा है । 3. यहाँ शहरी संस्कृति पर व्यंग्य किया गया है । पाश्चात्य संस्कृति के नाम पर शहर वाले हर अच्छी-बुरी बातों, आदतों और रिवाजों को अपनाते जा रहे हैं, पर गाँवों में ऐसा वातावरण नहीं है । 4. लोगों को कारीगरी और मजबूती नहीं चाहिए । उन्हें बनावटी कोमलता पसंद है । यह कोमलता उन्हें कभी भारी पड़ सकती है इसकी उन्हें चिंता नहीं है । 5. इस वाक्य में बदलू के व्यक्तित्व की दृढ़ता प्रकट होती है । वह कम कीमत पाने पर जमींदार जैसे व्यक्ति का प्रतिरोध कर सकता है किंतु दबाव में आकर झुकता नहीं ।

2. **व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ**—बदलू, जनार्दन, रज्जो, लाख, नीम।

जातिवाचक संज्ञाएँ—आदमी, मामा, चूड़ियाँ, गाँव, बच्चे, मकान, गोलियाँ, वृक्ष, चौखट, सलाख, अनाज, हुक्का, घरवाली, गाय, आम, स्कूल, दूध, मशीन, लड़की, शहर, जमींदार, लला, मचिया आदि।

भाववाचक संज्ञाएँ—कसर, चिढ़, खातिर, गर्मी, पढ़ाई, रुचि, जिद, प्रसन्नता, शान्ति, सुंदरता, मोच, व्यक्तित्व आदि।

3.

मूल शब्द	**बदले रूप वाले शब्द**
लाला/लल्ला	लला
उम्र	उमर
वक्त	बखत
मर्द	मरद
अंजलि	अंजुलि

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (ख), **3.** (घ), **4.** (ग), **5.** (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. बदलू लेखक को रंग-बिरंगी लाख की गोलियाँ बनाकर दिया करता था।

7. बदलू अपना काम घर के आगे आँगन में लगे नीम के पेड़ के नीचे बैठकर किया करता था।

8. चूड़ियों को गोल और चिकनी बनाने में मुँगेरियाँ काम आती थीं।

9. उसे लगता था कि वह बेलन न होकर किसी नई बहू की कलाई हो।

10. बदलू पेशे से मनिहार था।

11. क्योंकि बदलू के गाँव तथा आस-पास के गाँवों की स्त्रियाँ उसी की बनाई चूड़ियाँ पहनती थीं।

12. वस्तु के बदले पैसे न लेकर उसके बदले

कोई दूसरी वस्तु लेकर बेचना, वस्तु-विनिमय होता है।

13. शादी-विवाह के अवसर पर बदलू को सुहाग वाली चूड़ियों के बदले उसको उसकी घरवाली के लिए बहुत सारे वस्त्र, ढेरों अनाज, पगड़ी और रुपए भी मिलते थे।

14. बदलू को काँच की चूड़ियों से चिढ़ थी।

15. बदलू का मानना था कि शहर की स्त्रियों की कलाई बहुत नाजुक होती है, यदि वह लाख की चूड़ियाँ पहनेंगी तो उनकी कलाई में मोच आ जाएगी।

16. जमींदार साहब उसे दस आने दे रहे थे। इसे बदलू ने अपमान माना। इसलिए सुहाग का जोड़ा नहीं दिया।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

17. बदलू नीम के पेड़ के नीचे भट्टी में लाख पिघलाता और मुलायम होने पर उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता । फिर उन्हें बेलननुमा मुँगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता । जब पूरे हाथ की चूड़ियाँ बन जातीं तो उन्हें अलग-अलग रंगों में रँग देता ।

18. एक दिन जब लेखक के मामा की छोटी लड़की अचानक फिसलकर आँगन में गिर गई और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई तब लेखक को बदलू की याद आई।

19. बदलू लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कुशल कारीगर था। उसकी चूड़ियाँ आस-पास के गाँवों में भी स्त्रियाँ पहनती थीं। लेकिन काँच की चूड़ियाँ लोकप्रिय हो जाने से उसका धन्धा बंद हो गया। यही वह व्यथा थी।

20. गाँवों में काँच की चूड़ियाँ आने से पहले बदलू की लाख की चूड़ियाँ ही पहनी जाती थीं। उसकी चूड़ियों की बहुत खपत थी। लेकिन काँच की चूड़ियों ने उसे हरा दिया। परन्तु हार जाने पर भी बदलू ने अपना स्वाभिमान नहीं त्यागा।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

21. हमारे घर में हाथ की बनी अनेक वस्तुएँ प्रयोग में आती हैं। हाथ से बनाया गया पलंग है जो हाथ से बुना गया है। हाथ से बुनी गई दरियाँ हैं। हाथ से बुने गए स्वेटर, मोजे और स्कार्फ हैं। हाथ से बनी मिठाइयाँ और भोजन प्रयोग में आता है, दीपावली पर हाथ से बने मिट्टी के दीपक और लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियाँ प्रयोग में आती हैं। हमारा पूरा मकान भी कारीगरों ने हाथों से बनाया है।

यदि ये वस्तुएँ मशीन से बनने लगें तो अनेक लोगों का रोजगार समाप्त हो जाएगा। इससे बेरोजगारी और गरीबी बढ़ेगी।

**

पाठ-2 बस की यात्रा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कारण बताएँ

1. लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह इतनी खटारा बस को चलाने का साहस जुटा रहा था । वह अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ कर रहा था । ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में श्रद्धाभाव ही उमड़ता है।

2. लोगों ने यह सलाह इसलिए दी क्योंकि इस बस का कोई भरोसा नहीं था कि वह कब और कहाँ रुक जाए । शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़े, कुछ पता नहीं रहता । लोगों के अनुसार यह बस डाकिन की तरह है ।

3. जब बस का इंजन चालू किया गया तो पूरी बस झनझना उठी । लेखक को ऐसा लगा मानो पूरी बस ही इंजन है और वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो ।

4. लेखक को यह सुनकर हैरानी इसलिए हुई कि देखने में तो यह बस अत्यंत पुरानी, टूटी-फूटी सी लग रही थी । उसे चलाने के लिए धक्का लगाना पड़ता था । बस कम्पनी के हिस्सेदार कह रहे थे कि इस तरह की बस अपने आप चलेगी, यही बात लेखक को चकित कर रही थी ।

- लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन इसलिए समझ रहा था क्योंकि जो भी पेड़ आता उसे देखकर लेखक को डर लगता कि कहीं बस पेड़ से टकरा न जाए ।

पाठ से आगे

1. सविनय अवज्ञा आन्दोलन महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध शुरू किया गया था । अंग्रेज शासकों ने अपनी दमनकारी नीतियों के चलते भारतीयों पर अनेक अत्याचार किए । उन्होंने नमक पर भी टैक्स लगा दिया । इसके विरोध में गाँधीजी ने नमक बनाकर ब्रिटिश शासन के नमक कानून को तोड़ा।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के उद्देश्य थे–
(अ) भारतीय किसान व्यावसायिक खेती करने के लिए मजबूर थे । उन्हें इस मजबूरी से मुक्ति दिलाना । (ब) आमदनी कम होने के कारण वे लगान का भुगतान नहीं कर पा रहे थे, इससे उन्हें निजात दिलाना। (स) ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जा रहे शोषण के विरुद्ध यह एक सार्थक आन्दोलनरूपी हथियार था।

2. 'सविनय अवज्ञा' का प्रयोग व्यंग्यकार ने खटारा बस के चलने या चलाए जाने के सन्दर्भ में किया है । यह आन्दोलन 1930 में ब्रिटिश सरकार की आज्ञा न मानने के लिए किया गया था । अंग्रेजों की दमनकारी नीति के खिलाफ भारत की जनता विनयपूर्वक संघर्ष करते हुए आगे बढ़ती रही । इसी प्रकार यह खटारा बस भी जर्जर होने के बावजूद चलती जा रही थी।

3. पिछली गर्मियों में मुझे एक रिश्तेदार की शादी में जोधपुर जाना था । हमने सारी तैयारियाँ कर ली थीं । बस के समय पर हम पहुँच गए। बस खड़ी थी । उसमें कुछ यात्री भी बैठे थे । हमने भी अपनी जगह ले ली । थोड़ी देर बाद चालक ने हॉर्न बजा दिया और बचे-खुचे यात्री भी अन्दर आ गए । चालक ने बस स्टार्ट करनी चाही लेकिन उसके काफी प्रयास के बाद भी इंजन स्टार्ट नहीं हुआ । उसने कुछ यात्रियों से उतरकर बस को धक्का देने के लिए कहा । कुछ दूर तक धक्का देने के बाद बस को एक जोर का झटका लगा और इंजन स्टार्ट हो गया । लेकिन झटका इतना जबरदस्त था कि ऊपर रखा सामान मुसाफिरों के ऊपर गिर पड़ा और सभी मुसाफिर अपने सामने वाली सीट पर जा भिड़े। खैर किसी तरह लोग संभले और बस चलने लगी । मुश्किल से पन्द्रह-बीस किलोमीटर चली होगी कि अचानक एक और झटका लगा और बस खड़ी हो गई । बस जहाँ खड़ी थी वह एक सँकरी-सी पुलिया थी। काफी धक्के लगाने के बावजूद बस ने चूँ तक नहीं किया । बहुत समय तक प्रयास करने पर भी जब बस नहीं चली तो चालक नीचे उतर गया और सामने से आने वाले किसी वाहन की प्रतीक्षा करने लगा जिससे वह उस वाहन की मदद से बस को खींचकर पुलिया से बाहर निकलवा सके । इतने में सामने से एक ट्रक को आता देखकर उसने ट्रक को रोका और उसके चालक से बस को खिंचवाने का आग्रह किया । बस को खींचने का प्रयास चल ही रहा था कि अचानक पीछे से तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने बस को जोरदार टक्कर मारी । टक्कर से बस तो जरूर आगे बढ़ी लेकिन बस में सवार कई यात्री घायल हो गए और बस के अगले और पिछले हिस्से में भी काफी नुकसान हुआ । गनीमत थी किसी की जान नहीं गई । उस घटना की याद आज भी मेरे स्मृतिपटल पर है ।

मन बहलाना

बस यदि जीवित प्राणी होती तो अपनी व्यथा कुछ इस प्रकार कहती – मैं एक पुरानी जीर्ण-शीर्ण बस हूँ । आज से कोई तीस साल पहले मैं जवान तथा सुन्दर थी और मेरी चाल पर सभी फिदा होते थे । मेरा चालक चलने से पहले रोज मुझे फूल-माला से सजाता और इंजन स्टार्ट करने से पहले मुझे प्रणाम करता था । मुझ पर बैठने वाली सवारियाँ भी मेरी बहुत तारीफ किया करती थीं। लेकिन आज मैं बूढ़ी हो गई हूँ । मेरे जीवन में बहुत से

चालक आए पर सब एक जैसे नहीं थे । यात्री भी बदलते गए । मेरे मालिक ने भी मेरा खूब शोषण किया । उसने मुझे पैसा कमाने की मशीन समझ लिया । पहले जहाँ मैं दिनभर में दो चक्कर लगाती थी लेकिन अब मुझे आठ-दस चक्कर लगाने पड़ते हैं। इससे मेरे पैर फटने लगे हैं और मैं अब उतनी फुर्ती के साथ नहीं चल पाती जितनी मैं अपनी जवानी के दिनों में चला करती थी । पहले मुझे खुराक भी शुद्ध मिला करती थी जिससे मेरा दिमाग व पेट दुरुस्त रहता था । धीरे-धीरे मुझे मिलावटी भोजन दिया जाने लगा । फिर भी मैं अपनी जान पर खेलकर भी लोगों की सेवा कर रही हूँ। मेरे चालक और मालिक को मेरी इस दशा पर बिल्कुल भी तरस नहीं आता । ऐसी हालत में मैं कभी भी कहीं भी दम तोड़ सकती हूँ ।

भाषा की बात

1. **बस** : 1. हमने ट्रेन के बजाय बस से जाने का निर्णय किया । 2. चलती बस में चढ़ने-उतरने का प्रयास ठीक नहीं ।

वश : 1. इन परिस्थितियों पर मेरा कोई वश नहीं है । 2. यह काम तुम्हारे वश का नहीं है ।

बस : 1. बहुत हो गया, अब बस भी करो। 2. बस, मैं तुम्हें और कुछ नहीं दे सकता।

2. **कारक चिह्नयुक्त वाक्य :**

1. बस कम्पनी **के** हिस्सेदार भी उसी बस **से** जा रहे थे ।
2. डाक्टर मित्र **ने** कहा - ''डरो मत चलो ।''
3. मुझे उसके किसी हिस्से **पर** भरोसा नहीं था।
4. क्षीण चाँदनी **में** वृक्षों **की** छाया **के** नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी ।

'कि' योजक शब्दयुक्त वाक्य :

1. हमें लग रहा था **कि** हमारी सीट के नीचे इंजन है ।
2. मालूम हुआ **कि** पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है ।
3. मैं उम्मीद कर रहा था **कि** थोड़ी देर बाद बस कम्पनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे ।
4. लोग इसलिए इसमें सफर नहीं करना चाहते **कि** वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा।

3. **टहलना** = वह रोज टहलने जाता है । **चलना** = फर्श पर संभलकर चलना । **दौड़ना** = पुलिस वाले चोर के पीछे दौड़ने लगे । **धड़कना** = उसका दिल जोर से धड़कने लगा । **चक्कर लगाना** = पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है ।

4. (क) **जल** – (पानी, जलना) – **जल** की एक भी बूँद न गिरने से धरती **जल** रही है। (ख) **फल** – (परिणाम, खाने वाला फल) – अच्छी देखभाल का **फल** यह हुआ कि मुरझाते पेड़ों में भी **फल** आ गए । (ग) **हार** – (पराजय, फूलों का हार) – पहलवान से **हारने** के बाद तुम्हें **हार** की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

5. **संख्यावाचक विशेषण**- पाँच मित्र, आठ बजे।

गुणवाचक विशेषण- समझदार व्यक्ति, हरे-भरे पेड़।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (घ), **3.** (घ), **4.** (ग)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

5. लोगों ने लेखक को सलाह दी कि इस शाम वाली बस से सफर न करें।

6. बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसे बस बैठने के नहीं पूजा के योग्य लगी।

7. बस में यात्रा करने में आगा-पीछा करने पर लेखक के डॉक्टर मित्र ने कहा कि यह बस नई बसों की तुलना में अधिक विश्वसनीय है और एक माँ की भाँति हमें अपनी गोद में बैठाकर ले जाएगी।

8. उनकी आँखें कह रही थीं कि यह बस तुम्हारी अन्तिम विदाई का कारण न बन जाए।

9. पेट्रोल की टंकी में छेद हो जाने से बस रुक गई और ड्राइवर ने पेट्रोल बाल्टी में भरकर नली से इंजन में पहुँचाने लगा।

10. मार्ग में पड़ने वाले पेड़ों को देखकर लेखक को ऐसा लगता जैसे बस उनसे टकरा जाएगी और झील को देखकर उसे एहसास होता कि बस उसमें डुबकी लगा देगी।

11. इतनी कमजोर और दयनीय हालत वाली बस में यात्रा करने के कारण लेखक और उसके मित्रों को ग्लानि महसूस हो रही थी।

12. हिस्सेदार जानते हुए भी बस से सफर का खतरा उठा रहा था। यह देखकर लेखक को उस पर श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

13. बस की दयनीय दशा देखकर उसने पन्ना ही क्या कहीं भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी।

14. बस की दशा देखकर लेखक ने सोचा कि अब हम पन्ना कभी भी न पहुँचेंगे। कोई उपाय न देख लेखक इत्मीनान से सफर करने लगा। अब लेखक और उसके मित्रों की बेताबी और तनाव दूर हो गया था।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

15. जब बस चली तो लेखक ने उसकी समानता गाँधीजी द्वारा चलाए गए सविनय अवज्ञा आन्दोलन से की। बस के साथ उसके भी सारे भाग असहयोग कर रहे थे। अत: लेखक द्वारा की गई समानता सही है।

16. यह दृश्य देखकर लेखक ने व्यंग्य किया कि थोड़ी देर बाद कम्पनी का हिस्सेदार उसे नली से उसी प्रकार पेट्रोल पिलाएगा, जैसे माँ बच्चे को शीशी से दूध पिलाया करती है।

17. हिस्सेदार को पता था कि कभी भी कोई जानलेवा दुर्घटना हो सकती थी। फिर भी वह उस बस से यात्रा कर रहा था। इसलिए लेखक ने उस पर व्यंग्य किया कि वह पैसे बचाने के लिए ऐसा कर रहा था।

18. 'बस की यात्रा' पाठ व्यंग्य और हास्यपूर्ण भाषा-शैली में लिखा गया है। इससे हमारा मनोरंजन तो होता ही है। साथ ही कुछ उपयोगी बातें भी ज्ञात होती हैं। लेखक सावधान करता है कि ऐसे वाहनों द्वारा यात्रा करना जानबूझकर अपने प्राण संकट में डालना है। इनके मालिक इन वाहनों से केवल कमाई करना चाहते हैं, उनके रख-रखाव पर खर्च नहीं करना चाहते।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

19. जब लेखक ने उस जर्जर और पुरानी बस को देखा तो हँसी भी आई और निराशा भी हुई। उसकी समझ में आ गया कि लोग इस बस से सफर क्यों नहीं करना चाहते। बस उसे किसी भी तरह यात्रा करने योग्य नहीं लगी। उसे उसके अपने आप चलने पर भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह बस पर सवार होने में झिझक रहा था। डॉक्टर मित्र के कहने पर वह बस में सवार हो गया। जब उसका ध्यान उन्हें विदा करने आए लोगों की ओर गया तो उनके हाव-भाव देखकर उसे डर-सा लगने लगा। लग रहा था जैसे वे लोग उन्हें अन्तिम विदा देने आए हों। फिर उसने मन को समझाया कि संसार में जो आया है उसे एक न एक दिन जाना ही पड़ता है। आदमी के मरने का कोई भी बहाना हो जाता है।

**

पाठ-3 दीवानों की हस्ती

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से

1. कवि हँसमुख प्रवृत्ति का है । वह जहाँ भी जाता है लोगों को खुश करता है । वह अपने लक्ष्य अर्थात् लोगों की खुशियों को स्थायी रूप नहीं दे पाता है । उसके जीवन में आई खुशियाँ दीर्घकालिक नहीं होतीं । कवि इसे अपनी असफलता मानकर दु:खी होता है । इसीलिए कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' कहा है ।

2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटाने वाले कवि द्वारा अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जाने का अभिप्राय यह है कि कवि दु:खी और

अभावग्रस्त लोगों के बीच प्यार तथा अपनत्व प्रकट करते हुए उनमें खुशियाँ बाँटता है परन्तु ये खुशियाँ थोड़े समय के लिए ही होती हैं । कवि उन्हें लम्बे समय तक बनाए रखना चाहता है । अपने प्रयास में असफल होने पर वह इसे अपने हृदय पर असफलता का बोझ मानता है । इससे कवि की निराशा प्रकट होती है ।

3. कविता में निम्नलिखित बातें मुझे सबसे अच्छी लगती हैं – (1) कविता में बेफिक्र तथा मस्त जीवन जीते हुए दूसरे की खुशियों को ध्यान में रखने का संदेश दिया गया है। (2) सुख-दु:ख को समान भाव से ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है । (3) कविता में उल्लासपूर्वक मस्ती का जीवन बिताने का संदेश दिया गया है । (4) कविता में अभावग्रस्त लोगों में खुशियाँ बाँटकर उनका दु:ख दूर करने की बात कही गई है । इससे समानता, एकता, प्रेम तथा सद्भाव में वृद्धि होती है ।

कविता से आगे

मनुष्य को सारी चिंता छोड़कर मस्ती भरा जीवन जीना चाहिए लेकिन जब हमारी मस्ती से किसी का अहित होने लगे या उसकी भावनाएँ आहत होने लगें तब वह मस्ती हानिकारक हो सकती है । यदि हम अपने जीवन में केवल मौज-मस्ती को ही प्राथमिकता देंगे तो हम तबाह हो जाएँगे । हमें अपने समाज और देश के प्रति अपने दायित्वों को नहीं भूलना चाहिए । अगर हम उन दायित्वों का पालन नहीं करेंगे तो हम एक जिम्मेदार नागरिक नहीं बन सकते ।

अनुमान और कल्पना

कविता में परस्पर विरोध प्रकट करने वाली पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1. *आए बनकर उल्लास अभी,*
   आँसू बनकर बह चले अभी ।
   (उल्लास और आँसू साथ-साथ)
2. *जग से उसका कुछ लिए चले,*
   जग को अपना कुछ दिए चले ।
   (कुछ लेना और देना साथ-साथ)
3. *दो बात कही, दो बात सुनी,*
   कुछ हँसे और फिर कुछ रोए ।
   (हँसना और रोना एक साथ)

इन परस्पर विरोधी बातों का कविता में समावेश इसलिए किया गया है क्योंकि कवि अपने जीवन के नियम स्वयं बनाता है और स्वयं तोड़ता है । कवि अपनी मर्जी का मालिक है । उसे अपने लक्ष्य के अलावा कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं लगता ।

भाषा की बात

संतुष्टि का भाव व्यक्त करने वाले कुछ शब्द:प्रसन्न होकर, तृप्त होकर, संतुष्ट होकर, जी भरकर, मस्त होकर, परिपूर्ण होकर आदि।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ग), **5.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. क्योंकि उनका कोई स्थायी ठिकाना नहीं होता।

7. दीवाने अपने साथ मस्ती का माहौल लेकर चलते है।

8. दीवाने उल्लास बनकर आते और आँसू बनकर चल देते हैं।

9. इस संसार को अपने जैसा न बना पाने की असफलता का भाव लेकर दीवाने लोगों से विदा लेते हैं।

10. दीवाने सुख-दु:ख का दिल से आनंद लेते हैं।

11. भिखमंगों को प्यार लुटाने का आशय है कि दीवाने भिखमंगों को दिल खोलकर प्यार की भीख देते हैं।

12. दीवाने सदा के लिए उनको प्रसन्न नहीं बना सके। इसी असफलता का बोझ हृदय पर लिए जा रहे हैं।

13. सबसे विदा लेकर चलते हुए वे शुभकामनाएँ देते हैं कि वे सदा सुखी रहें।

14. दीवाने सारे बंधनों को स्वयं तोड़कर जा रहे हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

15. कवि का कहना है कि जीवन को मस्ती के साथ जीना चाहिए। जो लोग अभावों से पीड़ित हैं, उनको जी भरकर प्यार दें। लोगों के प्रति अपने-पराए का भाव नहीं रखें।

16. कवि ने निजी स्वार्थ के लिए देश से निरंतर सुविधाएँ चाहने वाले देशवासियों को भिखमंगों की दुनिया बताया है।

17. 'हम दीवानों' से कवि का आशय केवल अपने आप से नहीं है। उसने अपने ऊपर रखकर इसका प्रयोग स्वतंत्रता के दीवानों की भावनाओं को प्रकाशित करने के लिए किया है।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

18. इस कविता से हमें दीवानों के चरित्र की अनेक विशेषताएँ ज्ञात होती हैं। दीवाने अपनी हस्ती पर गर्व नहीं करते, वे मस्त स्वभाव के होते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं अपने साथ मस्ती का माहौल लेकर जाते हैं। वे अपनी बातों से दु:खी लोगों को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। उनके दु:खों से सहानुभूति प्रकट करते हैं। वे लोगों के साथ हँसते हैं और रोते हैं। दुख-सुख को समान भाव से स्वीकार करते हैं। अभावों से पीड़ित लोगों को भी जी भरकर प्यार लुटाते हैं। उनके लिए कोई अपना या पराया नहीं होता है। दु:ख-सुख को समान भाव से स्वीकार करते हैं।

**

पाठ-4 भगवान के डाकिए

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से

1. पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए बताया गया है क्योंकि उनके साथ भगवान का भेजा हुआ संदेश होता है । इनके द्वारा लाए गए संदेशों को मनुष्य पढ़ नहीं सकता बल्कि पेड़, पौधे, पर्वत, नदियाँ, तालाब आदि पढ़ते हैं । ये सन्देश सारे संसार के लिए होते हैं।

2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को केवल प्रकृति के विभिन्न अंग, जैसे – पेड़-पौधे, पानी, पहाड़ आदि ही पढ़ पाते हैं ।

3. **(क)** पक्षी और बादल वे भगवान के डाकिए हैं, जो एक महादेश से दूसरे महादेश को जाते हैं। हम तो समझ नहीं पाते हैं मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

(ख) हम तो केवल यह आँकते हैं कि एक देश की धरती दूसरे देश को सुगन्ध भेजती है। और वह सौरभ हवा में तैरते हुए पक्षियों की पंखों पर तिरता है। और एक देश का भाप दूसरे देश में पानी बनकर गिरता है।

4. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ ईश्वर द्वारा प्रदत्त विश्वबंधुत्व और समानता के इस सन्देश को पढ़ लेते हैं कि प्रकृति में उनके आसपास जो सुगंध फैल रही है उसको और चारों ओर भाप के रूप में विद्यमान जल को दूर-दूर तक पहुँचाना है । इसे एक देश से दूसरे देश तक बिना किसी भेदभाव के पहुँचाना, है ।

5. इस पंक्ति का भाव यह है कि धरती के लिए सभी मनुष्य एक समान हैं । वे कहीं के भी रहने वाले हों, प्रकृति बिना किसी भेदभाव के उन तक सुगंध भेजती है । इस सुगंध में प्रेम, एकता, सद्भाव और समानता का संदेश छिपा रहता है ।

पाठ से आगे

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को हम प्रेम, एकता, समानता और सद्भाव के आदान-प्रदान के रूप में देखते हैं । इन चिट्ठियों में ईश्वर द्वारा भेजा गया संदेश छिपा होता है । हम उसे समझ पाने में असमर्थ होते हैं । ईश्वर का यह संदेश किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय तथा स्थान विशेष पर रहने वालों के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए होता है ।

2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों में ईश्वर द्वारा भेजा गया संदेश होता है, क्योंकि ये चिट्ठियाँ ईश्वर की होती हैं । इन्हें मनुष्य नहीं पढ़ सकता । इन्हें प्रकृति के विभिन्न अंग पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ पाते हैं । इनमें विश्व बंधुत्व, सद्भाव, प्रेम, भाईचारा तथा एकता का संदेश होता है। इसके विपरीत वर्तमान समय में प्रचलित संचार के साधनों में इंटरनेट प्रमुख है ।

इसकी मदद से संदेश भेजा तथा प्राप्त किया जा सकता है । इससे व्यक्ति अपनी जान-पहचान वालों को जब चाहे और जहाँ चाहे संदेश भेज सकता है । ये संदेश व्यक्तिगत होते हैं ।

3. डाकिए का हमारे जीवन से घनिष्ठ संबंध होता है । आज के दौर में उसका महत्व और भी बढ़ जाता है । आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और लोग रोजी-रोटी के लिए दूर के शहरों में बसने लगे हैं । वह हमारे निकट संबंधियों की खबरें लाता है । हमारी अर्थव्यवस्था में मनीआर्डर का बहुत महत्व है । दूर-दराज तथा ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को डाकिए का बेसब्री से इंतजार रहता है कि कब डाकिया आए और उनके घरों का चूल्हा जले । इसके अलावा डाकिया लोगों की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है, विशेषकर दूर-दराज और ग्रामीण क्षेत्रों में । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि डाकिए की हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है ।

अनुमान और कल्पना

डाकिया डाक विभाग द्वारा नियुक्त कर्मचारी होता है । यह परिश्रमी, ईमानदार और धैर्यवान होता है । यह मौसम की चिंता न करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करता है। इंटरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब सूचनाओं का महाजाल है जो विभिन्न विषयों की जानकारी उपलब्ध कराता है । पक्षी प्राचीनकाल में संदेशवाहक के रूप में प्रयुक्त होते रहे हैं । पुराने जमाने में मनुष्य कबूतर, तोते, हंस आदि पक्षियों के माध्यम से संदेश भेजते थे। कवियों ने बादल को भी संदेशवाहक माना है, कवि कालिदास ने अपने साहित्य में 'मेघदूत' का विशद् वर्णन करते हुए इसी नाम से एक गीतिकाव्य की रचना की है । पक्षी और बादल को भगवान का डाकिया मानकर कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी कविता लिखी है ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ग) पेड़-पौधे, पानी और पहाड़, **4.** (घ), **5.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. पक्षी और बादल एक देश से दूसरे देश में ईश्वरीय संदेश पहुँचाते हैं।

7. पेड़-पौधे, पानी और पहाड़, पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियाँ बाँचते हैं।

8. मनुष्य इतना ही समझ पाते हैं कि एक देश में उठे बादल दूसरे देश में जाकर बरस जाते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

9. डाक विभाग के डाकिए सभी देशों में अपने लिए निश्चित क्षेत्र में डाक पहुँचाते हैं। पक्षी और बादल भी चिट्ठियाँ पहुँचाते हैं, लेकिन वे मनुष्यों की नहीं प्रकृति या भगवान की चिट्ठियाँ ले जाते हैं।

10. भगवान की चिट्ठियाँ साधारण चिट्ठियों से बिलकुल भिन्न होती हैं। वे प्राकृतिक क्रिया-कलाप के रूप में होती हैं। मनुष्यों द्वारा भेजी गई चिट्ठियों को मनुष्य ही पढ़ पाते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

11. 'भगवान के डाकिए' कविता में कवि ने पक्षियों और बादलों को भगवान के डाकिए बताया है। ये चिट्ठियों के रूप में एक देश की सुगंध दूसरे देश में पहुँचाते हैं। एक देश का जल दूसरे देश में बरसाते हैं। इस प्रकार ये दो देशों के बीच सद्भावना, सहयोग और मानवीय एकता का संदेश पहुँचाते हैं। कवि पड़ोसी देशों को ईर्ष्या, द्वेष और बैर को त्यागने तथा एक-दूसरे के प्रति सम्मान और सहयोग का संदेश देना चाहता है। भारत की सिंधु, झेलम, रावी आदि नदियाँ पाकिस्तान की भूमि को भी सींचती हैं। तिब्बत से आती ब्रह्मपुत्र भारत की धरती पर सहस्त्रों वर्षों से प्रवाहित हो रही है। कवि ने संदेश देना चाहा है कि प्रकृति मनुष्यों द्वारा बनाई देश-प्रदेश की सीमाओं को नहीं मानती वह अपनी देनों को समान भाव से बाँटती आ रही है।

**

पाठ-5 क्या निराश हुआ जाए

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

आपके विचार से

1. लेखक धोखा खाने के बाद भी इसलिए निराश नहीं है क्योंकि वह जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति है। उसके साथ विश्वासघात बहुत कम हुआ है। ऐसी भी बहुत-सी घटनाएँ हुई हैं जब लोगों ने बिना कारण उसकी मदद की है ।
2. ऐसी अनेक घटनाएँ मेरे देखने और पढ़ने में आई हैं। इनमें से दो घटनाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया। एक घटना का शीर्षक था— "अभी ईमानदारी जिंदा है"। एक महिला ने रिक्शे वाले को पैसे चुकाए और चल दी। लेकिन वह अपना पर्स रिक्शे पर ही भूल गई। रिक्शे वाले ने कुछ सोचा और लौटकर उसी स्थान पर जा खड़ा हुआ जहाँ वह महिला उतरी थी। कुछ देर बाद वही महिला घबराई हुई वहाँ आ पहुँची। रिक्शे वाले ने पर्स उसे लौटा दिया। पर्स में कुछ गहने, रुपये, ए.टी. एम. आदि थे। यह घटना इस आपाधापी, भ्रष्टाचार, बेईमानी के युग में आशा की एक किरण है।

- दूसरी घटना उदयपुर की है जहाँ एक महिला अनाथ और गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दे रही है । इस महिला के जीवन का उद्देश्य अनाथ बच्चों को साक्षर बनाना है। पिछले 15 वर्षों से वह इस कार्य में लगी है । हर साल उनके स्कूल में कुछ न कुछ अनाथ और गरीब बच्चे आते हैं । इस सेवा कार्य में वह इतनी तल्लीन हैं कि उन्होंने शादी तक नहीं की।

  इस समाचार को पढ़कर उक्त शिक्षिका के त्याग एवं समर्पण के प्रति मन श्रद्धानत हो जाता है । प्राय: प्रत्येक शहर में ऐसे लोगों को अनाथ बच्चों के लिए शिक्षा यज्ञ में अपनी आहुति देनी चाहिए।

3. आजकल समाचार-पत्रों में नकारात्मक घटनाओं को प्रमुखता से तथा बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है । नि:स्वार्थ भाव से किसी की भलाई करने की खबरें नहीं के बराबर छापी जाती हैं । ऐसी ही एक घटना मेरे पड़ोस की है । चौबे जी मेरे पड़ोसी हैं। सीधे-सादे साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से हैं । उनके चार पुत्र और दो बेटियाँ हैं । चौबे जी एक निजी फर्म में काम करते हैं और किसी तरह परिवार का पालन-पोषण करते हैं । उनका बड़ा बेटा पढ़ने में बहुत होशियार था लेकिन धनाभाव के कारण चाहते हुए भी आगे पढ़ नहीं पा रहा था । इससे पूरा परिवार बहुत दु:खी था। एक दिन पड़ोस में ही रहने वाले गुप्ताजी, जो अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, चौबे जी के घर आए । बातचीत के दौरान बेटे की आगे की पढ़ाई की चर्चा हुई । पूरा वृत्तांत सुनने के बाद गुप्ता जी ने उन्हें आश्वासन दिया कि दो-चार दिन में सारी व्यवस्था हो जाएगी । दो दिन बाद ही गुप्ता जी एक फार्म लेकर पहुँचे और चौबे जी के बेटे से उसे भरने को कहा । यह फार्म कोलकाता के किसी धर्मादा ट्रस्ट का था । एक सप्ताह के अंदर ही चौबे जी के बेटे को एक लाख रुपये की छात्रवृत्ति आगे की पढ़ाई के लिए मिल गई । चौबे जी ने अपने बेटे का आई. आई. टी. में दाखिला करवा दिया। आई. आई. टी. अंतिम वर्ष की पढ़ाई पूरी भी नहीं हो पाई थी कि उनके बेटे का चयन अमेरिका की एक सॉफ्टवेयर कम्पनी के लिए अच्छे वेतन पर हो गया । चौबे जी का बेटा आज अमेरिका में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है । आज चौबे जी का पूरा परिवार गुप्ता जी का एहसानमंद है ।

पर्दाफाश

1. दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब उसका उद्देश्य केवल आलोचना करते हुए मजाक उड़ाना ही रह गया हो । इस पर्दाफाश के पीछे किसी के दोष को सुधारने का उद्देश्य न होकर उसकी बदनामी कराना हो । सत्यता को जाने बिना लोगों के सामने लाना तथा बदला लेने की भावना हो ।

2. आजकल बहुत से समाचार पत्र या चैनल 'दोषों का पर्दाफाश' कर रहे हैं । इस तरह के समाचारों या कार्यक्रमों की सार्थकता है। इनका उद्देश्य होता है लोगों को जागरूक करना । इनकी सार्थकता तभी है जब इस तरह के कार्यक्रमों के पीछे सच्चाई, ईमानदारी तथा जनकल्याण की भावना हो। यदि इनके पीछे स्वार्थ, धनोपार्जन या प्रसिद्धि पाने की लालसा हो तो ऐसे कार्यक्रमों की कोई सार्थकता नहीं है ।

कारण बताइए

निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे – ''ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है ।'' **परिणाम – भ्रष्टाचार बढ़ेगा ।**

1. ''सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है ।''
   परिणाम : लोगों की सच्चाई में आस्था नहीं रह जाएगी । सभी ओर झूठ का बोलबाला होगा ।
2. ''झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं ।''
   परिणाम : ईमानदारी समाप्त होती जाएगी और भ्रष्टाचार बढ़ेगा ।
3. ''हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम ।''
   परिणाम : लोग एक दूसरे पर विश्वास नहीं करेंगे । सच्चे व्यक्ति पर भी विश्वास करना कठिन हो जाएगा ।

दो लेखक और बस यात्रा

1. पाठ्य-पुस्तक में संकलित प्रथम बस यात्रा के लेखक हैं हरिशंकर परसाई और दूसरी बस यात्रा के लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। परसाई जी हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्य और हास्य रचनाकार हैं तथा द्विवेदी जी निबंधकार और गंभीर विषयों के लेखक हैं। यदि दोनों लेखकों का आपस में मिलना होता तो वे निश्चय ही अपनी-अपनी बस यात्राओं के अनुभवों को सुनाते।

परसाई जी – 'द्विवेदी जी नमस्कार कहिए क्या हाल- चाल हैं?

द्विवेदी जी – नमस्कार परसाई जी! कहाँ से चले आ रहे हैं?

परसाई जी – अरे मान्यवर! अबकी तो बड़ी बुरी बीती।

द्विवेदी जी – ऐसा क्या हुआ?

परसाई जी – जबलपुर लौट रहा था, एक बस से। बस क्या थी बस एक जर्जर शरीर वाली बुढ़िया थी। मेरा मन तो नहीं था पर मेरे डाक्टर मित्र के कहने पर बैठ गया। बस के चलते ही उसका अंग-अंग काँपने लगा। रास्ते में बस कई बार रुकी। मुझे तो हर पल दुर्घटना होने का भय सता रहा था। एक पुलिया पर आकर तो उसने बिल्कुल दम छोड़ दिया। राम-राम करके जबलपुर पहुँचा।

द्विवेदी जी – 'अरे भाई! परसाई जी मैं भी ऐसे ही संकट में फँस गया। बस रात में एक बियावान जंगल में पहुँचकर ठप हो गई। सारे यात्री घबरा उठे। कुछ कहते कि यहीं पर एक बस डकैतों ने लूटी थी। कुछ ड्राइवर और कंडक्टर को डकैतों का मुखबिर बताने लगे। बस के रुकते ही बस का कंडक्टर साइकिल पर कहीं रवाना हो गया। लोग कहने लगे कि वह डाकुओं को खबर करने गया है। वे ड्राइवर को पीटने पर आमादा हो गए। एक घण्टे तक सभी लोग बड़े व्याकुल रहे। तभी देखा कि एक बस चली आ रही थी। हमारा कंडक्टर भी उसमें बैठा था। उसने आते ही कहा कि वह बस स्टैण्ड से नई बस लेकर आया है। उसने मुझे पानी और बच्चों के लिए दूध भी दिया। नई बस से हम समय से पहले ही पहुँच गए।

परसाई जी – आप फिर भी भाग्यशाली रहे। हमारी तो सारी योजना ही गड़बड़ हो गई।

सार्थक शीर्षक

1. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' इसलिए रखा होगा क्योंकि वर्तमान समय में हिंसा और भ्रष्टाचार, तस्करी, विविध अपराधों के चलते घटते मानवीय मूल्यों से जो माहौल बन गया है उसमें मनुष्य का निराश होना स्वाभाविक है । ऐसे माहौल में भी लेखक निराश नहीं है और वह चाहता है कि दूसरे भी निराश न हों ।

इसलिए उनसे ही पूछना चाहता है कि क्या निराश हुआ जाए ? इसका अन्य शीर्षक हो सकता है – ''आशवादी बनो ।''

2. 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद मैं प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगाऊँगा, क्योंकि लेखक समाज से पूछना चाहता है कि क्या निराशा का वातावरण पूरी तरह बन गया है ?

3. आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है । मैं इस बात से सहमत हूँ । कहते सब हैं कि ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है, पर कितने लोग इसका पालन करते हैं । वास्तव में ईमानदारी का पालन करते समय मनुष्य की स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति आड़े आ जाती है ।

सपनों का भारत

1. मेरे विचार से हमारे महान विद्वानों ने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें साम्प्रदायिक सद्भाव हो, देश में कोई गरीब, दु:खी और निरक्षर न हो तथा सभी स्वस्थ हों । इसके अलावा देश में भ्रष्टाचार, हिंसा, अपराध तथा आतंकवाद न हो ।

2. मेरे सपनों का भारत ऐसा होना चाहिए जिसमें सभी लोग स्वस्थ, शिक्षित, सम्पन्न एवं ईमानदार हों । सभी जाति, संप्रदाय, धर्म, प्रदेश आदि की भावना से ऊपर उठकर एक-दूसरे के साथ प्रेम तथा सद्भाव से रहें। देश में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी और अशिक्षा न हो तथा साम्प्रदायिकता और आतंकवाद का नामोनिशान न हो । देश आत्मनिर्भर तथा समृद्ध हो । लोगों में आपस में भाईचारा हो ।

भाषा की बात

1. 1. आरोप-प्रत्यारोप, 2. कायदे-कानून, 3. काम-क्रोध, 4. दया-माया, 5. लोभ-मोह, 6. सुख-सुविधा, 7. झूठ-फरेब, 8. मारने-पीटने, 9. गुण-दोष, 10. लेन-देन, 11. भोजन-पानी, 12. सच्चाई-ईमानदारी ।

2. (1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण :**
गाँधी, तिलक, भारतवर्ष, मदन मोहन मालवीय।

(2) **जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण :**
नौजवान, डाकुओं, महिला, रेलवे स्टेशन, हिन्दू, द्रविड़, मुसलमान, समाचार-पत्र, मनीषी, श्रमजीवी, समाज, टिकट बाबू, बच्चे, यात्री, ड्राइवर, कंडक्टर, बस अड्डा, पंडितजी, टिकट।

(3) **भाववाचक संज्ञा के उदाहरण :**
चिंता, ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी, मूर्खता, ईमानदारी, काम, आस्था, लोभ, क्रोध, मोह, बुराई, संतोष, वंचना, मनुष्यता, दया, माया, धोखा, खराबी, सच्चाई ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (घ), **3.** (ग), **4.** (ग), **5.** (ग), **6.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

7. लेखक देखता है कि समाचार-पत्रों में तस्करी, लूट, हत्या, चोरी, ठगी और भ्रष्टाचार की खबरें भरी पड़ी हैं। लोगों के गुणों को उजागर करने की कोई खबर नहीं होती । समाज में निराशा का वातावरण है । यह सब देखकर लेखक का मन बैठ जाता है ।

8. लेखक के अनुसार आज जो असहाय, सीधे-सच्चे और परिश्रमी लोग हैं, वे घोर कष्ट पा रहे हैं। इसके विपरीत जो छल और धोखे से आजीविका चला रहे हैं वे सुखी व सम्पन्न हो रहे हैं।

9. निर्धन लोग इसलिए कष्ट भोग रहे हैं कि भ्रष्ट कर्मचारी उनके हित भुलाकर अपना घर भरने में लगे हैं।

10. भारतीय अब भी धर्म को कानून से बड़ी चीज मानते हैं।

11. समाचार-पत्रों में जनता के आक्रोश का प्रकट होना यह सिद्ध करता है कि समाज भ्रष्टाचार को बुराई मानता है।

12. लेखक बुराई में रस लेने से भी बुरी बात मानता है किसी की अच्छाइयों को प्रकाशित करने में उतना ही रस न लेना।

13. लेखक के नब्बे रुपए वापिस करने वाले टिकट बाबू को हम ईमानदार व सच्चा व्यक्ति मानते हैं।

14. यात्रियों को लगा कि वह डकैतों से मिला हुआ है। उसने कंडक्टर को डकैतों को लाने भेजा है।

15. कंडक्टर को नई बस लाते देखकर यात्रियों में फिर से जान आ गई।

16. इसका कारण वे घटनाएँ हैं जो लेखक के जीवन में घटी हैं। टिकट बाबू उसे नब्बे रुपए लौटाने आया, बस के ड्राइवर और कंडक्टर ने अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। ये ही कारण हैं जिनकी वजह से लेखक मानता है कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है।

17. रवीन्द्रनाथ ने प्रार्थना की कि चाहे उन्हें बार-बार नुकसान हो और धोखा खाना पड़े फिर भी उन्हें ईश्वर के न्याय पर विश्वास बना रहे। ईश्वर पर कोई संदेह मन में नहीं आए।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

18. एक बहुत बड़े आदमी ने हजारी प्रसाद द्विवेदी से कहा था कि इस समय वही मनुष्य सुखी है जो किसी सार्वजनिक कार्य में भाग नहीं लेता। जब भी कोई किसी काम को हाथ में लेता है तभी लोग उसकी कमियाँ खोजना आरंभ कर देते हैं।

19. लेखक के अनुसार आज जो असहाय, सीधे-सच्चे और परिश्रमी लोग हैं, वे घोर कष्ट पा रहे हैं। इसके विपरीत जो छल और धोखे से आजीविका चला रहे हैं वे सुखी व सम्पन्न हो रहे हैं।

20. भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं में संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं। हमें संयम में रहकर इन्हें ज्यादा महत्व नहीं देना चाहिये।

21. भारत के लोग आज भी भीतर से यही मानते हैं कि धर्म, कानून से बड़ी चीज है। कानून जो नहीं कर पाता वह धर्म द्वारा ही सम्भव होता है।

22. इसका कारण वे घटनाएँ हैं जो लेखक के जीवन में घटी हैं। टिकिट बाबू उसे नब्बे रुपए लौटाने आया, बस के ड्राइवर और कंडक्टर ने अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। ये ही कारण हैं जिनकी वजह से लेखक मानता है कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

23. लेखक के इस कथन से मैं काफी हद तक सहमत हूँ। लेखक ने आजकल समाचार-पत्रों में जैसी खबरों की भरमार की बात कही है वह बिलकुल सच है। नित नए भ्रष्टाचार और घपले उजागर हो रहे हैं। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। लगता है पूरा समाज ही बेईमान और अपराधी हो गया है।

यह भी सच है कि आज समाज में कानून को धर्म से बड़ा दर्जा दे दिया गया है। इससे कानून बनाने वाले और कानून के रखवाले निरंकुश हो गए हैं।

यह सारा परिदृश्य ऐसा भयावह है कि इसे देखकर सीधे-सच्चे, ईमानदार लोगों का हताशा से भर जाना स्वाभाविक है। लेकिन लेखक ने अपने साथ घटित होने वाली अनेक घटनाओं को आशा की किरण माना है। उसे विश्वास है अभी मनुष्यता मरी नहीं है।

**

पाठ-6 यह सबसे कठिन समय नहीं

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ से

1. यह सबसे कठिन समय नहीं, यह बताने के लिए कवयित्री ने निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए हैं :

(क) चिड़िया तिनका लेकर उड़ने की तैयारी में है। (ख) पेड़ से गिरने वाली पत्ती को थामने के लिए एक हाथ तैयार है । (ग) स्टेशन पर भीड़ है । रेलगाड़ी अपने गंतव्य पर जाती है । (घ) कोई किसी की प्रतीक्षा करते हुए चिंतित हो रहा है । (ङ) दादी-नानी अन्तरिक्ष से आने वाली बसों की कहानी सुनाती हैं ।

2. चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि वह तिनकों

से अपना घोंसला बनाना चाहती है ताकि वह और उसके बच्चे चैन से रह सकें ।

3. 'अभी भी' के प्रयोग से बनाए गए तीन वाक्य - (1) पिछले सप्ताह से वर्षा शुरू हुई और **अभी भी** जारी है । (2) लगता है ट्रेन के आने में **अभी भी** समय लगेगा । (3) यहाँ विद्यालय न होने से लड़कियाँ **अभी भी** पढ़ने शहर जाती हैं ।

4. 'नहीं' और 'अभी भी' के प्रयोग से बने **वाक्य :**

(1) मौसम भर वर्षा **नहीं** हुई और सरकारी सहायता **अभी भी** नहीं मिली ।
(निराशा का भाव)

(2) बच्चे **अभी** तक **नहीं** आए, लगता है उन्हें **अभी भी** समय लगेगा। (प्रतीक्षा का भाव)

(3) यहाँ कोई सिनेमाघर **नहीं** है, इसलिए फिल्म देखने **अभी भी** शहर जाना पड़ता है ।
(निरंतरता का भाव)

कविता से आगे

1. महाकवि कालिदास की कहानी तो सबने सुनी होगी । ऐसा कहा जाता है कि कालिदास बहुत मूर्ख थे । एक बार वह पेड़ की जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे । उसी समय उधर से कुछ पण्डित गुजर रहे थे । उन्हें एक मूर्ख की तलाश थी, क्योंकि उस जमाने की एक विदुषी विद्योत्तमा से ये पण्डित शास्त्रार्थ में हार गए थे। विद्योत्तमा ने शर्त रखी थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा वह उसी से विवाह करेगी। विद्योत्तमा से हारने के बाद चिढ़े हुए इन पण्डितों ने निश्चय किया कि यह व्यक्ति, जो उसी डाल को काट रहा है जिस पर खुद बैठा हुआ है, निश्चय ही बज्र मूर्ख है अत: इसकी शादी विद्योत्तमा से करा दी जाए। इतना निश्चय कर उन पण्डितों ने उस व्यक्ति को बुलाया और उसे समझा-बुझाकर पण्डितों की वेशभूषा में विद्योत्तमा के पास ले गए और उसे महान पंडित तथा अपना गुरु बताते हुए कहा कि इन्होंने मौन व्रत रखा है इसलिए ये केवल इशारे से ही बात करेंगे। विद्योत्तमा शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गई । उसने एक अंगुली दिखाई, जवाब में उस व्यक्ति ने दो अंगुलियाँ दिखा दीं। पाँच अंगुलियों का जवाब उसने मुक्का दिखाकर दिया। अंत में विद्योत्तमा हार गई और उस व्यक्ति से उसका विवाह हो गया। कुछ समय बाद उसे ज्ञात हुआ कि उसका पति तो मूर्ख है। अत: उसने उसे घर से निकाल दिया। अपमानित होकर वह युवक काली के मंदिर में चला गया और तपस्या करने लगा। इसी से उसका नाम कालिदास हो गया। आगे चलकर उसने अध्ययन किया और विद्वान बनकर पत्नी के पास लौटा। कालिदास ने संस्कृत में अनेक काव्य एवं नाट्य ग्रन्थों की रचना की जो आज भी पढ़े जाते हैं। संस्कृत साहित्य में कालिदास की बराबरी का कोई और कवि नहीं हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास ने कठिन परिस्थितियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त की।

2. घर से स्कूल जाने पर घर के सदस्य लौटने की प्रतीक्षा करते हैं । इनके बारे में मैं सोचता हूँ : (अ) वे लोग मुझे बहुत प्यार करते हैं तथा विशेष अपनत्व का भाव रखते हैं । (ब) वे चाहते हैं कि मैं समय से पहले ही उनकी आँखों के सामने रहूँ । (स) मेरे देरी से लौटने पर वे चिंतित हो जाते हैं ।

अनुमान और कल्पना

[**नोट**—छात्र अपने शिक्षक महोदय की सहायता से स्वयं करें।]

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

4. चिड़िया चोंच में तिनका दबाए सुरक्षित स्थान की तलाश में उड़ने को तैयार है जिससे वह वहाँ अपने बच्चों तथा परिवार के लिए घोंसला बना सके ।

5. अब भी आने-जाने वाले यात्रियों की भीड़ दिखाई देती है। गाड़ियाँ निरन्तर अपने स्थानों को जा रही हैं।

6. परिवार के लोग बाहर गये हुए प्रियजनों के शीघ्र लौटने की चिंता करते हैं।

7. इन कहानियों के आखिरी हिस्से में कठिनाइयों पर विजय होने की तथा सुख-शान्ति और आशा भरी बातें होती हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

8. चोंच में तिनका दबाए उड़ने को तैयार चिड़िया, झरती हुई पत्ती को थामने के लिए हाथ, यात्रियों की स्टेशन पर भीड़, चलती रेलगाड़ी, नानी की अन्तरिक्ष से यात्रियों को लाने वाली बस की कहानी आदि घटनाओं का उल्लेख कवयित्री ने किया है। इन घटनाओं से वह संकेत करती हैं कि हमें आशावादी रहना चाहिए, यह सबसे कठिन समय नहीं है।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

9. मैं कवयित्री के इस कथन से सहमत हूँ कि वर्तमान समय सबसे कठिन समय नहीं है। जीवन में सुख-दु:ख, कठिनाइयाँ सदा आती रही हैं, इनके बीच से मनुष्य अपना रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ता रहता है। कवयित्री ने कविता में दिखाया है कि हमारे चारों ओर जीवन की गतिविधियाँ निरन्तर चालू हैं। चिड़ियाँ घोंसले बना रही हैं, लोग यात्राएँ कर रहे हैं, लौटने वालों की प्रतीक्षा हो रही है, घरों में नानी और दादी बच्चों को सुखांत कहानियाँ सुना रही हैं। यहाँ तक कि खतरों से भरी अन्तरिक्ष यात्राओं से भी लोग सकुशल लौट कर आ रहे हैं। अगर यह सबसे कठिन समय होता तो मनुष्य, पशु, पक्षी डरे हुए, निराश और निष्क्रिय बैठे दिखाई देते। अत: कवयित्री का कथन मुझे सही प्रतीत होता है।

**

पाठ-7 कबीर की साखियाँ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ से

1. तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं - इस उदाहरण द्वारा कबीर यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य को उसी वस्तु की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जो काम की हो । निरर्थक वस्तु के बारे में जानकारी क्यों ।
2. इस साखी में कबीरदास ने केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताया है । उनका मानना है कि ईश्वर की उपासना के लिए मन का एकाग्र होना आवश्यक है । इसके बिना ईश्वर स्मरण नहीं हो सकता । माला फेरने और मुँह से ईश्वर का नाम लेने मात्र से कुछ फायदा नहीं होता ।
3. इस दोहे में कबीरदास उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो मनुष्य के पैरों के नीचे होती है । इस दोहे में 'घास' का विशेष अर्थ है। यहाँ 'घास' का तात्पर्य दबे-कुचले और कमजोर व्यक्तियों से है। ऐसे लोगों को तुच्छ मानकर उनकी निंदा की जाती है । कबीर के दोहे का संदेश है कि कभी किसी की निंदा मत करो विशेषकर छोटे लोगों की ।
4. कबीर के अग्रलिखित दोहे से यह भाव व्यक्त होता है :

''जग में बैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय ।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय ।।"

पाठ से आगे

1. पहली पंक्ति में 'आपा' अहंकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है जबकि दूसरी पंक्ति में 'आपा' का मतलब घमण्ड से है।
2. आपा में अतिविश्वास होता है जो अहंकार का रूप ले लेता है। आत्मविश्वास एक गुण है इसमें व्यक्ति का अपने पर भरोसा होता है ।

   जहाँ तक 'आपा' और 'उत्साह' में अन्तर की बात है– 'आपा' में अहं का भाव है जबकि 'उत्साह' में किसी काम को करने का जोश होता है ।
3. एक समान होने के लिए दोहों में भाव और गुण की समानता होनी चाहिए । कबीर की निम्नलिखित साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं –

''माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि।
मनुबाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।''

4. कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि साखी शब्द साक्षी का

तद्भव रूप है जिसका अर्थ है – प्रमाण या आँखों देखा । कबीर ने इस दुनिया में सब सुना, देखा और सहा और अपने अनुभव को दोहों के रूप में व्यक्त किया । कबीर का हर दोहा अपने आप में ज्ञान का कोश है जो मनुष्य को कुछ-न-कुछ शिक्षा देता है ।

भाषा की बात

ग्यान	– ज्ञान	जीभि	– जीभ
पाऊँ	– पाँव	तलि	– तले
आंखि	– आँख	बरी	– बड़ी

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (घ), **4.** (घ) **5.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. साधु की परख उसके ज्ञान से होती है उसकी जाति से नहीं।

7. गाली देने वाले को पलटकर गाली नहीं देनी चाहिए। बदले में गाली देने से गालियाँ बढ़ती चली जाएँगी।

8. कबीर के अनुसार मन को ईश्वर में लगाना ही सच्चा स्मरण है।

9. जिस व्यक्ति का मन शीतल हो जाता है, इस संसार में उसका कोई भी शत्रु नहीं होता है। सभी उस पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

10. इस दोहे में कबीर ने यह संदेश दिया है कि बुद्धिमान लोग साधु की जाति पर ध्यान न देकर उसके ज्ञान का लाभ उठाते हैं।

11. कबीर ने मन को वश में करके उसे ईश्वर के ध्यान में लगाना स्मरण के लिए अनिवार्य माना है। केवल माला को घुमाने से ईश्वर का स्मरण नहीं हो सकता।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

12. कबीरदास की साखियों से हमें अनेक लाभदायक शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। कबीर एक साखी में कहते हैं कि साधु से उसकी जाति मत पूछो, पूछना है तो उससे ज्ञान की बातें पूछो। इससे यह सीख मिलती है कि जो बात हमारे लिए उपयोगी है उसी पर ध्यान देना चाहिए।

कबीर कहते हैं कि गाली देने वाले को पलटकर गाली देना सज्जन को शोभा नहीं देता। उसे शान्त रहना चाहिए। गाली के बदले गाली देने से दुष्ट व्यक्ति और गालियाँ देगा। एक साखी में कबीर कहते हैं कि जो व्यक्ति मन को वश में रखता है उसका कोई बैरी नहीं होता। अगर मन अहंकार से रहित और शांत है तो सभी उसकी सहायता के लिए तैयार रहते हैं।

**

पाठ-8 सुदामा चरित

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण का मन करुणा से भर गया । उनकी फटी एड़ियों और पाँव में जगह-जगह चुभे काँटे देखकर श्रीकृष्ण रो पड़े । उन्होंने सुदामा से पूछा कि तुम अब तक इधर क्यों नहीं आए। कितने दिनों तक तुम इस गरीबी की हालत में रहे ।

2. इस पंक्ति का भाव यह है कि कृष्ण अपने मित्र की ऐसी दीन दशा देखकर बहुत दुखी होते हैं । वे स्वयं राजा थे और उनका मित्र घोर गरीबी में जी रहा था। कृष्ण उनकी ऐसी दशा को देखकर रो पड़े और सुदामा के पैर धोने के लिए जो पानी रखा था, उसे उन्होंने छुआ तक नहीं और आँसुओं से ही पैर धो दिए ।

3. **(क)** यह बात श्रीकृष्ण अपने मित्र सुदामा से कह रहे हैं ।

(ख) गरीब सुदामा श्रीकृष्ण के पास कुछ आर्थिक सहायता पाने के उद्देश्य से गए थे। जाते समय उनकी पत्नी ने कृष्ण को उपहारस्वरूप देने के लिए कुछ चावल दिए थे । सुदामा सोच रहे थे कि चावल कैसे दूँ। इसीलिए वह चावल की पोटली को बगल में दबाकर छिपाने का प्रयास कर रहे थे । यह देखकर श्रीकृष्ण ने ऐसा कहा था।

(ग) बचपन में कृष्ण और सुदामा गुरु ऋषि संदीपन के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे । एक दिन भोजन बनाने के लिए लकड़ियाँ खत्म हो गईं । ऋषि की पत्नी ने कृष्ण और सुदामा को लकड़ियाँ लाने के लिए जंगल भेज दिया । भूख लगने पर खाने के लिए एक पोटली में चने दे दिए, जिसे सुदामा ने अपने पास रख लिया । कृष्ण पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ काट रहे थे और नीचे सुदामा उन्हें एकत्र कर रहे थे। अचानक मौसम बिगड़ा और वर्षा होने लगी। कृष्ण पेड़ पर ही थे । नीचे सुदामा गुरुमाता के दिए चने चबाने लगे । खाने की आवाज सुनकर कृष्ण ने पूछा–मित्र ! क्या खा रहे हो? इस पर सुदामा ने कहा–मित्र ! कुछ भी नहीं। सर्दी के कारण दाँत किटाकिटा रहे हैं। इस प्रकार सुदामा, श्रीकृष्ण से छिपाकर चोरी-चोरी चने खा गए ।

4. लौटते समय श्रीकृष्ण ने सुदामा को कुछ भी नहीं दिया । सुदामा रास्ते भर सोचते रहे कि कृष्ण ने उनका खूब आदर-सत्कार किया लेकिन लौटते समय उनकी दशा का कोई ख्याल नहीं रखा। वह सोच रहे थे कि यह वही कृष्ण है जो घर-घर दही की चोरी किया करता था । यह किसी को क्या देगा? सुदामा कृष्ण के व्यवहार से इसलिए खीझ रहे थे कि विदा करते समय कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया । उनके मन में दुविधा यह भी कि पत्नी की जिद मानकर व्यर्थ ही द्वारिका आए । श्रीकृष्ण ने कुछ दिया तो नहीं उल्टे उनके चावल खा गए । द्वारिका आकर ये चावल भी गँवा दिए ।

5. गाँव लौटने पर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में विचार आया कि कहीं वे रास्ता भूलकर वापस द्वारिका तो नहीं लौट आए ।

6. श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा की निर्धनता इस तरह सम्पन्नता में बदल गई कि स्वयं सुदामा भी चकित रह गए । जिस जगह पर उनकी झोंपड़ी थी वहाँ तथा आस-पास महल नजर आने लगे । जिस सुदामा के पैर में कभी जूते नहीं हुआ करते थे आज उसके आने-जाने के लिए महावत हाथी लिए खड़ा रहता है । कठोर जमीन पर सोने वाले सुदामा को अब कोमल बिस्तर पर भी नींद नहीं आ रही है । जिसे मोटा अनाज तक सुलभ नहीं था उसी सुदामा को आज स्वादिष्ट व्यंजन भी अच्छे नहीं लगते । अब उनकी जिंदगी पूरी तरह बदल चुकी है ।

कविता से आगे

1. द्रुपद और द्रोण घनिष्ठ मित्र और सहपाठी थे । द्रुपद द्रोण से कहते थे कि जब मैं राजा हो जाऊँगा तब तुम्हें अपना आधा राज्य दे दूँगा और हम दोनों सुखी रहेंगे । समय बीतने के साथ ही द्रुपद राजा बने और द्रोण बहुत गरीब हो गए । कुछ सहायता पाने के उद्देश्य से वह द्रुपद के पास गए पर द्रुपद ने उन्हें अपमानित कर भगा दिया । द्रोण ने कौरवों और पाण्डवों को धनुर्विद्या सिखानी शुरू की । उन्होंनें गुरुदक्षिणा में द्रुपद को बंदी बनाकर लाने को कहा । अर्जुन ने ऐसा ही किया । द्रोण ने द्रुपद द्वारा किए गए अपमान की याद दिलाकर उन्हें मुक्त कर दिया पर द्रुपद, द्रोण की जान के प्यासे हो गए । उन्होंने तपस्या करके एक वीर पुत्र और पुत्री की कामना की । द्रुपद की इसी पुत्री द्रोपदी का विवाह अर्जुन के साथ हुआ । अर्जुन के समक्ष महाभारत के युद्ध में द्रोण का वध हो गया ।

सुदामा के कथानक से तुलना : सुदामा और कृष्ण की मित्रता आदर्श थी जबकि द्रोण और द्रुपद की मित्रता इसके विपरीत थी । कृष्ण ने सुदामा की परोक्ष रूप से मदद कर उन्हें भी अपने जैसा बना दिया जबकि द्रुपद और द्रोण ने अपनी मित्रता को कलंकित किया ।

2. समाज में लोगों की मानसिकता में बहुत परिवर्तन आ गया है । आजकल उच्च पद पर पहुँचकर या समृद्ध होकर व्यक्ति अपने निर्धन माता-पिता और भाई-बन्धुओं से नजर फेर लेता है । ऐसे लोगों के लिए 'सुदामा चरित' बहुत बड़ी चुनौती खड़ी करता है । किसी व्यक्ति को धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा के मद में अपने माता-पिता या भाई-बन्धुओं को नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि माता-पिता हमें जन्म देकर उच्च पद पर

पहुँचने के योग्य बनाते हैं और भाई-बन्धु समय-समय पर हमें अच्छी राय देकर तरह-तरह की मदद करते हैं । अत: उच्च पद पर पहुँचकर या समृद्ध होकर हम यदि उन्हें भूल जाते हैं तो यह कृतघ्नता से अधिक और कुछ नहीं है । हमें उनकी मदद वैसे ही करनी चाहिए जैसे कृष्ण ने सुदामा की की थी ।

अनुमान और कल्पना

1. यदि हमारा कोई अभिन्न मित्र वर्षों बाद हमसे मिलने आए तो हम उसके साथ आत्मीयता के साथ मिलेंगे । वह जब तक हमारे पास रहेगा हम उसका बहुत आदर-सत्कार करेंगे ।

2. इस दोहे में रहीम कवि कहते हैं कि जब तक किसी भी व्यक्ति के पास सम्पत्ति होती है बहुत से लोग कई प्रकार से उसके अपने बन जाते हैं । ऐसे लोग सच्चे मित्र नहीं होते । सच्चा मित्र तो वह होता है जो विपत्ति के समय हमारा साथ देता है । इस दोहे की समानता 'सुदामा चरित' से की जाए तो दोनों में काफी समानता मिलती है। 'सुदामा चरित' में विपत्ति के समय मित्र की सहायता करने का संदेश दिया गया है।

भाषा की बात

1. कविता से अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण-

''कै वह टूटी सी छानि हती,
कहँ कंचन के अब धाम सुहावत ।''

कुछ करने को

छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (घ), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. फटी हुई धोती और नंगे पैर फटेहाल स्थिति में सुदामा श्रीकृष्ण के यहाँ पहुँचे थे।

7. सुदामा के घायल पैर और उनकी दीन-दशा देखकर श्रीकृष्ण रोए थे।

8. श्रीकृष्ण ने हँसते हुए कहा कि क्या उनकी छिपाकर चोरी से खा लेने की पिछली आदत अभी नहीं गई?

9. सुदामा को द्वारिका पत्नी ने ही हठपूर्वक भेज दिया, इसी कारण उनको झुँझलाहट आई।

10. सुदामा अपनी टूटी झोंपड़ी के स्थान पर द्वारिका जैसा ही वैभव पाकर भ्रम में पड़ गये।

11. श्रीकृष्ण की कृपा होने पर सुदामा कंगाल से राजा बन गये। उनके श्रीकृष्ण जैसे ही राजसी ठाट-बाट हो गये।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

12. द्वारपाल ने श्रीकृष्ण को सूचित किया कि हे प्रभु! द्वार पर एक दुर्बल और वृद्ध ब्राह्मण खड़ा है जिसके सिर पर पगड़ी और शरीर पर वस्त्र नहीं हैं। उसकी धोती फटी-सी और गले में बहुत पुराना दुपट्टा है। उसके पैरों में जूते तक नहीं हैं। वह चकित होकर द्वारका को देख रहा है। वह आपके भवन का पता पूछ रहा है और अपना नाम सुदामा बता रहा है।

13. सुदामा की दयनीय दशा देखकर श्रीकृष्ण का हृदय अत्यन्त विचलित हो गया। और श्रीकृष्ण की आँखों से आँसुओं की धार बह चली।

14. आज के समय में कृष्ण और सुदामा जैसी मित्रता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसका सबसे बड़ा कारण है– समाज में धन को सबसे अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

15. सुदामा को खाली हाथ विदा करने के पीछे श्रीकृष्ण के कई कारण हो सकते हैं। प्रथम कि सुदामा बड़े स्वाभिमानी और संकोची स्वभाव के थे। श्रीकृष्ण ने सोचा होगा उनके माँगे बिना ही वह उन्हें विदा करते समय धन-धान्य देते तो उन्हें बड़ा संकोच होता। दूसरा कारण धन-सम्पत्ति के साथ सकुशल गाँव पहुँचना उन दिनों में बड़ा कठिन रहा होगा। तीसरा कारण श्रीकृष्ण अपनी भेंट का प्रचार नहीं करना चाहते होंगे और चौथा कारण वह सुदामा को अचानक प्रसन्नता देकर चकित करना चाहते होंगे।

16. संकलित काव्यांश में श्रीकृष्ण के चरित्र की अनेक विशेषताओं का परिचय प्राप्त होता है। वह सच्चे, निस्वार्थ और उदार स्वभाव वाले

मित्र हैं। वह अपनी और सुदामा की सामाजिक स्थिति का तनिक भी विचार नहीं करते। दीन-हीन, फटे-हाल सुदामा को बिना हिचक गले लगाते हैं। उनकी अतुलनीय सहायता करते हैं। वह 'विपति कसौटी' पर खरे उतरने वाले मित्र हैं। वह बड़े भावुक और कोमल हृदय हैं। सुदामा की दशा से द्रवित होकर रोने लगते हैं। सुदामा को अपने जैसा वैभव प्रदान करते हैं। चुप-चाप सुदामा को राजसी वैभव देकर उन्हें चकित कर देते हैं।

**

पाठ-9 जहाँ पहिया है

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

जंजीरें

1. लेखक जंजीरों के माध्यम से पुडुकोट्टई जिले की महिलाओं की विभिन्न समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है । यहाँ की महिलाएँ रूढ़िवादिता की शिकार थीं । ये न तो स्वतंत्र निर्णय ले पाती थीं और न व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अनुभव ही कर पाती थीं । इन्हीं को लेखक ने जंजीरें माना है ।
2. हाँ, लेखक की इस बात से हम पूरी तरह सहमत हैं । पुडुकोट्टई जिले की अत्यंत पिछड़ी पृष्ठभूमि में रहने वाली महिलाओं को पुरुषों द्वारा थोपी गई जिंदगी बितानी पड़ रही थी जिससे बाहर निकलने का उन्होंने प्रयास किया । उन्होंने साइकिल चलाना सीखकर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत की ।

पहिया

1. साइकिल आन्दोलन के परिणामस्वरूप वहाँ की महिलाओं की खुशहाली और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि हुई । उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ । श्रम तथा समय की बचत हुई।
2. शुरुआत में पुरुषों ने इस आन्दोलन का विरोध किया परन्तु आर. साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन इसलिए किया क्योंकि उस पिछड़े जिले में वही एकमात्र डीलर थे, इस आन्दोलन से उनकी बिक्री बढ़ गई थी ।
3. प्रारंभ में लोग महिलाओं पर तरह-तरह की फब्तियाँ कसते थे । इन महिलाओं को लोगों की भद्दी टिप्पणियों को झेलना पड़ा ।

शीर्षक की बात

1. इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' इसलिए रखा होगा क्योंकि पहिया गतिशीलता का प्रतीक है । पहिया वह साधन है जिसने तमिलनाडु के पुडुकोट्टई जिले की महिलाओं की स्थिति ही बदल दी । उनकी रूढ़िवादी जिंदगी बदल गई और वे आत्मनिर्भर हो गईं।
2. इस पाठ का दूसरा शीर्षक हो सकता है - 'पहिया जिसने जिंदगी बदल दी ।' इसके पीछे तर्क यह है कि साइकिल अन्य साधनों की अपेक्षा बहुत सस्ती है और इसकी मरम्मत भी कम खर्चीली है । इसके अलावा इससे समय तथा श्रम दोनों की बचत होती है ।

समझने की बात

1. ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें घर की चारदीवारी के अंदर रहकर ही घर-गृहस्थी का कार्य करती थीं। पुरुष प्रधान देश में महिलाओं को किसी प्रकार का निर्णय लेने की आजादी नहीं थी। ऐसी स्थिति में यदि महिलाओं को साइकिल चलाने की आजादी मिल जाती है तो वे घर से निकलकर अपने कार्यों को सही तरीके से करेंगी, बाहर लोगों से बातचीत करके अपना व्यक्तित्व विकास भी कर सकेंगी। वे समाज की रीति-नीति, आत्मनिर्भरता तथा नवीनता को भी सीखेंगी।
2. साइकिल को विनम्र सवारी इसलिए कहा गया है क्योंकि इसे चलाना आसान है । इस पर खर्च कम आता है । इससे प्रदूषण नहीं फैलता। यह हर आयु-वर्ग के स्त्री-पुरुष के लिए आसान है।

साइकिल

साइकिल चलाने से पुडुकोट्टई की महिलाओं को आजादी का अनुभव इसलिए होता होगा क्योंकि साइकिल पर वे घर की चारदीवारी से बाहर निकलती हैं और खुद को रूढ़िवादी बंधनों से आजाद महसूस करती हैं । उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है ।

कल्पना से

1. पुडुकोट्टई में कोई महिला यदि चुनाव लड़ती तो वह अपना पार्टी-चिह्न साइकिल ही बनाती । इसका कारण यह है कि पुडुकोट्टई की महिलाओं ने साइकिल चलाने को आंदोलन का रूप दिया है । वहाँ की युवा लड़कियाँ और महिलाओं ने साइकिल चलाना सीख लिया है । ऐसी स्थिति में यदि साइकिल को कोई महिला अपना पार्टी-चिह्न बनाती तो उसकी जीत निश्चित होती ।

2. अगर दुनिया के सभी पहिए हड़ताल कर दें तो जीवन ठहर जाएगा, क्योंकि पहिया ही लोगों के आवागमन का साधन है ।

3. इस कथन का अभिप्राय यह है कि 1992 से पहले तक पुडुकोट्टई की महिलाएँ पुरुषों द्वारा थोपी गई जिंदगी जीने को विवश थीं किंतु अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन वे अपने सभी बंधन तोड़कर बाहर निकल आईं । इन महिलाओं में जागृति आ चुकी थी । साइकिल चलाना सीखने से उनमें जो आत्मनिर्भरता और आर्थिक समृद्धि आ गई थी उसके कारण वे अब मुड़कर पीछे नहीं देखना चाहतीं ।

4. पुडुकोट्टई (तमिलनाडु), 9 मार्च, (संवाददाता) कल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर यहाँ से दो किलोमीटर दूर स्थित स्टेडियम में यहाँ की महिलाओं ने एक अद्‌भुत कारनामा कर दिखाया । लगभग 1500 महिलाएँ अपनी साइकिल पर झण्डे लगाए और घंटियाँ बजाती हुई शहर में घूमती हुई स्टेडियम में एकत्र हुईं । रूढ़िवादिता से घिरी इन महिलाओं द्वारा परंपरा तोड़कर साइकिल चलाते देखकर लोगों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली । महिलाओं का जोश देखते ही बनता था ।

5. 'पिता के बाद' कविता पढ़ने से ऐसा लगता है कि कविता और फातिमा की बात में संबंध हो सकता है । एक ओर जहाँ फातिमा साइकिल चलाना सीखकर खुशहाली और व्यक्तिगत आजादी का अनुभव करती है, वहाँ इस कविता से पता चलता है कि लड़कियाँ हर हाल में खुश रहने का प्रयास करती हैं । वे अपने उत्तरदायित्वों को निभाने की हिम्मत रखती हैं । पिता की अनुपस्थिति में वे माता को सँभालती हैं । विपरीत परिस्थितियों में भी वे खुश रहने का प्रयास करती हैं ।

भाषा की बात

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
विरोध	वि	रोध
अभिव्यक्त	अभि	व्यक्त
प्रशिक्षण	प्र	शिक्षण
प्रदर्शन	प्र	दर्शन
असाधारण	अ	साधारण
विनम्र	वि	नम्र
बेशक	बे	शक
प्रदान	प्र	दान

शब्द	प्रत्यय	मूलशब्द
स्वाधीनता	ता	स्वाधीन
माध्यमिक	इक	माध्यम
खेतिहर	हर	खेती
वर्षीय	ईय	वर्ष
केन्द्रित	इत	केन्द्र
सामाजिक	इक	समाज
मूर्खता	ता	मूर्ख
सतर्कता	ता	सतर्क
आर्थिक	इक	अर्थ
समझना	ना	समझ
गतिशीलता	ता	गतिशील
बराबरी	ई	बराबर
अंतिम	इम	अंतिम

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (ग), **3.** (ग), **4.** (ग), **5.** (ग), **6.** (ख), **7.** (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

8. ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल चलाना सीख लिया है, इसके लिए पुडुकोट्टई प्रसिद्ध है।

9. पुडुकोट्टई की एक-चौथाई महिलाओं ने साइकिल चलाना सीख लिया है।

10. जमीला बीबी का कहना है कि यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फ़ब्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

11. फातिमा का विचार है कि साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी।

12. सबसे बड़ी संख्या नव साक्षर अथवा नई-नई साइकिल चलाने वाली महिलाओं की है।

13. साइकिल चलाना आरम्भ करने पर पुरुषों का महिलाओं के प्रति व्यवहार बहुत खराब था।

14. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन पुडुकोट्टई की 1500 महिलाओं ने साइकिल रैली निकाली।

15. महिलाएँ आस-पास के गाँवों में खेती की वस्तुएँ बेचने जाने लगीं। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई।

16. सुविधाएँ– (i) समय की बचत हुई। (ii) पुरुषों पर निर्भरता कम हुई। (iii) उनकी आय में वृद्धि हुई। (iv) आत्म विश्वास की वृद्धि हुई।

17. फातिमा साइकिल इसलिए चलाना चाहती थी कि साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। उसे किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

18. साइकिल चलाना पुडुकोट्टई की महिलाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें पुरुषों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

19. अब ये लड़कियाँ साइकिल से कहीं भी आ-जा सकती हैं। वे अब विरोध की परवाह नहीं करतीं।

20. साइकिल चलाने से स्त्रियों में आत्मविश्वास आया है। इससे वह पुरुषों पर निर्भर नहीं रह गई हैं। साइकिल से वे अन्य स्थानों पर सामान ढोकर ले जा सकती हैं। उनको एक नई आजादी का अनुभव हो रहा है।

21. साइकिल चलाने से महिलाओं की आय में बढ़ोत्तरी हुई है। अब ये महिलाएँ अपना सामान बेचने के लिए अधिक समय निकाल सकती हैं।

22. साइकिल सीखने से उनके अन्दर आत्मसम्मान का भाव आया है। साइकिल से इन महिलाओं को आजादी, पिछड़ेपन से छुटकारा, गतिशीलता, पुरुषों पर निर्भर न रहना जैसी सौगातें प्राप्त हुई हैं।

23. महिलाओं के लिए साइकिल चलाना हवाई जहाज उड़ाने जैसी बात है। इसमें कितनी आजादी और आत्मसम्मान का अनुभव होता है, उसे ये महिलाएँ ही समझ सकती हैं।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

पुडुकोट्टई तमिलनाडु का एक पिछड़ा हुआ निर्धन लोगों का इलाका है। यहाँ की महिलाओं ने साइकिल चलाना सीखकर अपने पिछड़ेपन, पुरुषों की दासता और अन्धविश्वासों के बंधन को तोड़ने का एक तरीका बनाया है। साइकिल चलाना उनके लिए अपनी स्वाधीनता, आजादी और गतिशीलता को प्रकट करने का प्रतीक बन गया है। साइकिल चलाना पुडुकोट्टई की महिलाओं के लिए स्वाधीनता के आंदोलन का रूप ले चुका है। महिलाएँ प्रदर्शन और प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण शिविरों तथा साइकिल रैलियों के आयोजन द्वारा इसे निरंतर चलने वाले आंदोलन का रूप दे चुकी हैं। इस आंदोलन ने उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। अब वे आर्थिक रूप से स्वावलम्बी और सामाजिक रूप से आत्मसम्मानपूर्ण नारी बन चुकी हैं। इस प्रकार साइकिल चलाना पुडुकोट्टई में एक व्यवस्थित और लक्ष्य उन्मुख आंदोलन बन गया है।

**

पाठ-10 अकबरी लोटा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कहानी की बात

1. लाला झाऊलाल ने बेढंगा लोटा पसंद न होने पर भी इसलिए ले लिया क्योंकि उन्हें अपनी पत्नी के गुस्से का डर था । झाऊलाल पत्नी से किसी प्रकार का झगड़ा नहीं करना चाहते थे । उन्हें यह भी डर था कि यदि उन्होंने उस लोटे से पानी पीने से मना कर दिया तो क्या पता अगली बार इससे भी खराब बर्तन में पानी मिले ।

2. लाला झाऊलाल ने सोचा होगा कि सिर से पाँव तक भीगा एक अंग्रेज अपना अँगूठा सहला रहा है । अपना लोटा उसके हाथ में देखकर वह समझ गए कि इस लोटे की वजह से ही इसकी ऐसी हालत हुई है, अब वह अंग्रेज झगड़ा करेगा और गालियाँ देगा। आसपास के लोग भी इकट्ठा होंगे और झगड़े का आनंद लेंगे।

3. अंग्रेज के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने से इसलिए इनकार कर दिया जिससे अंग्रेज को जरा भी शक न हो कि ये दोनों एक-दूसरे को जानते हैं । अगर ऐसा होता तो बिलवासी जी की योजना सफल न हो पाती।

4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से लाकर किया था । यह काम उन्होंने इतनी सफाई से किया कि पत्नी को भनक तक नहीं लगी ।

5. अंग्रेज ने वह पुराना लोटा इसलिए खरीद लिया क्योंकि उसके पड़ोसी मेजर डगलस के साथ पुरानी चीजों का संग्रह करने की होड़ लगी रहती थी । यह अकबरी लोटा डगलस द्वारा खरीदे गए जहाँगीरी अंडे से एक पीढ़ी पुराना था। वह मेजर डगलस से एक कदम आगे रहना चाहता था ।

अनुमान और कल्पना

1. यह बात बिलवासी जी ने अपने मित्र झाऊलाल से कही । झाऊलाल यह जानना चाहते थे कि उनके लिए रुपयों का प्रबंध कैसे किया था, तब बिलवासी जी ने कहा कि इस रहस्य को मेरे अलावा मेरा ईश्वर ही जानता है । आप उसी से पूछ लीजिए। ऐसा कहकर वह अपनी पत्नी से चोरी करके उसकी संदूक से रुपया निकालने की बात नहीं कहना चाहते थे ।

2. बिलवासी जी ने अपने मित्र झाऊलाल की मदद करने के लिए चोरी से अपनी पत्नी की संदूक से रुपए निकाल लिए । वह रुपया देने झाऊलाल के घर गए लेकिन वहाँ अकबरी लोटे की वजह से पाँच सौ रुपए की व्यवस्था हो गई । इस प्रकार झाऊलाल की समस्या तो हल हो गई पर असली समस्या बिलवासी जी की थी कि वह चुराए हुए रुपयों को उसी स्थान पर कैसे रखें । वे खुद जागकर पत्नी के सो जाने का इंतजार कर रहे थे ताकि पत्नी के सो जाने पर वह रुपयों को यथास्थान रख सकें ।

3. लाला झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच हुए वार्तालाप से पता चलता है कि लालाजी ने पहले भी अपनी पत्नी से किए गए वायदे नहीं निभाए होंगे । यह भी हो सकता है कि लालाजी ने पैसे तो दिए होंगे लेकिन समय पर नहीं दिए होंगे । लाला झाऊलाल कंजूस प्रवृत्ति के थे और उनकी पत्नी को उनकी बातों पर भरोसा नहीं था।

क्या होता यदि

1. अंग्रेज लोटा न खरीदता तो बिलवासी जी जो रुपए अपनी पत्नी से चुराकर लाए थे वही लाला झाऊलाल को दे देते और झाऊलाल इन रुपयों को अपनी पत्नी को दे देते ।

2. यदि अंग्रेज पुलिस को बुला लेता तो पुलिस झाऊलाल और अंग्रेज को थाने ले जाती। दोनों से समझौता करने को कहती और लालाजी से हर्जाना देने को कहती । फिर भी दोनों न मानते तो दोनों को बंद कर देती।

3. जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे और पत्नी जाग जाती

तो दोनों के बीच झगड़ा होता । वह बिलवासी जी से सब कुछ उगलवा लेती ।

पता कीजिए

1. उल्का तारे का टुकड़ा होता है जो चट्टानों से बना होता है । यह तारे के चारों ओर घूमता है किंतु कभी-कभी यह टूटकर अलग हो जाता है और पृथ्वी की ओर तेजी से गिरता है । गिरते समय वायुमण्डल में घर्षण से जलकर इससे प्रकाश उत्पन्न होता है । इसे तारे का टूटना भी कहते हैं ।

ग्रह और उल्का में समानता – दोनों का निर्माण चट्टान के कणों से हुआ है और दोनों ही किसी तारे के चारों ओर चक्कर लगाते हैं ।

असमानताएँ – ग्रहों का आकार काफी बड़ा होता है जबकि उल्काओं का छोटा । ग्रह अपनी धुरी पर चक्कर लगाते हैं, जबकि उल्काओं की कोई निश्चित धुरी नहीं होती ।

2. इतिहास में इन दोनों के बारे में कोई उल्लेख नहीं मिलता। अत: ये सच्ची कहानियाँ न होकर लेखक की कल्पना मात्र हैं।

3. बहुत पहले की बात है कि मेरे घर में टूटा-फूटा कबाड़े का सामान, बर्तन आदि इकट्ठे रखे हुये थे। यह सामान मेरे बाबा के पिता जी के जमाने से घर के एक पुराने टाँड़ पर पड़ा हुआ था। मैंने उस टाँड़ को एक दिन साफ किया तथा सामान को कबाड़ी को बेचने का निश्चय किया। उस सामान को एक जगह इकट्ठा करके रख लिया। अगले दिन एक कबाड़ी आया। मैंने वह सामान उसे बेचना चाहा। मोल-भाव तय होने के बाद उसने सामान को उलट-पलट कर देखा। उस सामान में टूटी-फूटी, मैली-कुचैली सी एक तश्तरी थी। उस कबाड़ी ने बताया कि यह तश्तरी तो चाँदी की बनी हुई है। मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने कहा कि क्यों मजाक कर रहे हो भैया? तो उसने पुन: कहा कि मैं सही कह रहा हूँ। यह तश्तरी चाँदी की है। काफी समय से कबाड़े के सामान में पड़ी-पड़ी मैली-कुचैली हो गई है। मैंने कहा कि हमें तो पता ही नहीं था। अब मुझे उस ईमानदार कबाड़े वाले के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो रही थी। पिताजी ने उसकी ईमानदारी से खुश होकर इनाम देना चाहा तो उसने विनम्रता से मना कर दिया। इस प्रकार वह खुशी-खुशी अपने रास्ते चला गया। मेरे मन में भी इस मजेदार घटना को लेकर मन में कौतूहल बना रहा।

4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध दो तरीकों से किया । दोनों ही तरीके गलत थे । एक तो उन्होंने अपनी सो रही पत्नी के गले से चाबी निकाली और रुपए चुरा लिए । पत्नी यदि जाग जाती तो घर में बखेड़ा खड़ा हो जाता । दूसरे उन्होंने एक अनजान अंग्रेज को बेवकूफ बनाया । इससे उनका स्वार्थ तो पूरा हो गया पर बाद में यदि उस अंग्रेज को अपने को ठगे जाने का पता चलता तो वह भारत और भारतीयों के बारे में क्या सोचता?

भाषा की बात

1. (1) पर ढाई सौ रुपए तो एक साथ आँख सेकने को भी नहीं मिलते थे ।

(2) सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से ।

(3) इस समय अगर दुम दबाकर भागते तो फिर उसे क्या मुँह दिखलायेंगे ।

(4) अभी अगर चूँ कर देता हूँ तो बाल्टी में भोजन मिलेगा ।

(5) लालाजी गुस्सा पीकर पानी पीने लगे ।

2. (1) **तिलमिला उठना** = क्रोध करना ।
वाक्य प्रयोग – मार पड़ते ही वह तिलमिला उठा।

(2) **दुम दबाकर भागना** = डरकर भाग जाना ।
वाक्य प्रयोग – शेर की दहाड़ सुनते ही जानवर दुम दबाकर भाग गए ।

(3) **हँसी-खेल न होना** = आसान न होना ।
वाक्य प्रयोग – दुश्मन को हराना हँसी-खेल नहीं है ।

(4) **मारा-मारा फिरना** = बिना उद्देश्य के घूमना। **वाक्य प्रयोग** – कारखाना बंद होने से मजदूर बिना उद्देश्य मारे-मारे फिर रहे हैं।

(5) **कान पकना** = तंग आना ।
वाक्य प्रयोग – तुम्हारी बातें सुन-सुनकर मेरे कान पक गए हैं ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (ख), **3.** (क), **4.** (ग), **5.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

6. अकबरी लोटा की तलाश में संसार भर के म्यूजियम परेशान हैं।

7. ढाई सौ रुपए से अधिक देने की हैसियत बिलवासी जी की नहीं थी। अंग्रेज ने पाँच सौ रुपए दिए, तो बिलवासी जी अफसोस के साथ रुपए उठाने लगे।

8. उन्हें अपनी पत्नी के सो जाने का इंतजार था।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

9. जब चार दिन में भी पैसों (रुपयों) का इंतजाम नहीं हो पाया तो झाऊलाल को चिंता होने लगी। रुपयों का इंतजाम न होने पर झाऊलाल को अपने ही घर में और अपनी पत्नी के सामने अपनी इज्जत बचाने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ।

10. झाऊलाल छत की मुंडेर के पास लोटे से पानी पी रहे थे कि अचानक लोटा उनके हाथ से छूट गया। लोटा तेजी से नीचे गिरा और एक अंग्रेज पर गिर गया, जिससे उसके पैर के अँगूठे में चोट आ गई। अनेक लोग इकट्ठे हो गए और अंग्रेज झाऊलाल को तेज आवाज में गाली देने लगा।

11. बिलवासी जी ने लोटे के बारे में झूठी कहानी बनाकर उसे 'अकबरी लोटा' बताया, फिर उसे खरीदने के लिए ढाई सौ रुपए की बोली लगाई, अंग्रेज ने पाँच सौ रुपये देकर लोटा खरीद लिया और चला गया।

12. उस रात में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चादर लपेटे चारपाई पर ऐसे ही पड़े रहे। करीब एक बजे वे अपने बिस्तर से उठे। उन्होंने धीरे, बहुत धीरे से अपनी सोई हुई पत्नी के गले से सोने की जंजीर निकाली जिसमें एक ताली अर्थात् चाबी बँधी हुई थी। फिर उसके कमरे में जाकर उन्होंने उस चाबी से संदूक खोला और उसमें चुपचाप पैसे रख दिए। चुपचाप पैसे रखने की चिंता में बिलवासी जी को नींद नहीं आ रही थी।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

13. झाऊलाल और बिलवासी मिश्र सच्चे मित्र थे। दोनों समय पर एक-दूसरे की सहायता भी करते थे। जब झाऊलाल संकट में फँस गए तो बिलवासी जी ने उनकी पूरी सहायता की। यद्यपि नैतिक दृष्टि से बिलवासी जी का आचरण उचित नहीं माना जा सकता लेकिन मित्र-धर्म निभाने की दृष्टि से बिलवासी का व्यवहार सर्वथा उचित था।

जब झाऊलाल अपने लोटे की कृपा से अंग्रेज की गालियाँ और भीड़ का उपहास झेल रहे थे, बिलवासी जी ने उस लोटे को विख्यात अकबरी लोटा बताकर अँग्रेज को मूर्ख बनाया और झाऊलाल को मुफ्त में पाँच सौ रुपए का फायदा करा दिया। यद्यपि अंग्रेज के प्रति उनके व्यवहार की निंदा की जा सकती है, लेकिन एक सच्चे मित्र के रूप में उनका आचरण प्रशंसनीय था।

**

पाठ-11 सूरदास के पद

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पदों से

1. यशोदा ने श्रीकृष्ण से कहा था कि तुम बार-बार दूध पीते रहोगे तो तुम्हारी चोटी बलराम की तरह लम्बी और मोटी हो जाएगी । इसी लोभ के कारण श्रीकृष्ण दूध पीने को तैयार हुए।

2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि बार-बार दूध पीते रहने पर भी यह अभी तक छोटी ही है। यह बलराम की तरह मोटी और लम्बी नहीं हो रही है । माँ ने कहा था कि बार-बार बालों को काढ़ने और गूँथने से यह बढ़कर नागिन की तरह जमीन पर लोटने लगेगी ।

3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण माखन और रोटी अधिक पसन्द करते हैं ।

4. इस पंक्ति में ग्वालन के मन के निम्नलिखित भाव मुखरित हो रहे हैं -

(क) बार-बार शिकायत करने पर भी यशोदा कुछ नहीं कहती हैं ।

(ख) खाने के अलावा दूध-दही, मक्खन का नुकसान भी करता है ।

(ग) चोरी तो खुद करता है लेकिन

खाने-पीने में अपने साथियों को भी शामिल कर लेता है ।

(घ) बेटे तो हम सभी के हैं पर इतनी शरारतें कोई नहीं करता । लगता है तुमने ही इस अनोखे पुत्र को पैदा किया है ।

5. श्रीकृष्ण खाते समय थोड़ा-सा मक्खन बिखरा देते हैं, इसका एक कारण तो यह है कि ऐसा बाल-सुलभ गतिविधियों के कारण हो जाता है । दूसरा यह कि जल्दबाजी में काम करने के कारण प्राय: ऐसा हो जाता है।

6. दोनों पदों में मुझे दूसरा पद अच्छा लगा, क्योंकि कृष्ण अपनी बाल-सुलभ आदतों के कारण माखन चुराते हैं और गोपी उनकी शिकायत माता यशोदा से करती हैं तथा अंत में कहती हैं कि तुमने ही ऐसा अनोखा पुत्र पैदा किया है । उसका यह कथन अत्यंत प्रासंगिक बन गया है।

अनुमान और कल्पना

1. दूसरे पद को पढ़ने से ऐसा लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र आठ-नौ वर्ष की रही होगी ।

2. तिल और खोआ से बने लड्डू जिनको तिलभोग भी कहते हैं, मुझे बहुत प्रिय हैं। संक्रांति के त्योहार पर माँ ने बड़े भाईसाहब से दो किलो तिलभोग और एक किलो गजक मँगाई थी। मेरा मन लड्डू खाने को आतुर हो रहा था। जैसे-तैसे उनकी पूजा सम्पन्न हुई और उन्होंने लड्डू के और गजक के डिब्बों पर जल छिड़का। अब मेरे सब्र का बाँध टूट चुका था। माँ की नजर बचते ही मैंने चोर की तरह दबे पाँव रसोई में प्रवेश किया और लड्डू के डिब्बे से दो लड्डू जेब में ठूँसे और एक हाथ में छिपाए छत पर जा पहुँचा। मेरा दुर्भाग्य मैंने लड्डू खाने को मुँह खोला ही था कि माँ कपड़े सुखाने छत पर आ पहुँची। मेरी यह दशा देख एक बार तो माँ की त्यौरियाँ चढ़ गईं और फिर वे जोर से हँस पड़ीं और देर तक हँसीं। मुझसे कुछ नहीं कहा।

3. **संकेत :** छात्र स्वयं करें ।

भाषा की बात

1. माखनचोर ।

2. श्याम, गोपाल, गिरिधर, मुरलीधर, वंशीधर ।

3.

शब्द	**पर्यायवाची**
मैया	माँ, जननी, माता
दूध	पय, क्षीर, गोरस
पूत	पुत्र, सुत, आत्मज
मंदिर	घर, आलय, निकेतन
हरि	प्रभु, ईश्वर, परमात्मा
दिवस	वार, दिन, दिवा
सखा	मित्र, सहचर, दोस्त
अनोखा	अद्‌भुत, विचित्र, निराला
सूना	सुनसान, निर्जन, विजन
शब्द	**विपरीतार्थक**
बढ़ेगी	घटेगी
मोहिं	तोहिं
लम्बी	छोटी
मोटी	पतली
नागिनि	नाग
भुइ	आसमान
काचौ	पक्का
दिवस	रात्रि
हानि	लाभ

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (ग), **3.** (घ), **4.** (ग), **5.** (घ), **6.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

7. श्रीकृष्ण एक विनोदी, चंचल और चतुर बालक प्रतीत होते हैं।

8. वह बड़े भाई बलराम के जैसी लंबी और मोटी चोटी चाहते हैं।

9. माता यशोदा ने कृष्ण से कच्चा दूध पीने, अपनी चोटी को नहलाने, कंघी करने और गूँथने को कहा था।

10. गोपी कृष्ण पर चोरी का आरोप लगाती है।

11. कृष्ण गोपी के सूने घर में जाकर ऊखल पर चढ़कर उसके दूध-दही व माखन को स्वयं खाते व अपने मित्रों को भी खिलाते थे और जो अच्छा नहीं लगता था धरती पर बिखेर देते थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

12. इसमें संदेह नहीं कि श्रीकृष्ण बड़े शरारती बालक हैं। लेकिन फिर भी यशोदा उन्हें झिड़कती नहीं हैं। अत: उनका कृष्ण पर बड़ा लाड़-प्यार है।

13. सूरदास जी ने इस पद में बच्चों में स्पर्धा (होड़) की भावना दिखाई है। बालक अपनी बुद्धि के अनुसार अपने आपको बड़ा चतुर मानते हैं। कृष्ण गोपियों का मक्खन चुराने में चतुराई दिखाते हैं। घर जब सूना होता है तब उसमें प्रवेश करते हैं और छींके पर टँगे मक्खन को उतार लेते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

14. ब्रज में श्रीकृष्ण का एक नाम माखन-चोर भी बड़ा प्रसिद्ध है। उनकी माखन-चोर लीला को लोग बड़े आनंद के साथ देखते हैं। उनकी भोली-भाली बातें, बलराम से होड़ करना, दूध के स्थान पर माखन, रोटी माँगना आदि उनके इस नाम को सार्थक करते ही हैं, इसके साथ ही गोपियों के घरों में चोरी से घुसकर उनके मक्खन को खा जाना उनकी प्रिय क्रीड़ा है। चोरी का मक्खन खाने में उन्हें बड़ा आनंद आता है। नंद बाबा के यहाँ हजारों गायें हैं। दूध, दही और मक्खन की कोई कमी नहीं। पर उन्हें तो गोपियों को तंग करने, रिझाने और उनके उलाहने सुनने में बड़ा आनंद मिलता है। यह सब तभी सम्भव है जबकि वह माखन-चोर बने रहें। यही कारण है कि श्रीकृष्ण माखन-चोर कहलाते हैं।

**

पाठ-12 पानी की कहानी

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ से

1. लेखक को बेर की झाड़ी के नीचे चलते हुए ओस की बूँद मिली जो उसकी कलाई पर आ गिरी और सरककर हथेली पर आ गई ।

2. ओस की बूँद जब धरती में कणों का हृदय टटोलती फिर रही थी उसी समय पेड़ की जड़ों ने उसे बलपूर्वक अपनी ओर खींच लिया । पेड़ की जड़ से पत्तियों तक पहुँचने के लिए तीन दिन तक साँसत में रही, इसलिए वह क्रोध और घृणा से काँप उठी।

3. बहुत दिन पहले हाइड्रोजन और ऑक्सीजन नाम की गैसें सौरमंडल की लपटों के रूप में विद्यमान थीं। सूर्य का कुछ अंश टूटकर ठण्डा होता चला गया । हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रिया के कारण पानी की उत्पत्ति हुई। इसी कारण पानी ने हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज कहा ।

4. अरबों वर्ष पहले हद्रजन (हाइड्रोजन) और ओषजन (ऑक्सीजन) के बीच रासायनिक क्रिया हुई । इन दोनों गैसों ने आपस में मिलकर अपना अस्तित्व समाप्त कर लिया। पृथ्वी के गर्म होने के कारण पानी भाप के रूप में पृथ्वी के आसपास बना रहा । भाप के अधिक ठंडा होने से बर्फ बनी और बर्फ पिघलने से पानी बना । इस प्रकार पानी का जन्म हुआ ।

उसकी जीवन-यात्रा की कहानी कुछ इस प्रकार रही – पानी पहले वायुमंडल में भाप के रूप में मौजूद था । यह भाप ठंडी होकर पहाड़ों की चोटियों पर जम गई। वहाँ से पिघलकर समुद्र में फिर उसकी गहराई में चली गई। पुन: यह ज्वालामुखी के कारण भाप बनकर बाहर आई और वर्षा के रूप में नदियों में और नल से टपककर जमीन में समा गई । जहाँ पेड़ों की जड़ों ने इसे सोख लिया। फिर यह पेड़ की पत्तियों से निकलकर वायुमंडल में मिल गया ।

5. कहानी पढ़ने से ज्ञात होता है कि ओस की बूँद लेखक को आपबीती सुनाते हुए सूर्य की प्रतीक्षा कर रही थी ।

पाठ से आगे

1. पानी हमारे चारों ओर नदी, तालाब, झील, समुद्र तथा कुएँ में मौजूद है । यह पानी सूर्य की गर्मी से भाप बनकर वायुमंडल में चला

जाता है । यही भाप ठंडी होकर पुन: पृथ्वी पर वर्षा के रूप में पानी बनकर वापस आ जाती है । यही जल चक्र है । **लेखक ने निम्नलिखित बातें विस्तार से बताई हैं :**

(क) हाइड्रोजन और आक्सीजन से पानी बनने की प्रक्रिया ।

(ख) बर्फ के टुकड़े का सागर की गर्म धारा में पिघलना।

(ग) सागर की गहराई में बूँद का जाना ।

(घ) जड़ों द्वारा शोषित होकर पत्तियों तक पहुँचना ।

2. **कुर्सी की कहानी** - मैं कभी किसी मोटे पेड़ का तना हुआ करती थी । एक दिन कुछ लोगों ने पेड़ को काटकर उसके कई टुकड़े कर दिए । मैं भी उन टुकड़ों में एक थी । फिर लोग मुझे ट्रक में लादकर आरा मशीन पर ले गए । उस निर्दयी मशीन ने मुझे चीर कर कई हिस्सों में बाँट दिया । फिर मुझे एक और कारखाने में ले जाया गया जहाँ आरी की सहायता से मेरे छोटे टुकड़े किए गए और उन टुकड़ों को डिजायन दिया गया । बाद में मेरे शरीर पर हथोड़े से मारकर कीलें ठोकी गईं और मुझे कुर्सी का रूप दे दिया गया । इतने पर भी लोगों का मन नहीं माना और मेरे ऊपर रंग पोतकर रगड़ा गया जिससे चमक आ जाए । पूरी तरह तैयार कर मुझे दुकानदार के हाथ बेच दिया गया । कुछ दिन तक मैं दुकान में पड़ी-पड़ी धूल खाती रही । एक दिन दुकानदार ने भी मुझे झाड़-पोंछकर बेच दिया । फिर मैं एक परिवार में आ गई । वहाँ सभी तरह के लोग मुझ पर सवारी करने लगे । मैं आज तक लोगों का बोझ ढो रही हूँ । मैं उन दिनों को याद करती हूँ जब मैं एक पेड़ का हिस्सा थी । मुझे कोई कष्ट नहीं था । इतना कष्ट सहने के बाद आज भी मैं मनुष्य की सेवा कर रही हूँ ।

3. समुद्र तट के आस-पास के इलाकों का पानी आस-पास के तापमान को न अधिक बढ़ने देता है और न घटने । यहाँ का तापमान समशीतोष्ण रहता है । यही कारण है कि समुद्र तट पर बसे नगरों में न अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी ।

4. पेड़ के तने में जाइलम और फ्लोयम नाम की विशेष कोशिकाएँ होती हैं । इन कोशिकाओं का समूह जड़ों द्वारा शोषित पानी को पत्तियों तक पहुँचाता है । इस तरह पेड़ में फव्वारा न होने पर भी पानी पत्ते तक पहुँच जाता है । वनस्पतिशास्त्र में इस क्रिया को कोशिका क्रिया कहते हैं ।

क्रिया को जानने का आसान प्रयोग – सफेद फूलों वाले पौधे की जड़ों को पानी से भरे बर्तन में रखते हैं । इस पानी में नीली स्याही की कुछ बूँदें मिलाकर पानी को रंगीन बना देते हैं । कुछ समय बाद हम पाते हैं कि फूल की सफेद पंखुड़ियों पर नीली धारियाँ दिखाई देती हैं । ये धारियाँ नीले पानी के कारण होती हैं जो जड़ों के माध्यम से पत्तियों और फूलों तक पहुँचता है ।

अनुमान और कल्पना

1. **लोहे की कहानी**–लोहा खनिज पदार्थों की श्रेणी में आता है। यह भी अन्य खनिज पदार्थों की भाँति कच्ची अवस्था में जमीन के अन्दर से निकाला जाता है। विभिन्न रासायनिक पदार्थों के प्रयोग करके तथा विभिन्न प्रकार की मशीनों तथा कारखानों में शोधन होने के बाद पक्के रूप में मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसे गेट, खिड़की, गर्डर, विभिन्न प्रकार की मशीनों, कलपुर्जों, इमारतों, पुलों, यातायात के साधनों, रक्षायन्त्रों तथा अन्य बहुत से उपयोगों में लाया जाता है। वर्तमान समय में तो इसकी माँग इस कदर बढ़ गई कि किसी भी कार्य को मजबूती प्रदान करने के लिए लोहे पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है।

2. जल की तीन अवस्थाएँ होती हैं – ठोस, द्रव और गैस । जल की द्रव अवस्था की तुलना में उसकी ठोस अवस्था अर्थात् बर्फ हल्की होती है । इसका कारण यह है कि पानी के घनत्व की अपेक्षा उसका घनत्व कम होता है । कम घनत्व के कारण ही बर्फ हल्की होती है।

3. **पर्यावरण संकट**—पर्यावरण शब्द दो शब्दों

परि+आवरण से मिलकर बना है। पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है—चारों ओर से ढका हुआ। पर्यावरण में मानव जीव-जन्तु, नदी, आकाश, पेड़-पौधे, खनिज आदि सभी अपना-अपना महत्व रखते हैं। परन्तु मनुष्य अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए इन सभी साधनों का अन्धा-धुन्ध प्रयोग कर रहा है। मनुष्य को इन संसाधनों के नष्ट होने की कोई चिन्ता नहीं है फिर वह इनकी सुरक्षा के लिए क्यों चिन्तित हो, इसीलिए आज हमारे सामने पर्यावरण सुरक्षा का खतरा पैदा हो गया है। आज विश्व की सभी प्रमुख नदियाँ, यथा—गंगा, यमुना, नर्मदा, टेम्स आदि पूर्णरूप से प्रदूषित हैं, इसके साथ-साथ ही ओजोन परत में भी छेद हो गये हैं, जिसके कारण धरती पर सूर्य का ताप बढ़ता जा रहा है। फलस्वरूप ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इससे पृथ्वी पर बसे द्वीप समूहों तथा महाद्वीपीय तटों के डूब जाने का खतरा पैदा हो गया है। यदि यही स्थिति रही तो समुद्र किनारे बसे शहरों का कभी-भी विनाश हो सकता है। यह चिन्ता का विषय है। इस स्थिति को समझते हुए समस्त विश्व में जल, वायु तथा ध्वनि को प्रदूषण से बचाने के उपाय किए जा रहे हैं। इस उपलक्ष्य में 'पर्यावरण दिवस' व 'पृथ्वी सम्मेलन' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसका एकमात्र उद्देश्य है—पर्यावरण तथा पृथ्वी को बचाना। अत: वर्तमान में इस बात की जरूरत है कि विश्व के सभी देश अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर जलवायु परिवर्तन के खतरों एवं महाविनाश से निपटने के लिए एकजुट होकर एवं व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा पर्यावरण को शुद्ध एवं निर्मल बनाये रखें।

भाषा की बात

(क) यदि **संसार** में **बदलू** को **किसी चीज से** चिढ़ थी तो वह थी **काँच की चूड़ियों से:**

संसार में – अधिकरण कारक
बदलू को – कर्म कारक
किसी चीज से – करण कारक
काँच की चूड़ियों से – करण कारक।

(ख) **पत्र-संस्कृति को विकसित करने के लिए** स्कूली **पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का** विषय भी शामिल किया गया है ।

पत्र-संस्कृति को – कर्मकारक
विकसित करने
के लिए – संप्रदान कारक
पाठ्यक्रमों में – अधिकरण कारक
पत्र लेखन का – संबंध कारक ।

(ग) कुछ **लोगों ने चोर** को पकड़ कर पीटने का मन बनाया ।

लोगों ने – कर्ता कारक
चोर को – कर्म कारक ।

(घ) **फाल्के को** सवाक् **सिनेमा की उपलब्धि को** अपनाना ही था क्योंकि **वहाँ से सिनेमा का** एक नया युग शुरू हो गया था ।

फाल्के को – कर्म कारक
वहाँ से – अपादान कारक
सिनेमा की – संबंध कारक
उपलब्धि को – सम्प्रदान कारक
सिनेमा का – संबंध कारक ।

(ङ) **मैं** आगे बढ़ा ही था कि **बेर की झाड़ी पर से** मोती-सी बूँद **मेरे हाथ पर** आ गिरी ।

मैं – कर्ता कारक
बेर की – संबंध कारक
झाड़ी पर से – अपादान कारक
मेरे हाथ पर – अधिकरण कारक ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (ग), **2.** (ग), **3.** (घ), **4.** (ख), **5.** (ख), **6.** (ख), **7.** (ग), **8.** (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

9. ओस की बूँद लेखक को कहानी सुना रही है। यह कहानी आत्म-कथात्मक शैली में लिखी गई है।

10. बूँद जड़ों के रोएँ द्वारा खींची गई, इसके बाद तने और डालियों के रास्ते पत्तों तक पहुँची।

11. लेखक ने बूँद से कहा कि जब तक तुम मेरे पास हो, कोई पत्ता तुम्हें न छू सकेगा।

12. बूँद के पुरखे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन थे।

प्राचीनकाल में ये सूर्यमंडल में लपटों के रूप में रहते थे।

13. बड़े आकाशीय पिंड की आकर्षण शक्ति के कारण सूर्य का एक भाग टूट गया। कालांतर में इसी टूटे भाग से पृथ्वी बनी।

14. उसने स्वयं को बर्फ में पाया, वह भी बर्फ बन गई थी, चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी।

15. जब बर्फ के रूप में फिसलती हुई बूँद समुद्र में जा मिली तो गर्मधारा में मिलने से पिघलकर पानी बन गई।

16. बूँद समझती थी कि समुद्र में उसी के बंधु-बांधव अर्थात् पानी का राज्य है।

17. मछली के शरीर से निकलने वाले प्रकाश के कारण छोटी-छोटी मछलियाँ उसके पास आ जाती थीं। भूख लगने पर मछली इन्हीं छोटी मछलियों से अपना भोजन प्राप्त करती थी।

18. बूँद व उसके साथी समुद्र की गहराई में एक मोटी चट्टान में घुसकर पृथ्वी के भीतर एक खोखले स्थान पर निकले।

19. बूँद के अगुवा ऊँचे तापमान को सहन नहीं कर पाए और ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन में विभाजित हो गए। दुर्घटना से बूँद के कान खड़े हो गए। बूँद अपने बुद्धिमान साथियों के साथ एक ओर निकल भागी।

20. भूमि के अंदर से बूँद भाप के रूप में ज्वालामुखी पर्वत के विस्फोट से बाहर आई।

21. सरिता के वे दिवस मजे के थे जब बूँद और उसके अन्य साथी कभी भूमि को काटते, कभी पेड़ों को खोखला कर उन्हें गिरा देते।

22. सूर्य निकल आने पर बूँद ने लेखक से कहा- मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकती। सूर्य निकल आए हैं। तुम मुझे रोककर नहीं रख सकते।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

23. लेखक बेर के पेड़ के पास से गुजर रहा था। उसके हाथ पर बेर के पेड़ से एक ओस की बूँद आ गिरी। ओस की बूँद लेखक के हाथ से सरककर उसकी हथेली पर आकर रुक गई, यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। लेखक की दृष्टि पड़ते ही ओस की बूँद ठहर गई। लेखक को सितार की झंकार जैसा स्वर सुनाई दिया।

24. अचानक बूँद का शरीर पेड़ की जड़ों से निकले रोएँ से छू गया। रोएँ ने उसे बलपूर्वक जड़ के भीतर खींच लिया। फिर वृक्ष की कोशिकाओं की सहायता से वह पत्तों के सूक्ष्म छेदों से होकर बाहर निकल गई।

25. एक विराट प्रकाश-पिंड सूर्य की ओर बड़ी तीव्रगति से आता दिखाई दिया। उस पिण्ड की आकर्षण शक्ति से सूर्य का एक बड़ा भाग विभाजित हो गया। इन्हीं में से एक टुकड़ा हमारी पृथ्वी है। इस प्रकार पृथ्वी का जन्म सूर्य से हुआ।

26. समुद्र में मिलने पर बूँद ने देखा कि समुद्र में सबसे अधिक चहल-पहल उसमें निवास करने वाले जीवों के कारण थी। समुद्र में बूँद ने घोंघे, जालीदार मछलियाँ, प्रकाश करने वाली मछली, मोटे पत्ते वाले पेड़, पहाड़ियाँ आदि वस्तुएँ देखीं।

27. भूमि में अत्यधिक गहराई पर तापमान उच्च होता है, जिससे कहीं-कहीं ज्वालामुखी फटते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

28. हमारी धरती के धरातल का तीन-चौथाई भाग पानी से ढका हुआ है, पानी जीवन की उत्पत्ति के लिए अनिवार्य है। हमारे वैज्ञानिक चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों पर जीवन की उपस्थिति का प्रमाण पानी को ही मानते हैं।

हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि ईश्वर ने सबसे पहले पानी की सृष्टि की। विज्ञान भी पानी की उत्पत्ति से ही जीवन की कहानी का आरंभ मानता है। आज भी हमारे जीवन में पानी का सर्वाधिक महत्व है। पानी पीने, नहाने, सफाई करने, कपड़े धोने, भोजन बनाने, मकान बनाने और अन्न, लकड़ी, औषधियों के उगने के लिए भी पानी का होना अनिवार्य है।

आज हम पानी का बहुत दुरुपयोग कर रहे हैं। धरती के अंदर मौजूद पानी को अंधा-धुंध निकाल रहे हैं। इससे पानी का स्तर निरंतर नीचे जा रहा है। खारा पानी निकल रहा है जल-चक्र से पानी धरती से भाप बनकर आकाश में बादल बनता है और वर्षा के रूप में धरती को वापस मिल जाता है।

**

पाठ–13 बाज और साँप

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

शीर्षक और नायक

लेखक ने कहानी के शीर्षक के लिए बाज और साँप का चयन इसलिए किया क्योंकि बाज को जहाँ आकाश की शून्यता से प्यार है वहीं साँप को अपने खोखल से प्यार है। बाज साहस और वीरता का प्रतीक है जबकि साँप कायरता का। बाज अंतिम क्षण तक आकाश में उड़ पाने की अभिलाषा रखता है जबकि साँप भूलकर भी दुबारा ऐसा नहीं करना चाहता। यह कहानी शेर और गीदड़ द्वारा भी कही जा सकती है क्योंकि शेर निर्भीक है और गीदड़ कायर।

कहानी से

1. घायल होने के बाद भी बाज ने कहा, "मुझे कोई शिकायत नहीं है," क्योंकि वह अपनी जिंदगी को जी भरकर जी चुका था। जब तक उसके शरीर में शक्ति थी उसने सभी सुख भोगे। अपने पंखों के दम पर उसने दूर-दूर तक उड़ान भरी और आकाश की असीम ऊँचाइयों को नाप लिया था।
2. बाज जिंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर भी घायल होने के बावजूद वह उड़ना चाहता था क्योंकि उसे आकाश की असीम शून्यता से प्यार था। वह उड़ने से प्यार करता था और मरने तक ऐसा करना चाहता था उसने जिंदगी से हार नहीं मानी थी। उसमें साहस था और वह स्वतंत्रता प्रिय था।
3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था फिर भी उसने उड़ने की कोशिश इसलिए की क्योंकि उसने मृत्यु के निकट पहुँच चुके बाज को उड़ने के लिए लालायित देखा था। उड़ने में बाज के मुख से करुणा भरी चीख निकल रही थी। उड़ने की उसकी असीम चाह देखकर साँप भी आकाश की असीम शून्यता को पाने के लिए लालायित हो उठा। वह भी आकाश के रहस्य को जानना चाहता था।
4. बाज के लिए लहरों ने गीत इसलिए गाया था क्योंकि उसने शत्रुओं से बहादुरी से लड़ते हुए अपना खून बहाया । घायल होने के बावजूद उसके उत्साह में कमी नहीं आई। वह आकाश की ऊँचाइयाँ पाना चाहता था। बाज के साहस, वीरता और बहादुरी से प्रभावित होकर ही लहरों ने उसके लिए गीत गाया।
5. घायल बाज को देखकर साँप इसलिए खुश हुआ होगा क्योंकि घायल बाज अब उसका अहित नहीं कर सकता था । अब उसे बाज से डरने की आवश्यकता नहीं थी । बाज शीघ्र मरने वाला था । अपने स्वाभाविक शत्रु को मरणासन्न देखकर वह खुश हो रहा था ।

कहानी से आगे

1. स्वतंत्रता की प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ :

(1) दूर-दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को पंखों से नाप आया हूँ।

(2) यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टान के किनारे से ऊपर उड़ने की कोशिश क्यों नहीं करते ।

(3) उसने गहरी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा ।

(4) कम-से-कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँ ।

(5) हमारा गीत जिंदगी के उन दीवानों के लिए है जो मरकर भी मृत्यु से नहीं डरते हैं ।

2. बाज की मृत्यु के बाद जब लहरों ने गीत गाया तो उस गीत को सुनने के बाद साँप में साहसपूर्ण जिंदगी जीने की प्रेरणा जाग उठी होगी । उसने सोचा होगा कि जब एक दिन मरना ही है तो क्यों न साहस के साथ मरा जाए । साँप ने दुबारा उड़ने की कोशिश की होगी और उसने अपने शरीर को उछाल दिया होगा ।

साँप ने अपना शरीर तो हवा में उछाल दिया पर उसे उड़ने का अभ्यास नहीं था और न उसके पंख ही थे । फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी । साँप ने पुनः जोर लगाया और वह इस बार चट्टान पर न गिरकर पानी की लहरों पर जा गिरा । नदी की लहरों ने उसे ढक लिया । लेकिन साँप ने अपना फन

बाहर निकाला और तैरकर बाहर आ गया । साँप बहुत खुश था क्योंकि उसने समझ लिया था कि उड़ना कैसा होता है ।

3. पक्षियों को उड़ान भरते समय सचमुच आनन्द का अनुभव होता होगा । प्रकृति ने उन्हें पंख उड़ने के लिए ही दिए हैं । यदि हम पिंजरे में बंद पक्षी को उड़ा दें तो वह बहुत खुश होकर उड़ता है । पिंजरे में उसे पर्याप्त भोजन-पानी मिलने के बावजूद लगता है उसकी खुशियाँ कहीं उड़ गई हैं । इसलिए हम यह कह सकते हैं कि उड़ने में पक्षियों को सचमुच आनन्द का अनुभव होता होगा ।

4. मनुष्य ने हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा रखी है । उसने अपनी इच्छा पूर्ति के लिए कई प्रयोग किए । उसने आकाश में उड़ान भरने वाले हेलीकॉप्टर, रॉकेट, विमान आदि का आविष्कार किया । आज मनुष्य अपनी उड़ने की इच्छा को विमान, हेलीकॉप्टर, रॉकेट तथा ग्लाइडर की मदद से पूरी करता है ।

अनुमान और कल्पना

1. **संकेत :** छात्र स्वयं अपनी कल्पना से तथा अध्यापक की मदद से लिखें ।

भाषा की बात

1. (1) **आँखें चमक उठना** – भाई को आता देख मेरी आँखें चमक उठीं ।

(2) **अंतिम साँस गिनना** – ट्रेन दुर्घटना में घायल कई लोगों में से कुछ अपनी अंतिम साँस गिन रहे थे ।

(3) **मन में आशा जागना** – बरसात होने पर किसानों के मन में आशा जाग उठी ।

(4) **आँखों से ओझल होना** – सूरज निकलते ही तारे आँखों से ओझल होने लगे ।

(5) **कसर बाकी न रखना** – परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए उसने कोई कसर बाकी नहीं रखी ।

2.

प्रत्यय	**बनाए गए शब्द**
द	मानद, दुखद
प्रद	शिक्षाप्रद, लाभप्रद
दाता	मुक्तिदाता, आश्रयदाता
दाई	शक्तिदाई, दुखदाई

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (घ), **2.** (ख), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (क), **6.** (ख), **7.** (ख), **8.** (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

9. साँप समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफा में रहता था।

10. नदी और समुद्र के मिलन स्थल पर लहरें दूध के झागों जैसी सफेद दिखाई देती थीं।

11. साँप इस बात से खुश हुआ करता था कि वह गुफा में पूरी तरह सुखी और सुरक्षित था।

12. बाज घायल था। उसकी छाती पर जख्मों के निशान थे और उसके पंख खून में सने हुए थे। वह दर्द से तड़प रहा था।

13. बाज को बुरी तरह से घायल देखकर साँप ने ऐसा कहा।

14. बाज ने साँप का यह दुर्भाग्य बताया कि वह जिंदगीभर आकाश में उड़ने का आनंद नहीं उठा पाएगा।

15. साँप की गुफा अँधेरे, सीलन और दुर्गंध से भरी थी। बाज की अंतिम इच्छा आकाश में उड़ने की थी। इसलिए बाज के मुख से करुण चीख निकली।

16. बाज का मनोबल बढ़ाने और उसे उड़ने को प्रेरित करने के लिए साँप ने ऐसा कहा।

17. बाज आकाश में नहीं उड़ पाया क्योंकि उसके पंखों में उड़ने की ताकत नहीं बची थी, जो उसका भार सँभाल सकें। वह चट्टान से समुद्र में गिर गया।

18. साँप ने आकाश में उड़ने की मूर्खता की।

19. साँप ने उड़ने के आनंद को एक रहस्य समझा।

20. गीत में बाज के साहस, जीवन से संतुष्टि, स्वतंत्रता के लिए बेचैनी आदि का वर्णन था।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

21. समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफा में साँप आस-पास की गतिविधियों को देखा करता था। समुद्र की ओर दौड़ती नदी, सफेद झागों वाला संगम, दूर तक फैली पहाड़ियाँ

देखते हुए वह उस गुफा में स्वयं को सुरक्षित और सुखी समझता था।

22. एक दिन एक घायल बाज साँप की गुफा में आ गिरा। बाज घायल था। उसकी छाती पर जख्मों के निशान थे और उसके पंख खून में सने हुए थे। वह दर्द से तड़प रहा था।

23. बाज ने कहा उसे भी लगता है कि उसका अंत समय आ पहुँचा था। बाज को अपने आप से कोई शिकायत नहीं थी, क्योंकि उसने अपनी जिंदगी को पूरी तरह से जिया और जिंदगी का हर सुख पूरी तरह से भोगा था। बाज अपने पंखों से आकाश की असीम ऊँचाइयों को नाप आया था। जिंदगी भर आकाश में न उड़ पाने को बाज ने साँप का दुर्भाग्य कहा।

24. बाज की बातें सुनकर साँप मन ही मन उसकी मूर्खता पर हँसा। फिर वह एक दार्शनिक की तरह सोचने लगा कि चाहे धरती पर रेंगते हुए मरा जाए या फिर आकाश में शत्रुओं से जूझते हुए घायल होकर मरा जाए, दोनों का अंत मृत्यु ही है।

25. साँप ने बाज को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यदि तुम्हें अपनी स्वतंत्रता से इतना ही प्रेम है तो चट्टान के ऊपर से उड़ने की कोशिश करो। यह बात साँप ने बाज से कही।

26. साँप की बातें सुनकर बाज के हृदय में एक बार उड़ने की आशा जाग पड़ी। उसके पैरों में इतना बल आ गया कि वह अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खींच लाया। एक गहरी लंबी साँस लेकर बाज ने अपने पंख फैलाए और चट्टान से हवा में कूद गया। टूटे पंख भला शरीर का भार कैसे संभाल सकते थे। वह एक पत्थर की तरह चट्टानों पर लुढ़कता हुआ, नीचे नदी में जा गिरा।

27. आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है? एक बार तो मैं भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊँगा चाहे कुछ देर के लिए ही हो। कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा।

28. साँप को मधुर और रहस्यमयी आवाज सुनाई दी। सूर्य की किरणों के प्रकाश में समुद्र का नीला जल झिल-मिल कर रहा था। मधुर गीत समुद्र की लहरें चट्टानों से टकरा-टकराकर गा रही थीं।

29. साँप के विचारों और उसकी दिनचर्या के आधार पर कह सकते हैं कि वह दुनिया के झंझटों से दूर रहने वाला प्राणी था। ऐसे प्राणी को संकुचित सोच वाला, स्वार्थी और कायर प्राणी की श्रेणी में रखा जा सकता है।

30. संसार में लोग अपने-अपने तरीके से जिंदगी को जिया करते हैं, कुछ लोग दुनिया के झगड़े- झंझटों से और सरोकारों से दूर रहकर घर के कोने में सिकुड़े-सिमटे रहकर जीने को ही जिंदगी मान लेते हैं। एक वे लोग होते हैं, जो संकटों और चुनौतियों को पीठ न दिखाकर जीवन के हर रंग को जी भरकर जीते हैं। बाज इसी साहस, वीरता एवं आदर्श जीवन शैली का प्रतीक है।

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

31. यदि बाज ने भी साँप जैसी जिंदगी बिताई होती तो कहानी का मूल उद्देश्य ही खत्म हो जाता। कहानी उन जीवन-मूल्यों का संदेश नहीं दे पाती जो कहानीकार देना चाहता था। कहानीकार ने बाज को साहस, वीरता और स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। मरणासन्न होने के बावजूद वह उड़कर आकाश की स्वतंत्रता को पुनः पाना चाहता था। जबकि साँप को अपनी खोखल से ही प्यार था। कहानीकार ने साँप को कायरता का प्रतीक बनाया है।

**

पाठ-1 संज्ञा

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब), 5. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) व्यक्ति, (2) संज्ञा, (3) गुण, दोष, धर्म, भाव, (4) बुढ़ापा।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे - राम, मेज, दिल्ली, सज्जनता आदि ।

2. संज्ञा के पाँच भेद होते हैं :

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा, (2) जातिवाचक संज्ञा, (3) भाववाचक संज्ञा, (4) समूहवाचक संज्ञा, (5) द्रव्यवाचक संज्ञा ।

3. जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की सामान्य वस्तुओं या जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे – गाय, शिक्षक, छात्र, नगर, पंखा, पुस्तक, कुर्सी, मेज आदि ।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशिष्ट व्यक्ति या स्थान का ज्ञान हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे – राम, यमुना, रहीम, दिल्ली, जयपुर आदि ।

5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण, कर्म और स्वभाव का बोध हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे – चाल, विनम्रता, बचपन, मिठास, सुख, मुस्कान, सुंदरता, बुढ़ापा, लालिमा आदि ।

6. (क) लाल - लालिमा
(ख) हरा - हरियाली
(ग) सुंदर - सुंदरता
(घ) स्वस्थ - स्वास्थ्य।

7.

शब्द	**संज्ञा भेद**
नदीश	जातिवाचक
मन	भाववाचक
गिरि	जातिवाचक
विश्व	भाववाचक
वन	जातिवाचक
भारत	व्यक्तिवाचक
देश	जातिवाचक
शांति	भाववाचक
भास्कर (सूर्य)	व्यक्तिवाचक
प्रेम	भाववाचक
एकता	भाववाचक
ललाट	जातिवाचक

पाठ-2 लिंग

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (अ), 5. (ब)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. लिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. शेरनी 5. स्त्रीलिंग ।

सुमेलन

(1) ग, (2) घ, (3) ख, (4) क ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. (i) शिष्या (ii) माता (iii) नारी (iv) पाठिका (v) अध्यापिका

2. (i) निरीक्षक (ii) याचक (iii) भाग्यशाली (iv) श्री (v) रूपवान।

3. संज्ञा के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं ।

4. लिंग के दो भेद होते हैं :
(1) पुल्लिंग, (2) स्त्रीलिंग ।

5. (i) स्त्रीलिंग (ii) स्त्रीलिंग (iii) पुल्लिंग (iv) पुल्लिंग (v) स्त्रीलिंग ।

6. नदियों और झीलों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग में लिखे जाते हैं, जैसे - गंभीर, बाणगंगा, रूपारेल, डलझील नक्की झील, साँभरझील, पिछौला झील, लूनी, पार्वती आदि ।

7. पर्वतों के नाम सदैव पुल्लिग में लिखे जाते हैं। जैसे– काला, अरावली, माढ़ौली, रसिया, आबू, हिमालय, आल्पस आदि ।
8. ग्रहों के नाम सदैव पुल्लिग में लिखे जाते हैं, जैसे- सूर्य, बृहस्पति, मंगल, चंद्रमा, राहु, केतु, शुक्र, शनि आदि ।
9. नक्षत्रों के नाम सदैव स्त्रीलिंग में लिखे जाते हैं, जैसे– चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी आदि ।
10. वृक्षों के नाम सदैव पुल्लिग में लिखे जाते हैं। जैसे- आम, केला, अमरूद, आँवला, पीपल, बरगद आदि ।

पाठ-3 वचन

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (अ), 3. (द), 4. (स), 5. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. मरीज, 2. विचार, 3. भावों, 4. छात्राएँ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. गुड़ियों, दिनों, बेटों, कविताओं, कमरों, पुस्तकों, सड़कों, कलमें, दालों, कथाओं ।
2. (अ) केंद्र की सरकार ने शिक्षा में सुधार किए।
   (ब) भारतीय सेनाएँ अजेय हैं ।
   (स) सभी जन सुखी रहें ऐसा मेरा विचार है।
   (द) दीपावली के दीपक अँधेरा दूर करते हैं।
3. कपड़े, जूते, कमरे, पपीते, बस्ते, बेटे, गोले, धोखे, पैसे, कंघे ।
4. छात्राएँ, बालाएँ, शालाएँ, कविताएँ, माताएँ ।
5. चाचा, माता, दादा, बाबा आदि ।
6. भानजे, भतीजे, साले ।
7. माता, दादा ।
8. भक्तगण, अध्यापकगण, युवावर्ग, कृषक वर्ग।
9. वस्तु-वस्तुएँ, वधू–वधुएँ ।

पाठ-4 कारक

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (स), 5. (ब)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) से, (2) पर, (3) आकाश, (4) हे ! (5) भेद ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. संज्ञा के सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध ज्ञात होता है, उसे 'कारक' कहते हैं ।
   दूसरे रूप में हम कह सकते हैं कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से जो संबंध 'संज्ञा' या 'सर्वनाम' शब्दों का होता है, उसे बताने वाला 'कारक' कहलाता है, जैसे– मोहन कुर्सी पर बैठा है । इस वाक्य में मोहन और कुर्सी संज्ञा हैं, 'पर' कारक चिह्न अधि करण कारक का है ।
2. हिंदी भाषा में आठ प्रकार के कारक होते हैं। इनके चिह्न निम्न प्रकार हैं :
   1. कर्त्ता– ने 2. कर्म–को 3. करण–से 4. संप्रदान–के लिए 5. अपादान–से 6. संबंध–का, के, की 7. अधिकरण–में, पर 8. संबोधन–हे, अरे, ओ ।
3. कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं । ये कारकों की संख्या के अनुसार आठ ही होते हैं । जैसे– कर्ता– ने प्रथमा, कर्म- को द्वितीया, करण-से तृतीया, संप्रदान–के लिए चतुर्थी, अपादान से (पृथक् होने के) पंचमी, संबंध -का, के, की छठी, अधिकरण में, पर सातवीं, सम्बोधन हे, अरे, ओ आठवीं विभक्ति।
4. 1. गीता ने – कर्ता कारक
      साधनों से – करण कारक
   2. पुत्र के लिए – संप्रदान कारक
   3. दूल्हा – कर्ता कारक
      घोड़ी पर – अधिकरण कारक
   4. पेड़ से – अपादान कारक।

पाठ-5 सर्वनाम

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (द), 3. (ब), 4. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) उसका, (2) अपने, (3) तुम्हें, (4) उन्हें।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं ।
2. सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद होते हैं : (1) पुरुषवाचक (2) निजवाचक (3) निश्चयवाचक (4) अनिश्चयवाचक (5) संबंधवाचक (6) प्रश्नवाचक ।
3. (क) मुझको तुम्हारे घर जाना है।
   (ख) जिस आदमी ने तुमको देखा था, वह चला गया।
   (ग) तुमको माताजी बुला रही हैं।
   (घ) मुझे आज खाना नहीं खाना है।
   (च) जिसने खाना खाया वही पैसा देगा।
   (छ) मेरी बार का पता किसी को नहीं चले।

पाठ-6 विशेषण

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (ब), 5. (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) दयालु, (2) धार्मिक, (3) दर्शनीय, (4) जापानी,

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द विशेषण कहलाता है ।
2. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता अर्थात् गुणों को प्रकट करते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे - काला कुत्ता, समझदार औरत, ज्ञानी पुरुष ।
3. जिस शब्द से किसी वस्तु की नाप-तौल तथा मात्रा का ज्ञान होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे- थोड़ी-सी बर्फी, आधा गिलास दूध आदि ।
4. संज्ञा तथा सर्वनाम की संख्या बताने वाले विशेषण संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे - (क) आठ व्यक्ति आ रहे हैं ।
   (ख) दस लोग खा रहे हैं ।
5. (क) संज्ञा–दुकान/पकवान, विशेषण–ऊँची/फीके।
   (ख) संज्ञा–घोड़ी/लगाम, विशेषण–नीली/लाल।

पाठ-7 क्रिया

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (स), 2. (अ), 3. (अ), 4. (स), 5. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) खेल रहा है। (2) पका रही है।
(3) नाचेगी। (4) गाती है।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. रोती है - अकर्मक क्रिया ।
2. खेलता है ।
3. संयुक्त क्रिया ।
4. प्रेरणार्थक क्रिया ।
5. करते जाओ ।
6. जब क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है तो क्रिया सकर्मक होती है और जब क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है तो क्रिया अकर्मक होती है।
7. दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनने वाली क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है, जबकि सामान्य क्रिया में एक ही धातु होती है ।

8. जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बनती हैं उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं । जैसे– गर्म से गरमाना, लाज से लजाना, थरथर से थरथराना आदि ।
9. प्रेरणार्थक क्रियाओं में कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी से करवाता है; जैसे– वह मोहन से अखबार पढ़वाता है । 'पढ़वाना', प्रेरणार्थक क्रिया है, जबकि नाम-धातु में क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण में प्रत्यय जोड़कर बनाई जाती हैं, जैसे– गरम से गरमाना, शर्म से शरमाना।

पाठ-8 अविकारी शब्द अव्यय

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (स), 2. (अ), 3. (अ), 4. (ब), 5. (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) विकारी, (2) क्रिया प्रविशेषण, (3) क्रिया, (4) पाँच।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. वे शब्द जिनका रूप-परिवर्तन नहीं होता, अविकारी (अव्यय) पद कहलाते हैं ।
2. क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक अविकारी पद हैं ।
3. वे पद जिनका लिंग, वचन, कारक, पुरुष आदि के आधार पर रूप-परिवर्तन होता है, विकारी पद कहलाते हैं, जबकि जिनमें कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता, उन्हें अविकारी पद कहते हैं ।
4. जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं । जैसे- और, एवं, पर, नहीं तो आदि।
5. जिन अव्यय शब्दों से हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, कष्ट, खुशी आदि भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादि- बोधक अव्यय कहते हैं, जैसे - हे !, अरे !, आह !, छिः ! आदि।
6. क्रिया विशेषण के चार भेद हैं, वे हैं :
   (1) कालवाचक–जैसे - कल, सुबह आदि
   (2) स्थानवाचक–जैसे - ऊपर, उधर आदि
   (3) रीतिवाचक–जैसे-धीरे-धीरे, तेज आदि
   (4) परिमाणवाचक–जैसे - बहुत कम आदि।
7. (क) जिस गति से, कभी नहीं
   (ख) बहुत (ग) कभी-कभी
   (घ) मिल-जुलकर ।
8. तो - संकेत दर्शक, समुच्चयबोधक
   और - संयोजक, समुच्चयबोधक
   कि - उद्देश्यपरक, समुच्चयबोधक ।
   जब - कालवाचक, क्रिया विशेषण ।

पाठ-9 पर्यायवाची शब्द

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (द), 2. (स), 3. (अ), 4. (द), 5. (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) मछली (2) बिजली (3) राजा (4) शिव।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. **सागर** - समुद्र, जलधि, उदधि ।
   गिरि - पर्वत, अचल, भूधर ।
   वन - विपिन, जंगल, अटवी ।
   नर - पुरुष, मानव, मनुज ।
2. **भूमि** - पृथ्वी, धरा, धरती, वसुधा ।
   नभ - आकाश, गगन, अंबर, शून्य ।
   घन - बादल, मेघ, नीरद, जलधर ।
   निशा - रात, रजनी, यामिनी, रात्रि।
   खग - पक्षी, विहग, नभचर, द्विज ।
3. **तलवार** - असि, खड्ग, कृपाण ।
   धरती - भूमि, धरा, वसुधा ।
   सुमन - फूल, पुष्प, कुसुम ।
   चमन - उद्यान, उपवन, बाग ।
4. **रात्रि** - निशा, यामिनी, रजनी, विभावरी।
   दिन - वासर, दिवस, दिवा, अह्न, वार ।

देवता – सुर, देव, अमर, विबु।
पवन – वात, वायु, अनिल, समीर, समीरण ।
बिजली – विद्युत, तड़ित, चपला, चंचला, सौदामिनी।
भौंरा – भ्रमर, षट्पद, मधुप, मधुकर, भृंग ।
अमृत – सोम, सुधा, पीयूष, अमिय ।
सोना – स्वर्ण, हेम, कनक, कंचन, कुंदन।
राजा – नृप, नरेश, नरपति, नरेंद्र, भूपति।
पार्वती – उमा, गौरी, भवानी, गिरिजा ।

पाठ-10 विलोम शब्द

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (अ), 2. (अ), 3. (ब), 4. (स), 5. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) सुख, (2) सन्मार्ग, (3) दुकाल, (4) अपमान।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. संपन्न – विपन्न
   उपकार – अपकार
   उन्नति – अवनति
   स्मृति – विस्मृति ।
2. स्वस्थ – अस्वस्थ
   सफलता – असफलता
   कमजोर – मजबूत
   नियंत्रित – अनियंत्रित
   सबल – निर्बल
   संतोष – असंतोष
   परिपक्व – अपरिपक्व
   भीतरी – बाहरी
   रुचि – अरुचि
   उपयोग – अनुपयोग ।
3. यश – अपयश
   स्वीकार – अस्वीकार
   अनुरक्ति – विरक्ति
   साध्य – असाध्य ।
4. चढ़ना – उतरना
   जोड़ना – तोड़ना
   जाना – आना
   आना – जाना
   हँसना – रोना
   खाना – पीना

पाठ-11 पदबंध

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वाक्य में जब अनेक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं तो वे पदबंध कहलाते हैं ।
2. पदबंध के कितने भेद किए जाते हैं ?
   पदबंध के पाँच भेद किए जाते हैं –
   (1) संज्ञा पदबंध (2) सर्वनाम पदबंध
   (3) विशेषण पदबंध (4) क्रिया पदबंध
   (5) क्रिया-विशेषण पदबंध
3. (क) ग्वाला से लाये दूध में कुछ काला-सा पड़ा हुआ है।
   (ख) गाय का ताजा दूध सदैव स्वास्थ्यव-र्द्धक होता है।
   (ग) पदयात्री कई दिनों बाद चलते-चलते थक कर बैठ गया ।
   (घ) धीरे-धीरे चलता हुआ बूढ़ा आदमी घर पहुँच गया।
   (ङ) वह बगीचे से ताजा और मीठे फल लेकर आया।

पाठ-12 उपसर्ग

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (ब), 2. (द), 3. (द), 4. (ब)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) अनुदेश, (2) सहयोग, (3) आधा भूखा, (4) सहयोग।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पूर्व में लगकर नए शब्द का निर्माण करते हैं । उपसर्ग कहलाते हैं । हिंदी में उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं :
   (1) संस्कृत के उपसर्ग
   (2) हिंदी के उपसर्ग
   (3) विदेशी उपसर्ग ।
2. अ = नहीं– अमल, अमिट, अनाथ, अबोध
   अति = अधिक/परे – अतिशय, अत्याचार
   अध = आधा – अधमरा, अधपका
   निर् = बिना/बाहर – निरक्षर, निरादर
   निस् = बिना/बाहर – निस्तेज, निष्काम
   उन = एक कम – उन्तीस, उन्सठ
   खुश = श्रेष्ठ – खुशबू, खुशदिल
   दुर् = कठिन/बुरा/विपरीत–दुराचार, दुर्गम
   दुस् = कठिन/बुरा/विपरीत–दुस्साहस, दुष्कर्म
   परा = पीछे/विपरीत – पराजय, पराक्रम
3. अनन्त = अन् + अंत
   परीक्षा = परि + इच्छा
   प्रोज्ज्वल = प्र + उत् + ज्वल
   अनुपयोग = अन् + उपयोग
   नीरोग = निः + रोग
   संकल्प = सम् + कल्प
   नास्तिक = न + आस्तिक
   परिच्छेद = परि + छेद
4. हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त होते हैं फलतः उनके उपसर्गों को हिंदी में विदेशी उपसर्ग कहते हैं । जैसे –
   बे = रहित – बेघर,
   बेदर्ददर = में – दरअसल, दरहकीकत
   हम = साथ – हमसफर, हमदर्द
   हेड = प्रमुख– हेड मास्टर, हेड आफिस

पाठ-13 प्रत्यय

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (स), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब), 5. (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) आबादी, (2) गरीबी,
(3) धोखेबाज, (4) केलों ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रत्यय वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में कुछ परिवर्तन कर देते हैं या पूरी तरह बदल देते हैं; जैसे : हिरन + ई = हिरनी, बल + हीन = बलहीन । प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–
   (1) **कृत्–** जो प्रत्यय धातु शब्दों के अंत में प्रयुक्त हों वे 'कृत्' प्रत्यय कहलाते हैं उन्हें कृदंत भी कहते हैं जैसे– अक, बैठ + अक = बैठक ।
   (2) **तद्धित –** जो प्रत्यय धातु के अतिरिक्त अन्य शब्दों के साथ जोड़े जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे– काला + इमा = कालिमा ।
2. लड़का + पन, सीमा + इत, लकड़ी + हारा, याद + गार, मीठा + आई, ठाकुर + आइन ।
3. त्व = मनुष्यत्व, बंधुत्व।
   गीर = राहगीर, आलमगीर।
   आनी = जिठानी, सेठानी।
   इया = आढ़तिया, खटिया।
   ईय = पठनीय, दर्शनीय।
   ऐला = बनेला, विषैला ।
   आवट = लिखावट, दिखावट।
   ता = योग्यता, पात्रता ।

औती = कटौती, फिरौती।
आहट = घबराहट, चिकनाहट।

4. वैज्ञानिक = वि + ज्ञान + इक ।
बेरोजगारी = बे + रोजगार + ई ।
अमानवीय = अ + मानव + ईय ।
निर्ममता = निर् + मम + ता ।
अनगढ़पन = अन + गढ़ + पन ।
अपमानित = अप + मान + इत ।
असामाजिक = अ + समाज + इक ।

5. दुकानदारी = दुकान + दार + ई ।
जिल्दसाजी = जिल्द + साज + ई ।
दिखावटी = दिखाई + आवट + ई ।
मानवीयता = मानव + ईय + ता ।
सामाजिकता = समाज + इक + ता ।

6. 1. (i) उपसर्ग – निर् मूलशब्द – ईह
(ii) मूलशब्द – भाव प्रत्यय – इत
2. (i) मूलशब्द – अर्थ
प्रत्यय – इक
(ii) उपसर्ग – उप
मूलशब्द – हार
3. (i) उपसर्ग – अन्
मूलशब्द – अंत
(ii) मूलशब्द – पुराण
प्रत्यय – इक
4. (i) मूलशब्द – गुरु
प्रत्यय – अव
(ii) उपसर्ग – अति
मूलशब्द – अंत
5. (i) उपसर्ग – अधि
मूलशब्द – आदेश
(ii) मूलशब्द – पाठ
प्रत्यय – अक
6. (i) उपसर्ग – अधि
मूलशब्द – आत्म
(ii) उपसर्ग – नि
मूलशब्द – ऊन
प्रत्यय – इक
7. (i) उपसर्ग – निर्
मूलशब्द – धन
(ii) मूलशब्द – योग
प्रत्यय – इक
8. (i) उपसर्ग – सम्
मूलशब्द – सार
(ii) मूलशब्द – बाल
प्रत्यय – क
9. (i) उपसर्ग – प्र
मूलशब्द – शासन
(ii) मूलशब्द – दूर
प्रत्यय – ई
10. (i) उपसर्ग – अ
मूलशब्द – प्रिय
(ii) मूलशब्द – वृद्ध
प्रत्यय – आ

पाठ-14 वाक्य-विचार एवं वाक्य-शद्धि

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (अ), 2. (स), 3. (स), 4. (ब), 5. (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(1) विधान, (2) अनेक, (3) रुपये, (4) मेरे ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. महात्मा के सदुपदेश सुनने चाहिए।
2. जैसा करोगे वैसा भरोगे।
3. राधा कवयित्री है।
4. आप आम खाकर देखें।
5. प्रवेश निषेध हैं।
6. अब तुम जाओ।
7. अगले सोमवार मैं ऑफिस जरूर जाऊँगा।
8. तुम अपना काम करो।
9. बिल्ली पेड़ पर बैठी है।
10. मैंने रवि को गिफ्ट भेजा।

पाठ-15 विराम-चिह्न

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

(1) क (2) ग (3) ख (4) ग (5) ख

रिक्तस्थानों की पूर्ति

1. (क) राम, मोहन और सोहन जा रहे थे ।
   (ख) उनके भाई ने कहा, ''तुम्हें मेरी इच्छा का पता कैसे होगा ?''
   (ग) अरे ! तुम तो भूल ही गए, ''आज मेरा जन्मदिन है ।''
   (घ) मोहन बोला, ''अब मैं घर लौट रहा हूँ ।''

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. (क) रमेश ! रास्ते में रुककर देखो, वहाँ कौन है?
   (ख) वाह ! तुमने तो कमाल ही कर दिया।
   (ग) 'साकेत' एक महाकाव्य है, जिसे 'मैथिलीशरण गुप्त' ने लिखा है ।
   (घ) रमेश ने कहा, ''मुझे समय बहुत हो गया।''
   (ङ) मित्रो ! यहाँ आओ, बैठो ।
2. मैं उससे कहता कि शहर मैं सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, ''शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाजुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच आ जाए।''

पाठ-16 मुहावरे

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. (घ), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग), 5. (ग)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(अ) लालायित होना, (ब) ढींग मारना,
(स) पछताना, (द) धैर्य खोना।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. **पौ-बारह होना** (लाभ ही लाभ होना)–
   वाक्य-प्रयोग - मंत्री बन जाने से राजकिशोर जी की पौ-बारह हो गयी है । दोनों हाथों से धन और सम्मान बटोर रहे हैं ।
   फूले न समाना (बहुत प्रसन्न होना)–***वाक्य-प्रयोग*** - बेटे को सरकारी नौकरी मिल जाने पर मिश्राजी फूले नहीं समा रहे हैं ।
   शूल उठना (ईर्ष्या या जलन होना)–
   वाक्य-प्रयोग - शर्माजी के शानदार मकान को देखकर पड़ोसियों के मन में शूल उठती रहती है।
   मीठी नींद सोना (चैन से सोना)–***वाक्य-प्रयोग*** - पुराने ऋण के चुक जाने पर सुरेंद्रनाथ अब मीठी नींद सोते हैं ।
   बैर मोल लेना (शत्रु बना लेना)–***वाक्य-प्रयोग*** - पड़ोसियों से बैर मोल मत लो, वरना बहुत पछताओगे ।
   मुँह छिपाना (लज्जित होना)–***वाक्य-प्रयोग*** - बेटा चोरी में पकड़ा गया, अब विक्रमसिंह बेचारे मुँह छिपाते फिर रहे हैं।
2. **(क) आग-बबूला होना** (अत्यंत क्रोधित होना)–
   वाक्य-प्रयोग - विश्वासघात करने वाले मित्र को सामने देखकर वह आग-बबूला हो उठा ।
   (ख) टीका-टिप्पणी करना (आलोचना करना)–
   वाक्य-प्रयोग – अहंकारी लोग दूसरों के अच्छे कामों पर भी टीका-टिप्पणी करने से नहीं चूकते।
   (ग) नुक्ताचीनी करना (कमियाँ निकालना)–
   वाक्य-प्रयोग – दूसरों के आचरण की नुक्ताचीनी करने के बजाय मनुष्य को अपने आचरण पर अधिक ध्यान देना चाहिए ।
3. **मन को मोहित करना–** (मन पर गहरा प्रभाव डालना)-ताजमहल की सुंदरता ने हमारे मन को मोहित कर लिया ।

4. **बाँछें खिलना**- (प्रसन्न हो जाना)– कई वर्ष बाद मित्र को सामने देखकर कमलेश की बाँछें खिल गईं ।

5. **(अ) पाँवों तले जमीन खिसकना**- (बहुत घबरा जाना)- अचानक गोलियों की आवाज सुनकर यात्रियों के पाँवों तले जमीन खिसक गई।

(ब) सन्नाटा छाना– (सभी का शांत हो जाना)– प्रधानाचार्य के आते ही कक्षा में सन्नाटा छा गया ।

(स) फूला न समाना– (बहुत प्रसन्न होना)– पुत्र के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर माँ फूली नहीं समा रही थी।

(द) घड़ों पानी गिरना– (अत्यंत लज्जित होना)- सारे छात्रों के सामने चोर सिद्ध होने से चंद्रमोहन पर घड़ों पानी गिर गया।

रचना

पाठ-1 पत्र लेखन

1.

ए-47, वैशाली नगर,
जयपुर
दि. 2. 8. 20....

परम आदरणीय पिताजी,
सादर चरण-स्पर्श ।
आपका पत्र मिला । पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई । मेरी पढ़ाई यहाँ ठीक प्रकार से चल रही है । घर से आते समय जो रुपये आपने दिए थे, विद्यालय की फीस एवं कुछ नई पुस्तकें लेने में खर्च हो गए हैं । कमरे का मासिक किराया देने की तिथि भी नजदीक आ गई है । अभी एक माह और घर न आ सकूँगा । इसलिए यह पत्र प्राप्त होते ही पाँच सौ रुपये भेज दें तो अति उत्तम रहेगा। मैं यहाँ आपकी इच्छा के अनुसार ही स्वास्थ्य के प्रति भी ध्यान दे रहा हूँ । पूजनीया माताजी को मेरा चरण-स्पर्श,
छोटू को प्यार ।

आपका आज्ञापालक पुत्र
अंशुल

2.

ए-1, स्टेशन रोड,
बजाज नगर,
जयपुर ।
दि. 20-12-20...

परम प्रिय विनीत,
स्नेहयुक्त आशीर्वाद ।
तुम्हारा पत्र मिला । मैं पढ़ाई में व्यस्त था, इसलिए समय पर उत्तर नहीं लिख पाया था। इसका मुझे दु:ख है । मैं यहाँ तुम्हारे और तुम्हारी पढ़ाई के बारे में ही सोचता रहता हूँ ।
तुम जिस विद्यालय में पढ़ रहे हो उसमें पुस्तकालय अत्यन्त सुन्दर है । यह तुम्हें पता ही होगा । तुम वहाँ खाली पीरियड में अवश्य ही कुछ-न-कुछ पढ़ा करो । विद्यालय के बुरे छात्रों से कोई मतलब मत रखना । मेरी पुरानी किताबों का पिताजी को पता है, उनसे निकलवा लेना । मैं जब आऊँगा तो तुम्हारे लिए कुछ अच्छी पुस्तकें लेता आऊँगा ।

तुम्हारा बड़ा भाई,
मयंक चौहान

3.

अजमेर
दिनांक 4-8-20...

प्रिय सहेली ललिता,
सप्रेम नमस्ते ।
तुम्हारा पत्र मिला था, लेकिन परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण शीघ्र उत्तर न दे पाई। सोचा था कि परीक्षाओं के बाद पत्र लिखूँगी। तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ भी समाप्त हो चुकी होंगी और परीक्षाफल भी मिल चुका होगा । तुमने पत्र में लिखा था कि तुम्हारी यहाँ की विश्व प्रसिद्ध दरगाह देखने की बड़ी इच्छा है । हम सब चाहते हैं कि आगामी ग्रीष्मावकाश तुम हमारे साथ बिताओ। तुम्हें देखे हुए बहुत दिन हो गए हैं । इस

बहाने हमें कुछ दिन एक साथ रहने का अवसर भी मिल जाएगा ।
मुझे विश्वास है कि तुम मेरा अनुरोध स्वीकार करते हुए पत्रोत्तर शीघ्र दोगी ।

तुम्हारी प्रिय सखी
शशि

4. 47, अरिहंत नगर,
बीकानेर
11 सितम्बर, 20...

प्रिय मित्र सोहन,
नमस्कार ।
तुम्हारा पत्र मिला । पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम लम्बी बीमारी के बाद अभी स्वस्थ हुए हो । अपने स्वास्थ्य का बराबर ध्यान रखना।
आस्था और संस्कार चैनल पर योग एवं प्राणायाम सम्बन्धी अनेक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं । अत: उनके आधार पर तुम भी नियमित अभ्यास करते रहो, इससे तुम्हारे स्वास्थ्य में अधिक सुधार होगा एवं भविष्य में शरीर भी चुस्त रहेगा ।
घर पर सभी को प्रणाम, बच्चों को प्यार ।

तुम्हारा स्नेही,
धर्मनारायण

5. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
रा. उ. प्रा. वि., किशनगढ़ ।
मान्यवर,
सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 8 अ के सभी छात्र शैक्षिक भ्रमण पर अजमेर जाना चाहते हैं । वहाँ का भ्रमण करने पर हमें एच. एम. टी. घड़ी के कारखाने की जानकारी के साथ-साथ वहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भौगोलिक व ऐतिहासिक ज्ञान भी प्राप्त होगा।
अत: निवेदन है कि हमें इस शैक्षिक भ्रमण की अनुमति प्रदान करते हुए इतिहास के शिक्षक महोदय को मार्ग-दर्शक के रूप में भेजने की कृपा करें ।
दिनांक-12 अगस्त, 20...

आपके आज्ञाकारी शिष्य
कक्षा 8 अ के समस्त छात्र

6. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
आदर्श विद्या मंदिर, डीग ।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि मेरे बड़े भाई साँवरमल का शुभ विवाह दिनांक 24 मार्च, 20... को है । बारात डीग से भरतपुर जायेगी । मेरा बारात में सम्मिलित होना आवश्यक है। अत: श्रीमानजी से प्रार्थना है कि मुझे दिनांक 23 मार्च, 20... से 25 मार्च, 20... तक तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें ।
धन्यवाद ।
दिनांक-23 मार्च, 20...

आपका आज्ञाकारी शिष्य
भरत कुमार
कक्षा 8 स

7. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय
रा. उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पाली ।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 8 (अ) के छात्र कक्षा 8 (ब) के छात्रों के साथ एक क्रिकेट मैच खेलना चाहते हैं । इस मैत्रीपूर्ण मैच के लिए विद्यालय के खेल-मैदान का हम सब मध्यान्तर के बाद उपयोग करना चाहते हैं । अतएव आपसे प्रार्थना है कि हमें आगामी सप्ताह में दिनांक 12.11.20... को मध्यान्तर के बाद खेल-मैदान पर क्रिकेट मैच खेलने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें ।
आपकी अति कृपा होगी ।
दि. 4 नवम्बर, 20...

आपके शिष्यगण
कक्षा-8 (अ) के सभी छात्र

8. सेवा में,
श्रीमान् अध्यक्ष महोदय,
नगरपालिका, ब्यावर ।
महोदय,
निवेदन है कि हमारे मोहल्ले में सफाई

व्यवस्था ठीक प्रकार से न हो पाने के कारण गन्दगी का प्रकोप दिन- प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । नालियों में कूड़े-करकट के कारण पानी सड़ने लगा है । दुर्गन्ध के कारण घरों में रहना कष्टप्रद हो गया है । जगह-जगह कूड़े-कचरे के ढेर इकट्ठे हो जाने से अनेक बीमारियाँ फैलने की आशंका बढ़ गई है, आपके सफाई कर्मचारी बार-बार शिकायत करने पर भी ध्यान देने को तैयार नहीं हैं । वे प्रतिदिन आते हैं, परन्तु सफाई किए बिना ही लौट जाते हैं ।

स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए हमें विवश होकर आपसे निवेदन करना पड़ रहा है । कृपया यथाशीघ्र यथोचित कार्यवाही कर मोहल्ले की सफाई व्यवस्था को सुधारने की कृपा करें ।

विश्वास के साथ,

दि. 11-8-20...

आपका
राजेश

9. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
गुमानपुरा, कोटा ।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी का स्थानान्तरण कोटा से जैसलमेर हो गया है । इसलिए अब आपके विद्यालय में अध्ययन कर पाना संभव नहीं हो सकेगा । जैसलमेर के विद्यालय में प्रवेश हेतु मुझे चरित्र प्रमाणपत्र की आवश्यकता है । कृपया उपलब्ध कराने की कृपा करें ।

अत: आपकी अति कृपा होगी ।

प्रार्थी
धर्मवीर शर्मा

दि. 24.11.20... कक्षा -8 अ

10. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
सिनसिनी (भरतपुर)।
महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा आठ (ब) का छात्र हूँ । मेरे पिताजी के पास मात्र दो बीघा खेत है और हम चार भाई-बहिन हैं । सभी अध्ययन कर रहे हैं । पिताजी की अल्प आय होने के कारण घर का खर्चा मुश्किल से चल पाता है, जिस पर चार बच्चों के शुल्क का खर्चा उठाना असम्भव है । यदि स्थिति ऐसी ही रही तो पिताजी मुझे पढ़ने से रोक सकते हैं । ऐसी हालत में श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि यदि मेरा शुल्क माफ कर दें तो न केवल मेरी पढ़ाई अच्छी तरह चल पाएगी वरन् पिताजी को भी सहायता पहुँचेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए अवश्य ही शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करेंगे ।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
वीरपाल

दि. 25 अगस्त, 20... कक्षा-8 (ब)

11. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय
डी. ए. वी. माध्यमिक विद्यालय,
पुष्कर ।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं अपने मामाजी के शुभ विवाह में सम्मिलित होने के लिए जयपुर जाना चाहता हूँ । इसलिए मैं 3.8.20... से 5.8.20... तक विद्यालय आने में असमर्थ रहूँगा।

अतएव श्रीमान्जी से प्रार्थना है कि मुझे तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें ।

आपकी अति कृपा होगी ।

प्रार्थी
शिव मोहन

दि. 2 अगस्त, 20... कक्षा- 8 (अ)

12. 27 ख, आवास विकास कॉलोनी,
अलवर
26 फरवरी, 20__

प्रिय अवधेश,
नमस्कार !

आज समाचार-पत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार पाने

वाले स्काउटों में तुम्हारा नाम देखकर कितना हर्ष हुआ, शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। स्काउट कार्यक्रम में तुम्हारी रुचि प्रारम्भ से ही थी । मुझे विश्वास था कि तुम्हारी लगन और परिश्रम का सुफल तुमको अवश्य प्राप्त होगा। हमारे मित्र समुदाय को तुम पर गर्व है । मुझे विश्वास है कि स्काउटिंग जैसे पवित्र और सेवाभावी मिशन के माध्यम से तुम समाज और देश की महान सेवा करोगे। इस अवसर और उपलब्धि पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो ।

तुम्हारा मित्र,
अरुण कुमार

13. 676, आदर्श नगर, जयपुर
20 सितम्बर, 20_ _

प्रिय मित्र रवि,
सप्रेम नमस्कार ।

तुम्हारा कुशल-पत्र प्राप्त हुआ । यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम छात्र-संसद के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हो । इस सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो । मेरा विचार है कि विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलाप बड़े उपयोगी हैं । प्रजातंत्रीय व्यवस्था में भावी नागरिकों को इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त होना परम आवश्यक है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपने पद की गरिमा और उसके उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक वहन करोगे और छात्र-कल्याण में अपना योगदान दोगे ।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा
मायाप्रसाद

14. हनुमान नगर, दौसा
17 फरवरी, 20...

आदरणीय बहिन प्रतिभा,
सादर नमस्कार ।

आपका प्रसन्नता प्रदान कर देने वाला पत्र प्राप्त हुआ । पी. एम. टी. परीक्षा में आपकी सफलता से सारे परिवार को अपार प्रसन्नता हुई । आपने प्रतिभा नाम सार्थक किया है । पिताजी की चिरकालीन आशा आज पूरी हो गई । वे आपको 'डॉक्टर' देखना चाहते थे। आपने दिखा दिया कि पुत्रियों का पिता होना कम सौभाग्य की बात नहीं । जब आप अपना शिक्षण पूरा करके एम. बी. बी. एस. की उपाधि से विभूषित होंगी और आपके नाम के पूर्व 'डॉक्टर' अंकित होगा तो हमारा परिवार अत्यन्त गौरवान्वित होगा । पिताजी और माँ के शुभ आशीषों के साथ आपको मेरी हार्दिक बधाई ।

समस्त मंगलकामनाओं सहित,

आपकी बहिन
नीरजा

15. 2, मोहन नगर, धौलपुर,
22 अगस्त, 20...

प्रिय मधु,
हार्दिक बधाई ।

तुम्हारा पत्र मिला, जिसके माध्यम से तुम्हारे जन्म-दिवस के आयोजन का निमंत्रण प्राप्त हुआ । ऐसे शुभ अवसर पर मुझे उपस्थित होना ही चाहिए, किन्तु मलेरिया से पीड़ित होने के कारण मैं नहीं आ सकूँगी। क्या करूँ, विवश हूँ । मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो । मेरी परम प्रिय सहेली को प्रभु दीर्घायु प्रदान करें, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है । मेरी तुच्छ भेंट को स्वीकार करके मन से मेरी उपस्थिति अंकित कर लेना ।

तुम्हारी
कौशल्या जैन

16. 6, पंचवटी, चित्तौड़गढ़
12 जुलाई, 20...

प्रिय मित्र विनोद,
हार्दिक बधाई ।

कल समाचार-पत्र में प्रादेशिक तैराकी प्रतियोगिता में तुम्हारी सफलता का समाचार पढ़कर और चित्र में तुम्हें पुरस्कार ग्रहण करते देखकर मन गद्‌गद् हो उठा । आखिर तुम्हारा श्रम और तुम्हारी लगन रंग ले ही आई । तुम प्रदेश के गौरव हो । हम सभी मित्रों के गर्व का आधार हो । इस सुअवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो ।

मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही तुम राष्ट्रीय

स्तर पर भी अपनी सफलता अंकित कराओगे। तुमको और तुम्हारे परिवार को पुनः हार्दिक बधाई । मिलने की आशा के साथ,

तुम्हारा मित्र
संजय कुमार

17. बाँदीकुई
दिनांक 10 अगस्त, 20__

प्रिय बन्धु महेश,

मुझे अभी समाचार प्राप्त हुआ कि तुम्हारे पूज्य पिताजी का इसी सोमवार को स्वर्गवास हो गया । वास्तव में भैया, वे मुझे इतना प्यार करते थे कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता । उनका मेरे प्रति कितना स्नेहपूर्ण व्यवहार था, कुछ कहा नहीं जा सकता । अन्तिम समय पर मैं उनके दर्शन नहीं कर पाया, यह मेरा दुर्भाग्य रहा । आज वे हम लोगों के बीच नहीं रहे किन्तु उनके आदर्श हमारे सम्मुख हैं । उनका ही हम लोगों को अनुसरण करना है । मैं जानता हूँ कि तुम पर पारिवारिक उत्तरदायित्व कितना बढ़ गया है, फिर भी शान्ति के साथ कार्य करते रहना । उनकी आत्मा को पूर्ण शान्ति मिले, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

तुम्हारा मित्र
रामप्रकाश शमा

पाठ-2 निबन्ध लेखन

1. विद्यार्थी-जीवन और अनुशासन

प्रस्तावना – जिस जीवन में कोई नियम या व्यवस्था नहीं, वह मानव-जीवन नहीं पशु-जीवन ही हो सकता है । बिना किसी भय या लोभ के नियमों का पालन करना ही अनुशासन है ।

अनुशासन का महत्त्व – चाहे कोई संस्था हो या व्यावसायिक प्रतिष्ठान, चाहे परिवार हो या प्रशासन, अनुशासन के बिना किसी का भी कार्य नहीं चल सकता । सेना और पुलिस विभाग में तो अनुशासन सर्वोपरि माना जाता है । विद्यालय देश की भावी पीढ़ियों को तैयार करते हैं । विद्यार्थी-जीवन ही व्यक्ति की भावी तस्वीर प्रस्तुत करता है । आज हर क्षेत्र में देश को अनुशासित युवकों की आवश्यकता है ।

विद्यार्थी-जीवन और अनुशासन – वैसे तो जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक है किन्तु जीवन का जो भाग सारे जीवन का आधार है उस विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी अनुशासनहीन होते जा रहे हैं ।

अनुशासनहीनता के कारण – विद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता के पीछे मात्र छात्रों की उद्दण्डता ही कारण नहीं है । सामाजिक परिस्थितियाँ और बदलती जीवन-शैली भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं । दूरदर्शनी-संस्कृति ने छात्रों को समय से पूर्व ही युवा बनाना प्रारम्भ कर दिया है । भविष्य के लिए उपयोगी ज्ञान वर्तमान में ही परोसना शुरू कर दिया है । सारी सांस्कृतिक शालीनता उनसे छीनी जा रही है ।

आरक्षण ने भी छात्र को निराश और लक्ष्यविहीन बना डाला है । अभिभावकों की उदासीनता ने भी इस विष-बेल को बढ़ाया है । अधिकांश अभिभावक विद्यालयों में बच्चे का प्रवेश कराने के बाद उसकी सुध नहीं लेते।

निवारण के उपाय – इस स्थिति से केवल अध्यापक या प्रधानाचार्य नहीं निपट सकते । शिक्षा एक सामूहिक दायित्व है, जिसकी जिम्मेदारी पूरे समाज को उठानी चाहिए । यह भी सच है कि अनुशासन किसी पर बलपूर्वक नहीं थोपा जा सकता, इसलिए दूसरों को अनुशासित रखने के लिए स्वयं भी अनुशासित रहकर आदर्श प्रस्तुत करना होगा ।

उपसंहार – अनुशासन का दैनिक जीवन में बहुत महत्त्व है । अनुशासन का क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक है । अनुशासन के बिना मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । अनुशासन के अभाव में शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं है ।

2. आतंकवाद की समस्या

प्रस्तावना – बमों के धमाके, गोलियों की तड़तड़ाहट, असुरक्षित जन-जीवन, असुरक्षित ध

र्मस्थान, निर्दोषों का बहता लहू, निराश्रितों के बढ़ते शरणस्थल, यह तस्वीर है हमारे आधुनिक जगत् की । कोई भी, कहीं भी सुरक्षित नहीं है । समाचार-पत्र आतंकवादी कृत्यों के समाचारों से भरे रहते हैं ।

आतंकवाद क्या है ? आतंकवाद बल-प्रयोग द्वारा तथा आतंक फैलाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का बर्बर तरीका है ।

आतंकवाद का विश्वव्यापी रूप – आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है । 'अलकायदा', तालिबान, पड़ोस में फल-फूल रहे जेहादी तथा भारत एवं नेपाल में सक्रिय माओवादी और नक्सलवादी आतंकवाद के सहारे ही अपना अधिकार जमाना चाहते हैं ।

भारत में आतंकवादी गतिविधियाँ तथा दुष्परिणाम– स्वतंत्र भारत में आतंकवाद का प्रारम्भ पूर्वी सीमान्त से हुआ। नागालैण्ड, त्रिपुरा, असम आदि प्रदेशों में विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्र से आतंकवादी गतिविधियाँ काफी समय से चलती रही हैं । भारत में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी व राजीव गाँधी की हत्या से लेकर, विमान अपहरण, निर्दोष लोगों की हत्याएँ, जगह-जगह धमाके, यहाँ तक कि सेना पर भी घात लगाकर हमला करना, अक्षरधाम और संसद-भवन पर हमला, आदि आतंकवाद के ही उदाहरण हैं ।

मुक्ति के उपाय – आतंकवाद के विरुद्ध संसार का हर सभ्य और समझदार देश आवाज उठा रहा है, किन्तु यह रोग बढ़ता ही जा रहा है । आतंकवादी गतिविधियों का कठोरता से सामना करके ही सफलता मिल सकती है।

उपसंहार – आज आतंकवाद को रोकने के लिए हमें अपनी सेना को नवीनतम सैन्य उपकरणों से सुसज्जित करना होगा और सारी गुप्तचर एजेन्सियों को अधिक चुस्त और सावधान बनाना होगा । तभी हम इस आतंकवाद की समस्या से छुटकारा पा सकेंगे ।

3. होली

प्रस्तावना – एक ही तरह का जीवन जीते-जीते व्यक्ति ऊब जाता है । इसके लिए समाज ने अनेक पर्वों व त्योहारों, मेलों आदि की व्यवस्था की है । हमारे देश में सभी धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं । सभी के अपने-अपने त्योहार हैं । हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों में 'होली' का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

मनाने का कारण – होली का त्योहार फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है । वसन्त ऋतु के आगमन से चारों ओर सुगन्धित वातावरण हो जाता है । खेतों में फसलें पकने के लिए तैयार हो जाती हैं । किसान फसलों को देखकर खुश हो उठता है । उसकी यही खुशी होली के त्योहार के रूप में फूट पड़ती है । यह भी कहा जाता है कि प्राचीनकाल में दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी बहिन होलिका को बुलाया था। होलिका को वरदान मिला था कि वह आग में नहीं जलेगी । वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। भगवान की कृपा से प्रह्लाद तो बच गए, परन्तु वह जल गई । इसी खुशी में प्रतिवर्ष होली वाले दिन होलिका दहन किया जाता है ।

मनाने का ढंग – होली के त्योहार की तैयारी एक माह पहले से होने लगती है । घरों व मुहल्लों में उपले-लकड़ियाँ एकत्र करके होली रखी जाती है । होली में शुभमुहूर्त में आग लगाई जाती है । क्षेत्रीय परम्पराओं के अनुसार होली का त्योहार मनाया जाता है । मथुरा में जलती होली के बीच से पण्डा निकलता है । सभी एक-दूसरे पर रंग, अबीर, गुलाल डालते हैं तथा आपस में गले मिलते हैं । बरसाने की लट्ठमार होली पूरे विश्व में प्रसिद्ध है । होली में जौ एवं गेहूँ की बालियाँ भूनकर सब एक-दूसरे को प्रेम सहित भेंट करते हैं । पुराने गिले-शिकवे भूलकर सब एक-दूसरे से गले मिलते हैं । होली को प्रीति-पर्व भी कहा जाता है। सब एक-दूसरे को रंगों से सराबोर कर देते हैं ।

अच्छाइयाँ – होली का त्योहार परस्पर प्रेम और सौहार्द्र की भावना को बढ़ाता है । होली पर अमीर-गरीब का भेद मिट जाता है । सभी में नया उत्साह, नई उमंग, नया जोश दिखाई देता है।

बुराइयाँ – होली के त्योहार के साथ कुछ बुराइयाँ भी जुड़ी हुई हैं । इस दिन कई लोग शराब, भाँग आदि का सेवन करते हैं और नशे में एक-दूसरे से झगड़ा भी कर बैठते हैं । रंग

लगाने के बहाने लोग दूसरों पर कीचड़, कोलतार, तेजाब आदि भी डाल देते हैं, जिससे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है ।

उपसंहार – होली के त्योहार के साथ जुड़ी ये थोड़ी-सी बुराइयाँ यदि दूर हो जाएँ तो इससे अच्छा और कोई त्योहार नहीं है । यह मेल-मिलाप एवं आपसी भाई-चारे की भावना को विकसित करता है । आपस के भेद-भाव भुलाकर हम सबको होली का त्योहार मनाना चाहिए ।

4. यदि मैं प्रधानाचार्य होता

प्रस्तावना – विद्यालय वस्तुत: शिक्षा के केन्द्र हैं । यदि विद्यालयों में पठन-पाठन का वातावरण ठीक नहीं है तो निश्चय ही वहाँ शिक्षक पढ़ाई के कार्य को प्रभावशाली ढंग से नहीं कर पाएँगे । विद्यालयों में शिक्षण का स्तर गिर रहा है, राजनेताओं का हस्तक्षेप होने लगा है तथा अध्यापक उदासीन रहने लगे हैं ।

यदि मैं प्रधानाचार्य होता – प्रधानाचार्य का पद विद्यालय में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। प्रधानाचार्य ही शिक्षण की योजना बनाता है । विद्यालय को सफलता के साथ संचालित करना प्रधानाचार्य का दायित्व है । यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करता । मैं अपने विद्यालय में इस प्रकार सुधार करने का प्रयास करता :

सबसे पहले मैं अनुशासन पर ध्यान देता । छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों एवं कर्मचारियों को ठीक समय पर विद्यालय आने के लिए कहता। मैं स्वयं अनुशासित रहता तथा सभी के लिए आदर्श प्रस्तुत करता । ठीक समय पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का आना-जाना मैं सुनिश्चित करता। मैं शिक्षा के स्तर में सुधार करता, विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देता तथा शिक्षकों के पढ़ने के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ मँगाता तथा उन्हें पढ़ने के लिए देता । शिक्षकों से कहता कि वे पूरी तैयारी करके ही कक्षा में पढ़ाने जाएँ । मैं स्वयं भी पढ़ाता। समय-समय पर छात्रों के अभिभावकों से भी मिलता ।

मैं विद्यालय में खेलकूद, स्काउटिंग, एन.सी. सी., रेडक्रास आदि को संचालित कराता । विद्यार्थियों को बोलने का पूरा अवसर देता । समय-समय पर महापुरुषों के जीवन पर गोष्ठियाँ करवाता । बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए मैं यथासम्भव सभी प्रयास करता ।

मैं विद्यालय की पत्रिका प्रतिवर्ष प्रकाशित करवाता, जिसमें छात्रों की स्वरचित रचनाएँ ही प्रकाशित की जातीं । मैं विद्यार्थियों में एकता, राष्ट्रप्रेम एवं सर्वधर्म समभाव की भावना का विकास करता ।

उपसंहार – विद्यालय का प्रधानाचार्य यदि शिक्षाविद् है तथा वह बालमनोविज्ञान को समझता है तो विद्यालय में शिक्षा का स्तर ऊँचा रहेगा। अच्छा प्रधानाचार्य विद्यालय को आदर्श विद्यालय बना देता है । यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो शैक्षणिक स्तर में सुधार करता तथा अपने अध्ययन, त्याग एवं कठोर परिश्रम से विद्यालय को शिक्षा का वास्तविक केन्द्र बनाने का प्रयास करता ।

5. विज्ञान के चमत्कार

प्रस्तावना – आज हमारा जीवन कितना सुखी है । हमारे कमरे जाड़े में गरम और गर्मी में ठण्डे रहते हैं। पलक झपकते ही हमें हजारों मील दूर के समाचार घर बैठे मिल जाते हैं । हमारी रातें अब दिन जैसी जगमगाती हैं । हमारे घर के भीतर ही रेडियो और टेलीविजन हमारा मन बहलाते हैं । यह सब किसकी देन है ? एकमात्र उत्तर है– विज्ञान की ।

विज्ञान और उसके चमत्कार– मनुष्य ने जब धरती पर जन्म लिया तो उसे अपने चारों ओर की प्रकृति का कोई ज्ञान न था । वह अपनी आवश्यकता के अनुसार सभी वस्तुओं का उपभोग करने लगा । धीरे-धीरे उसका ज्ञान भी बढ़ता गया । आज वह विज्ञान के बल पर सम्पूर्ण प्रकृति का स्वामी बन गया है। उसने और उसके विज्ञान ने जीवन के हर क्षेत्र में चमत्कार कर दिखाया है ।

ज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में– हमारी पुस्तकें, कापियाँ और लेखन-सामग्री मशीनों से तैयार होती हैं । आज आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा भी शिक्षा दी जा रही है ।

कृषि और उद्योग के क्षेत्र में- आजकल विज्ञान ने हमारी कृषि की उपज कई गुनी बढ़ा दी है । अच्छे बीजों, रासायनिक खादों और कृषि-यन्त्रों की सहायता से अब खेती सरल भी

हो गई है और लाभदायक भी । आजकल हमारे सभी उद्योग मशीनों पर आधारित हैं । कहीं-कहीं तो सारा काम मशीनें ही करने लगी हैं, मनुष्य केवल उनके काम देखते हैं ।

समाचार एवं यातायात के क्षेत्र में– विज्ञान ने यात्रा जैसे कठिन काम को भी आसान कर दिया है । रेलगाड़ी अथवा वायुयान द्वारा लम्बी-लम्बी दूरियाँ भी थोड़ी-सी देर में तय की जा सकती हैं । दिल्ली शहर में भीड़ के बढ़ते हुए दबाव के कारण जमीन के नीचे तथा ऊपर मैट्रो ट्रेन चलाकर यातायात को सुगम बनाया गया है । टेलीफोन तथा ई-मेल द्वारा समाचार भेजना अब कितना सरल हो गया है । रेडियो अथवा दूरदर्शन के माध्यम से हम देश-विदेश के समाचार क्षण-मात्र में जान लेते हैं ।

मनोरंजन के क्षेत्र में– विज्ञान हमारा मन बहलाने में भी पीछे नहीं है । रेडियो, टेप-रिकार्डर, टेलीविजन आदि अनेक साधनों से वह हमारा मनोरंजन करता है ।

चिकित्सा के क्षेत्र में – आज रोगी के शरीर का भीतरी हाल जानने के लिए एक्स-रे से भी अच्छी मशीनें हमें प्राप्त हैं । हर बीमारी की अच्छी-से-अच्छी दवा की खोज की जा रही है । आपरेशन द्वारा शरीर के अंगों को भी बदला जा सकता है । लेज़र किरणों से बिना चीर-फाड़ के भी ऑपरेशन होने लगे हैं ।

युद्ध के क्षेत्र में– आज हम राडार की सहायता से शत्रु के हवाई आक्रमण की जानकारी पहले से कर सकते हैं । ऐसे अस्त्र भी बन गये हैं जिनसे शत्रु के लडाकू-विमान को जमीन पर बैठे हुए भी गिरा सकते हैं । निकट भविष्य में सैनिकों के स्थान पर रोबोट द्वारा युद्ध लड़े जाने की संभावना को साकार करने में वैज्ञानिक लगे हुए हैं ।

अन्य क्षेत्रों में– कैलकुलेटर गणित के कठिन से कठिन प्रश्न को एक क्षण में हल कर देता है । कम्प्यूटर तो हमारे दिमाग के समान ही सोचने, समझने और निष्कर्ष निकालने का काम करते हैं ।

उपसंहार– विज्ञान एक सेवक के समान हमारे काम करता है और हमें आराम देता है । वह हमें किसी भी ऋतु में कष्ट नहीं होने देता। किन्तु कभी-कभी युद्ध के रूप में वह विनाश भी करता है । इसलिए हमें विज्ञान का प्रयोग सोच-समझकर ही करना चाहिए ।

6. रक्षा-बन्धन

प्रस्तावना– हिन्दू-त्योहारों में दो त्योहार ऐसे हैं जो भाई-बहिन के पवित्र प्रेम पर आधारित हैं । ये हैं- भैया-दूज तथा रक्षा-बन्धन । रक्षा-बन्धन का त्योहार श्रावण-मास की पूर्णिमा को होता है । इसलिए इसे श्रावणी-पर्व भी कहते हैं ।

यह त्योहार वर्षा ऋतु में होता है । उस समय आकाश में काली घटाएँ छाई रहती हैं । धरती हरियाली की चादर ओढ़ लेती है । सभी छोटे-बड़े नदी-तालाब पानी से भर जाते हैं ।

इतिहास– रक्षा-बन्धन का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है । कहते हैं कि एक बार देवताओं और दैत्यों के युद्ध में देवताओं की हार होने लगी । श्रावण की पूर्णिमा के दिन इन्द्राणी ने इन्द्र के पास एक ब्राह्मण के हाथ रक्षा-सूत्र भेजा । ब्राह्मण ने मन्त्र पढ़कर वह सूत्र (धागा) इन्द्र के दाहिने हाथ की कलाई में बाँध दिया । उस रक्षा-सूत्र (राखी) के प्रभाव से देवताओं की जीत हुई, तभी से प्रतिवर्ष बहिनें भाइयों को और ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बाँधने लगे ।

हमारे इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जबकि राखी की पवित्रता की रक्षा भाइयों ने अपने जीवन का मूल्य देकर की है । विधर्मी और विदेशी लोगों ने भी राखी के महत्त्व को स्वीकार किया है । एक बार बहादुरशाह ने रानी कर्मवती के राज्य पर आक्रमण कर दिया। कर्मवती ने मुगल सम्राट हुमायूँ को राखी भेजकर युद्ध में सहायता माँगी । हुमायूँ मुसलमान था । कर्मवती के पति से उसके पिता की शत्रुता रही थी । किन्तु राखी पाते ही वह सब कुछ भूलकर सहायता देने को तैयार हो गया । दुर्भाग्य से उसे आने में देर लगी । तब तक कर्मवती की सेना हार चुकी थी और कर्मवती अपनी सखियों के साथ चिता में भस्म हो चुकी थी ।

मनाने का ढंग– रक्षा-बन्धन मुख्य रूप से ब्राह्मणों का त्योहार है । इस दिन ब्राह्मण नया यज्ञोपवीत धारण करते हैं । वे अपने यजमानों को

रक्षा-सूत्र बाँधते हैं । घरों पर सेवइयाँ और चावल बनाये जाते हैं । कहीं-कहीं पकवान भी बनते हैं।

बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और मिठाई खिलाती हैं, भाई इसके बदले उन्हें उपहार देते हैं ।

महत्त्व– रक्षा-बन्धन एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है। यह भाई-बहिन के पवित्र प्रेम पर आधारित है । राखी के चार कोमल धागे प्रेम का कठोर बन्धन बन जाते हैं । राखी में प्रेम का वह अमृत भरा हुआ है जो सारे बैर-विरोधों को भुला देता है । राखी के बहाने दूर-दूर रहने वाले भाई-बहन वर्ष में एक बार मिल लेते हैं ।

वर्तमान स्थिति– अब धीरे-धीरे रक्षा-बन्ध न का वास्तविक आनन्द कम होता जा रहा है । राखियों में चमक-दमक तो पहले से बढ़ गई है । अब तो चाँदी की राखियाँ भी मिलने लगी हैं । किन्तु उनके पीछे छिपी हुई भावना समाप्त होती जा रही है । आजकल ब्राह्मण केवल दक्षिणा के लिए रक्षा-सूत्र बाँधते हैं। बहिनें भी अब केवल डाक से राखी भेजकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेती हैं ।

उपसंहार– राखी तो वास्तव में रक्षा-सूत्र है । इसके महत्त्व को रुपये से नापना उचित नहीं । यह त्योहार हमें अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करने की शिक्षा देता है । यह बहिन और भाई को सदा के लिए प्रेम के धागे में बाँधे रखता है।

बहिन-भाई के सुपावन प्यार की पहचान
राखी। देखने में चार धागे, है बहुत बलवान
राखी ।।

7. दहेज-समस्या

प्रस्तावना– दहेज की परम्परा हमारे समाज में प्राचीनकाल से ही चली आ रही है । कन्यादान के साथ दी जाने वाली दक्षिणा के समान यह दहेज हजारों वर्षों से विवाह का अनिवार्य अंग बना हुआ है । किन्तु प्राचीन और वर्तमान दहेज के स्वरूप और आकार में बहुत अधिक अन्तर आ चुका है ।

वर्तमान स्थिति– प्राचीन समाज में दहेज नव-दम्पति को नवजीवन आरम्भ करने के उपकरण देने का और सद्भावना का चिह्न था । राजा, महाराजा और धनवान लोग धूमधाम से दहेज देते थे, परन्तु सामान्य गृहस्थी का काम तो दो-चार बर्तन या गौदान से ही चल जाता था ।

आज दहेज अपने निकृष्टतम रूप को प्राप्त कर चुका है । काले धन से सम्पन्न समाज का धनी वर्ग, अपनी लाड़ली के विवाह में धन का जो अपव्यय और प्रदर्शन करता है वह औरों के लिए होड़ का कारण बनता है । अपने परिवार के भविष्य को दाँव पर लगाकर समाज के सामान्य व्यक्ति भी इस मूर्खतापूर्ण होड़ में सम्मिलित हो जाते हैं । इसी धन-प्रदर्शन के कारण वर-पक्ष भी कन्या पक्ष के पूरे शोषण पर उतारू रहता है ।

कन्या-पक्ष की हीनता– प्राचीनकाल में कन्या को वर चुनने की स्वतन्त्रता थी किन्तु जबसे माता-पिता ने उसको किसी के गले बाँध ने का कार्य अपने हाथों में लिया, तब से कन्या अकारण ही हीनता का पात्र बन गयी है । आज तो स्थिति यह है कि बेटी वाले को बेटे वाले की उचित-अनुचित सभी बातें सहन करनी पड़ती हैं ।

इस भावना का अनुचित लाभ वर-पक्ष पूरा-पूरा उठाता है । घर में चाहे साइकिल भी न हो, परन्तु वह स्कूटर पाये बिना तोरण स्पर्श न करेंगे । बेटी का बाप होना मानो पूर्वजन्म और वर्तमान का भीषण पाप हो ।

कुपरिणाम– दहेज के दानव ने भारतीयों की मनोवृत्ति को इस हद तक दूषित किया है कि एक साधारण परिवार की कन्या और कन्या के पिता का जीना कठिन हो गया है । इस प्रथा की बलिवेदी पर न जाने कितने कन्या-कुसुम बलिदान हो चुके हैं । लाखों परिवारों के जीवन की शान्ति को नष्ट करने का अपराध इस प्रथा ने किया है ।

मुक्ति के उपाय– इस कुरीति से मुक्ति का उपाय क्या है ? इसके दो पक्ष हैं- जनता और शासन । शासन कानून बनाकर इसे समाप्त कर सकता है और कर भी रहा है । किन्तु बिना जन-सहयोग के ये कानून फलदायी नहीं हो सकते। इसलिए महिला वर्ग को और कन्याओं को स्वयं संघर्षशील बनना होगा, स्वावलम्बी बनना होगा । ऐसे वरों का तिरस्कार करना होगा, जो उन्हें केवल धन-प्राप्ति का साधन मात्र समझते हैं ।

उपसंहार – हमारी सरकार ने दहेज-विरोधी कानून बनाकर इस कुरीति के उन्मूलन की चेष्टा की है, लेकिन वर्तमान दहेज-कानून में अनेक कमियाँ हैं । इसे कठोर से कठोर बनाया जाना चाहिए । परन्तु सामाजिक चेतना के बिना केवल कानून के बल पर इस समस्या से छुटकारा नहीं पाया जा सकता ।

8. मेरा प्रिय खेल (फुटबॉल)

प्रस्तावना– खेल दो प्रकार के होते हैं - (i) स्वदेशी, जैसे- गुल्ली-डण्डा, कबड्डी और (ii) विदेशी, जैसे- वॉलीबॉल, फुटबॉल, टेनिस, क्रिकेट आदि । इन खेलों में मुझे फुटबॉल विशेष पसन्द है । यह एक सीधा-सादा और सस्ता खेल है तथा इसमें शरीर का अच्छा व्यायाम हो जाता है ।

खेल का स्वरूप– फुटबॉल का खेल एक बड़े से चौरस मैदान में खेला जाता है। इसके खिलाड़ी दो दलों में बँट जाते हैं । आमतौर पर 11-11 खिलाड़ियों की दो टोलियाँ बना ली जाती हैं । मैदान के बीचों-बीच एक रेखा खींचकर दो भाग कर लिए जाते हैं । प्रत्येक दल को अपने सामने वाले भाग पर गोल करना होता है । एक दल (टीम) गोल करने का प्रयत्न करता है और दूसरा दल उसे रोकता है । एक खिलाड़ी गोल के निकट रहता है । उसका कार्य केवल गोल की रक्षा करना होता है, इसे गोल-रक्षक या गोल-कीपर कहते हैं । गोल के अन्य खिलाड़ी अपने-अपने स्थान से गेंद को अन्दर आने से रोकते हैं और दूसरे उसे गोल में ले जाने का प्रयत्न करते हैं । इस खेल का निर्णायक रैफरी कहलाता है, वही खेल को आरम्भ करता है तथा वही गलती करने वाले खिलाड़ियों को टोकता व हार-जीत का निर्णय करता है । सारे कार्य उसकी सीटी के संकेत पर होते हैं ।

खेल का महत्त्व– स्वास्थ्य के लिए खेल बहुत आवश्यक है । खेलने से भोजन पचता है और भूख अच्छी लगती है । मेरी दृष्टि में फुटबॉल का खेल विशेष महत्त्वपूर्ण है । इस खेल में शरीर को अधिक चोट लगने का डर भी नहीं रहता । फुटबॉल से शरीर का अच्छा व्यायाम हो जाता है । खेल के दो दलों में से एक जीतता है और दूसरा हारता है, किन्तु इस हार-जीत से आपसी प्रेम घटने के बजाय बढ़ता है ।

उपसंहार– हम बच्चों के लिए खेलों का विशेष महत्त्व होता है । खेल हमारे बढ़ते शरीरों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं । हम लोग आपस में तथा दूसरे विद्यालयों की टीमों से मैच भी खेलते हैं । फुटबॉल के खेल में हमारा उत्साह दिन-दिन बढ़ता जा रहा है ।

9. पुस्तकालय

प्रस्तावना– पुस्तकालय (पुस्तक+आलय) शब्द का अर्थ है—पुस्तकों का घर । वह स्थान जहाँ पुस्तकों का संग्रह किया जाता है 'पुस्तकालय' कहलाता है । पुस्तकालय में अनेक विषयों की पुस्तकें विषयानुसार क्रम से लगी रहती हैं । इनमें से लोग अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार पुस्तकें पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाते हैं ।

पुस्तकालयों के प्रकार– पुस्तकालय मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं- (1) निजी पुस्तकालय, (2) सार्वजनिक पुस्तकालय । निजी पुस्तकालय वह होता है जो लोग अपने ही घर पर अपने लिए स्थापित करते हैं । ऐसे पुस्तकालय में केवल एक व्यक्ति या परिवार की रुचि की पुस्तकें होती हैं । सार्वजनिक पुस्तकालय आम जनता के लिए होता है । ऐसे पुस्तकालयों का संचालन तीन तरह से होता है- व्यक्तिगत स्तर पर, पंचायती स्तर पर और सरकारी स्तर पर। कुछ धनी लोग अपने ही पैसे से पुस्तकालय खुलवाकर जनता की सेवा करते हैं । ये व्यक्तिगत पुस्तकालय कहलाते हैं । मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा विद्यालयों द्वारा संचालित पुस्तकालय पंचायती होते हैं । इनके अतिरिक्त सरकार भी कुछ पुस्तकालय चलाती है ।

पुस्तकालय की उपयोगिता– पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार होते हैं, जिनके पास विद्यालय जाने के लिए समय नहीं है वे लोग पुस्तकालय की पुस्तकों से अपना ज्ञान बढ़ाते हैं ।

आज पुस्तकों के मूल्य बहुत बढ़ गए हैं । इसलिए सब लोग उन्हें नहीं खरीद सकते । किन्तु पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर तो सभी पढ़ सकते हैं । इस प्रकार निर्धन व्यक्तियों के लिए पुस्तकालय विशेष लाभदायक होते हैं।

पुस्तक पढ़ना खाली समय बिताने का एक

अच्छा साधन है । जब हमारे पास कोई काम नहीं होता तो हमारा दिमाग बहुत-सी अनुचित बातें सोचने में लग जाता है । इस प्रकार पुस्तकालय हमें बुरी आदतों से बचाकर अच्छा नागरिक बनाते हैं ।

पुस्तकालय में वे ही लोग आते हैं जो ज्ञान बढ़ाना और अपने को सुधारना चाहते हैं । इस प्रकार पुस्तकालय में जाने से हमारी भले लोगों से भेंट होती है । इससे आपसी प्रेम भी बढ़ता है ।

उपसंहार– पुस्तकालय हमारे सच्चे मित्र होते हैं । वे हमें ऊबने नहीं देते । वे हमारा मनोरंजन करते तथा ज्ञान बढ़ाते हैं ।

10. यदि मैं सरपंच होता

प्रस्तावना – भारत सदा से कृषि प्रधान देश रहा है । यहाँ की 80% जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है । केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारें गाँवों के सुधार के लिए अनेक योजनाएँ बनाती हैं, पर उनकी योजनाओं का लाभ प्रत्येक गाँव में पहुँचना कठिन होता है। गाँव-गाँव में समृद्धि लाने का कार्य ग्राम पंचायत के योग्य सरपंच द्वारा ही संभव हो पाता है ।

सरपंच बनने के बाद मेरे कार्य – यदि मुझे ग्राम पंचायत का सरपंच बनने का मौका मिलता तो गाँववालों से पूछकर व भली-भाँति समझकर उनकी हर समस्या को दूर कर गाँव को समृद्धिशाली बनाने का प्रयत्न करने के साथ-साथ मैं निम्नलिखित कार्य करता -

(i) नियमानुसार ग्राम पंचायत की मीटिंग बुलाता । ग्राम की समस्याओं पर विचार करके तथा वहाँ के स्थानीय लोगों के सहयोग से इन्हें सुलझाने की पूरी चेष्टा करता ।

पंचायत के मुख्य कार्य-गाँव की सफाई, प्रकाश व्यवस्था, शिक्षा, भूमि के मामूली झगड़े का निवारण, स्वास्थ्य की देखभाल, गाँवों के कच्चे रास्तों को पक्का करना, राहत कार्यों की देखभाल, बीज-खाद वितरण व्यवस्था, खेती के रोगों की रोकथाम, तालाबों, नलकूपों की समय-समय पर मरम्मत आदि को अपने सहयोगियों की मदद से अच्छी प्रकार करवाता ताकि गाँवों में शीघ्र परिवर्तन दिखाई देने लगता।

(ii) इन सब कार्यों को कराने हेतु पैसे की आवश्यकता होती । गाँव पंचायत की आय के साधन हैं- मवेशियों व घरों पर टैक्स, वाहनों पर टैक्स, आवासीय भूमि की बिक्री, मेला का टैक्स, चरागाह टैक्स, कृषि टैक्स, मवेशी पर लगे दण्ड द्वारा वसूला गया टैक्स । मैं इन सभी आय के साधनों को वसूल करवाने के लिए ईमानदार कर्मचारियों की नियुक्ति करता । समय-समय पर स्वयं निरीक्षण करता ताकि किसी भी स्तर पर टैक्सों की चोरी न हो । इसके लिए पंचायत की रोकड़ और रिकॉर्ड अनुभवी व शिक्षित व्यक्तियों से तैयार करवाता ।

(iii) मैं यह भी निगरानी करता कि आय से प्राप्त धन का दुरुपयोग न हो, इसको जनता की सुविधा के लिए खर्च करने दिया जाय ।

(iv) अपने प्यारे गाँववासियों को समय-समय पर यह भी बताता कि वे दहेज न लें, न दें । दहेज की बुराइयों को खूब विस्तार से समझाता। यह भी सलाह देता कि किसी मृत्यु पर व्यर्थ में पानी की तरह वे पैसा न बहाएँ बल्कि इसके धन से गाँव में अस्पताल व स्कूल खुलवाएँ ताकि कोई भी रोगी साधारण उपचार हेतु शहर की ओर न जाए तथा शिक्षा के लिए हमारे बच्चे कहीं अन्यत्र न जाएँ। कन्याओं के लिए भी कक्षा 10 तक स्कूल खुलवाने के लिए जनता का व सरकार का सहयोग लेने का भरसक प्रयत्न करता ।

उपसंहार – सरपंच गाँव का प्रमुख व्यक्ति होता है। उस पर अनेक उत्तरदायित्व होते हैं। अत: सरपंच के रूप में गाँवों का सम्पूर्ण विकास ही मेरा एकमात्र लक्ष्य रहता ।

11. मरुभूमि का जीवन-धन : जल

प्रस्तावना – जल मनुष्य के जीवन का प्रमुख साधन है, इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती । सभी प्राकृतिक वस्तुओं में जल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । राजस्थान का अधिक भाग मरुस्थल है, जहाँ जल नाम-मात्र को भी नहीं है, इस कारण यहाँ कभी-कभी भीषण अकाल पड़ता है ।

जल-संकट के कारण – राजस्थान के पूर्वी भाग में चम्बल, दक्षिणी भाग में माही के अतिरिक्त कोई विशेष जल-स्रोत नहीं है, जो जल-आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके । पश्चिमी

भाग तो पूरा रेतीले टीलों से भरा हुआ निर्जल प्रदेश है जहाँ केवल इन्दिरा गाँधी नहर ही एकमात्र आश्रय है। राजस्थान में जल-संकट के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं–

(i) भूगर्भ के जल का तीव्र गति से दोहन हो रहा है । इससे जल-स्तर कम होता जा रहा है । (ii) पेयजल के स्रोतों का सिंचाई में उपयोग होने से जल संकट बढ़ता जा रहा है । (iii) उद्योगों में जलापूर्ति भी आम लोगों को संकट में डाल रही है । (iv) पंजाब, हरियाणा आदि पड़ोसी राज्यों का असहयोगात्मक रवैया भी जल-संकट का प्रमुख कारण है । (v) राजस्थान की प्राकृतिक संरचना ही ऐसी है कि वर्षा की कमी रहती है और यदि वर्षा हो भी जाए तो उसकी रेतीली जमीन में पानी का संग्रह नहीं हो पाता ।

निवारण हेतु उपाय – राजस्थान में जल-संकट के निवारण हेतु युद्ध स्तर पर प्रयास होने चाहिए अन्यथा यहाँ घोर संकट उपस्थित कर सकता है। कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं –

(i) भूगर्भ के जल का असीमित दोहन रोका जाना चाहिए । (ii) पेयजल के जो स्रोत हैं, उनका सिंचाई हेतु उपयोग न किया जाए । मानव की मूलभूत आवश्यकता का पहले ध्यान रखा जाए । (iii) वर्षा के जल को रोकने हेतु छोटे बाँधों का निर्माण किया जाए, ताकि वर्षा का जल जमीन में प्रवेश करे और जल-स्तर में वृद्धि हो । (iv) पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश की सरकारों से मित्रतापूर्वक व्यवहार रखकर आवश्यक मात्रा में जल प्राप्त किया जाए ।

उपसंहार – भारत में भूगर्भ जल का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है । देश के सर्वाधिक उपजाऊ प्रदेश इस संकट के शिकार हो रहे हैं, फिर राजस्थान जैसे मरुभूमि प्रधान प्रदेशों के भावी जल-संकट की कल्पना ही सिहरा देने वाली है । अत: जल प्रबन्धन हेतु शीघ्र सचेत और सक्रिय हो जाने में ही राजस्थान का कल्याण निहित है ।

12. मोबाइल और हम

मोबाइल संचार साधनों के आधुनिक सशक्त साधनों में से एक है। इसने मनुष्य के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया है। मोबाइल के द्वारा दिए गए संदेश ने क्षणभर में नोटबन्दी के संदेश को जनता के बीच प्रसारित कर दिया। इस मोबाइल नामक साधन से हमें लाभ और हानियाँ दोनों ही समान रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

मोबाइल का सदुपयोग तो सभी लोगों को समान रूप से ज्ञात है। यातायात के रूप में रेलगाड़ी कितनी देर से आ रही है, कहाँ से होकर किधर जा रही है, क्या किराया है, अपनी सीट को बुक कराना, रिजर्वेशन कराना आदि सुलभ प्रयोगों के बारे में हम सभी परिचित हैं। इसी प्रकार आज मोबाइल द्वारा अपने प्रार्थना पत्र, आवेदन, स्थानान्तरण, बिजली-पानी, गैस आदि का बिल जमा कराना सभी को ज्ञात है, परन्तु इसका जो दुरुपयोग हमारे द्वारा किया जाता है, उससे हम जानकर भी अनजान बने रहते हैं।

मोबाइल पर लोग घण्टे-घण्टे बातें करते रहते हैं, इस सबका उनके जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस दुरुपयोग को रोकने की जरूरत है। मोबाइल का लाभकारी कार्यों के लिए उपयोग होना चाहिए, न कि आचरण हीन-समाज के निर्माण की कड़ी के रूप में। हमारे समाज को, समाज के कर्णधारों को इस ओर ध्यान देने की महती आवश्यकता है।

आज मोबाइल का बहुत ही ज्यादा व्यापक प्रयोग दिखाई दे रहा है। इसके द्वारा हम इष्ट-मित्रों की फोटो खींच सकते हैं। किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी कलाओं का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों की कलाकारी का आनन्द उस समय तो लेते ही हैं परन्तु बाद में भी हम अपने साथियों को इसका आनन्द दिला सकते हैं। होली, दीपावली, दशहरा, गणतन्त्र दिवस आदि उत्सवों, त्योहारों की ज्यों-त्यों होने वाली गतिविधियों को मोबाइल में कैद किया जा सकता है तथा उसके बाद कभी भी हम स्वयं तथा अपने दूर स्थित साथियों को इसका आनन्द दिला सकते हैं। इतना ही नहीं विदेशों में रहने वाले अपने परिवारीजनों के यहाँ शादी समारोह, नृत्य, त्यौहार पर होने वाले कार्यक्रमों का ज्यों का त्यों आनन्द ले सकते हैं।

हमें ऐसा आभास ही नहीं होता कि हम यहाँ बैठे हैं या सुदूर स्थित जगह पर। परन्तु हमें मोबाइल के द्वारा होने वाले दुरुपयोग को रोकना होगा। यह तो ठीक है कि हम इष्ट मित्रों द्वारा गाए जाने वाले गीतों तथा अन्य कार्यक्रमों का

आनन्द उठा लें परन्तु यह गलत है कि इसका उपयोग ब्लैकमेलिंग के लिए किया जाए।

चोरी किए जाने पर या बैंक में प्रवेश करते समय दूर गतिविधि का सम्पूर्ण दृश्य मोबाइल में कैद हो जाने से हमें चोर को ढूँढ़ने में सहायता मिल जाती है, परन्तु अश्लील फोटोग्राफी प्रेरित करती है कि हम इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगाएँ।

अत: आज के इस वैज्ञानिक युग में मोबाइल हमारे लिए वरदान है तो यह हमारे लिए अभिशाप भी हैं। हमें इस ओर ध्यान देना है कि किस-किस प्रकार से इसका दुरुपयोग हो रहा है। हमें इसे रोकना होगा।

13. क्रिकेट मैच का आँखों-देखा वर्णन

प्रस्तावना – मानव प्रारम्भ से ही खेलप्रिय रहा है । खेलों से दुहरा लाभ होता है, एक तो मनोरंजन हो जाता है और दूसरे शरीर भी स्वस्थ रहता है । खेल से आपस में प्रेम व सहयोग की भावना का विकास होता है।

मैच की तैयारी – हमारे विद्यालय की जूनियर एवं सीनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों की टीम का क्रिकेट मैच रविवार को रखा गया ताकि शिक्षण-कार्य में बाधा न पड़े । दोनों टीमें मैदान में उपस्थित हुईं । अवकाश का दिन होने पर भी मैदान के चारों ओर छात्रों की भीड़ थी । दर्शक अपनी-अपनी पसंद की टीमों का उत्साह बढ़ा रहे थे ।

मैच का प्रारम्भ और उसका परिणाम – मैदान में दोनों टीमें पंक्तिबद्ध खड़ी थीं । दो अम्पायरों ने मैदान में प्रवेश किया तथा दोनों टीमों के कप्तानों को बुलाकर सिक्का उछाला । जूनियर टीम के कप्तान ने टॉस जीता तथा सीनियर टीम से फील्डिंग करने को कहा । दर्शकों ने तालियों से खिलाड़ियों का स्वागत किया । सीनियर टीम की तेज बॉलिंग के सामने जूनियर टीम का पहला विकेट पच्चीस रन पर तथा दूसरा तीस रन पर गिर गया। इसके बाद तीसरे खिलाड़ी के रूप में खेलने आये जूनियर टीम के राहुल ने एक सौ पचास रन बनाए और वह अन्त तक आउट नहीं हुआ । इस प्रकार जूनियर टीम ने पाँच विकेट पर दो सौ सत्ताईस रन बनाए ।

सीनियर टीम दो सौ सत्ताईस रन का पीछा करते हुए एक सौ नवासी रन बनाकर ऑल आउट हो गए । जूनियर टीम के राहुल ने गेंदबाजी में भी कमाल दिखाया। राहुल ने मात्र चालीस रन देकर सीनियर टीम के छह विकेट चटका दिए ।

इस प्रकार जूनियर टीम ने मैच जीत लिया । सभी ने राहुल को बाँहों में उठा लिया । सीनियर टीम के खिलाड़ियों ने भी राहुल को बधाई दी और उससे हाथ मिलाया । दोनों टीमों के खिलाड़ियों की खेल-भावना देखते ही बनती थी ।

उपसंहार – "क्रिकेट भद्रजनों का खेल है"– यह कहावत खेल देखने पर ही मालूम होती है । खेलों से हम बहुत-कुछ सीखते हैं । सच्चा खिलाड़ी वही है जो सफलता के लिए जी-जान से कोशिश करे, परन्तु असफल होने पर निराश न हो ।

14. राजस्थान का प्रसिद्ध मेला : गणगौर

प्रस्तावना – राजस्थान लोकपरम्पराओं एवं लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखने में सदैव अग्रणी रहा है । यहाँ वर्ष-भर उत्सव व त्योहार मनाये जाते हैं । इसीलिए कहा जाता है - "म्हारो रंग रंगीलो राजस्थान" ।

राजस्थान में अनेक मेले लगते हैं । इन्हीं मेलों में 'गणगौर' के मेले का महत्त्वपूर्ण स्थान है । मेलों में दूर-दूर से लोग आते हैं, एक-दूसरे से परिचय बढ़ता है तथा आनन्द मिलता है ।

मेले की परम्परा – 'गणगौर' हमारी भारतीय संस्कृति से जुड़ी परम्परा का पर्व है । कुमारी कन्याएँ एवं विवाहिताएँ अपने सौभाग्य के लिए गौरी-पूजन करती हैं। गौरी (पार्वती) ने शिव को पति रूप में पाने के लिए व्रत रखा था । इस मेले का सूत्र इसी पौराणिक लोककथा से जुड़ता है । गौरी (पार्वती) को सौभाग्य की देवी माना जाता है । गौरी की मिट्टी की प्रतिमाएँ बनाकर घर में रखी जाती हैं तथा सोलह दिन तक उन प्रतिमाओं का पूजन किया जाता है । इन प्रतिमाओं का विसर्जन करना ही गणगौर मेले का उद्देश्य है।

मेले का स्थान और समय – गणगौर का प्रसिद्ध मेला जयपुर में लगता है । यह मेला राजस्थान का प्रसिद्ध मेला है । यह मेला प्रतिवर्ष

चैत्र शुक्ला तीज और चौथ को जयपुर के मुख्य मार्ग त्रिपोलिया बाजार, गणगौरी बाजार और चौगान में धूमधाम से लगता है ।

मेले का दृश्य – जयपुर के गणगौर मेले को देखने के लिए देशी तथा विदेशी पर्यटक भी आते हैं । राजस्थान के विभिन्न गाँवों से आने वाले लोग रंग-बिरंगी पोशाकें पहने हुए मेले में सम्मिलित होते हैं। स्त्रियों की टोलियाँ लोकगीत गाते हुए चलती हैं । संध्या को निश्चित समय पर राजमहल के त्रिपोलिया दरवाजे से गणगौर की सवारी धूमधाम से निकलती है । सवारी में आगे-आगे हाथी, ऊँट, रथ होते हैं । इनके पीछे पुलिस एवं बैण्ड चलते हैं। गणगौर की सवारी सुन्दर ढंग से सजी पालकी में चलती है । यह जुलूस त्रिपोलिया बाजार से छोटी चौपड़ होता हुआ गणगौरी बाजार तक जाता है। यहाँ अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधन, खाने-पीने के सामान आदि रहते हैं।

मेले का समापन – हीरे-जवाहरात से सजी-धजी गणगौर की प्रतिमा से युक्त सवारी जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है, वैसे ही मेला उखड़ता जाता है । सड़कों पर भीड़ की रेल-पेल शुरू हो जाती है । लोग अपने-अपने घरों को लौटना शुरू कर देते हैं ।

उपसंहार – मेलों के आयोजन से हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ जीवित रहती हैं । हमें अपनी संस्कृति एवं लोकपरम्पराओं की जानकारी होती है । उनके प्रति हमारे मन में आस्था जाग्रत होती है । यद्यपि आधुनिकता के प्रभाव से मेलों में कुछ बुराइयाँ भी देखने को मिलती हैं, फिर भी मेलों का आयोजन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यापारिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

पाठ-3 संवाद लेखन

1. दिल्ली में बढ़ते अपराधों के बारे में दो बुजुर्गों के बीच संवाद।

ओमप्रकाश – आपने आज खबर सुनी ?
रामसिंह – हाँ, सुनी थी। पता नहीं, शहर को क्या होता जा रहा है।
ओमप्रकाश – पहला जमाना ठीक था, पर आज तो घर में भी आदमी सुरक्षित महसूस नहीं करता।
रामसिंह – ठीक कह रहे हो, भाई! परसों पड़ोस में दिन-दहाड़े ही चोरी हो गई।
ओमप्रकाश – आपके पड़ोस में तो चोरी ही हुई। हमारे यहाँ तो अपराधी चोरी करने के साथ पति-पत्नी को चाकू से घायल भी करके चले गए।
रामसिंह – कानून का कोई भय नहीं रहा।
ओमप्रकाश – आज बस में लूटमार की खबर से मैं सन्न रह गया।
रामसिंह – हाँ, इससे बुरा और क्या हो सकता है।
ओमप्रकाश – पुलिस भी लाचार होती जा रही है।
रामसिंह – सच तो यह है कि समाज में विचारों की गन्दगी बढ़ती जा रही है। इसे हम सब मिलकर ही ठीक कर सकते हैं।

2. बार-बार बिजली के जाने पर दो गृहिणियों के बीच संवाद–

रमा देवी – नमस्कार दीदी! क्या कर रही हो ?
पूजा सिंह – नमस्ते! अभी-अभी कपड़े धोए हैं।
रमा देवी – शाम के पाँच बजे ?
पूजा सिंह – हाँ, सुबह से बिजली ने परेशान कर रखा है।
रमा देवी – आप ठीक कह रही हैं। हमारे यहाँ भी बिजली बहुत जाती है। रात-रात भर बिजली नहीं आती है। ऊपर से इतनी गरमी उफ।
पूजा सिंह – पता नहीं सरकार क्या करती है? चुनावी वायदे कभी पूरे नहीं होते हैं।

3. पापा और बेटी के बीच संवाद—

बेटी – पापा, इस बार गरमी की छुट्टियों में हम कहाँ घूमने जाएँगे।
पापा – बेटी, इस बार हम मैसूर जाएँगे।
बेटी – वाह! खूब मजा आएगा। मैं तो वहाँ का दशहरा भी देखूँगी।
पापा – लेकिन दशहरे से पहले हम वापस आयेंगे।
बेटी – ओह! मैं तो भूल ही गई थी।
पापा – कोई बात नहीं। हम मैसूर में खूब घूमेंगे।

4. ग्राहक और दुकानदार के बीच संवाद—

ग्राहक – भाई साहब मुझे तीन किलो दाल, पाँच किलो छोले और पाँच किलो रिफाइण्ड दे दीजिए।
दुकानदार – जी ठीक है! मैं अभी पैक करवाता हूँ।
ग्राहक – भाई साहब कितना टाइम लगेगा।
दुकानदार – जी अभी पाँच मिनट में दे देता हूँ।
ग्राहक – (सामान लेते हुए) कुल कितने पैसे हुए।
दुकानदार – आपको मात्र 1240 रुपये देने हैं।
ग्राहक – यह लीजिए अपने रुपये।
दुकानदार – धन्यवाद! फिर आइयेगा।

पाठ-4 कहानी लेखन

1. शेर और चूहा

किसी वन प्रदेश में एक सिंह रहा करता था। एक दिन वह वृक्ष की छाया में सो रहा था। उस वृक्ष के नीचे ही एक चूहा बिल बनाकर रहता था। वह चूहा बिल से निकल कर सोते हुए शेर की पीठ पर चढ़कर उसके केशों को काटने लगा। जागे हुए सिंह ने चूहे को हाथ में पकड़कर कहा– ''कौन है? मेरे बालों को क्यों काट रहा है? मैं तुझे मार दूँगा।'' डरे हुए चूहे ने निवेदन किया– ''मैं तुच्छ चूहा होते हुए भी आपकी सहायता करने की प्रतिज्ञा करता हूँ।'' दयालु सिंह ने उसका उपहास करते हुए छोड़ दिया।

एक दिन सिंह वधिकों द्वारा फंदे में बाँध लिया गया। उसने जोर की गर्जना की। चूहा सिंह को आपत्ति में पड़ा हुआ जानकर वहीं आ पहुँचा। उसने उसके जाल को काट कर शेर को पाश से मुक्त कर दिया। जाल से छूटा हुआ शेर चूहे के साथ मित्रता करके स्वच्छन्द विचरण करने लगा।

2. देवता और दानव

प्राचीनकाल में देवता और दानव प्रजापति (ब्रह्मा) के पास गए और पूछा कि हम आपकी संतान हैं, हममें से बुद्धि में कौन अधिक बड़ा है?

प्रजापति ने सोचा कि दोनों में से जिसे बड़ा कहा जाएगा वह खुश तथा दूसरा नाराज हो जाएगा। बेहतर होगा कि दोनों को स्वयं अपनी बुद्धि की परीक्षा के आधार पर निर्णय करने का मौका दिया जाय।

दूसरे दिन उन्होंने देवताओं और दानवों को अपने यहाँ भोजन पर आमंत्रित किया तथा उनके भोजन के लिए लड्डू भिजवा दिए। भोजन के लिए यह शर्त रखी गई कि जो बिना कोहनी मोड़े भोजन कर लेंगे वही सबसे अधिक बुद्धिमान होंगे।

प्रजापति की बात सुनकर सभी परेशान थे। देवताओं ने एक उपाय निकाला, कमरे का दरवाजा बंद करके भोजन एक-दूसरे के मुँह में डालने लगे, सबने भोजन किया और सारा भोजन समाप्त कर लिया। दूसरी ओर दानव बहुत परेशान थे कि भोजन कैसे करें। वे लड्डुओं को हवा में उछाल-उछालकर मुँह में डालने लगे। कुछ लड्डू

फूट गए, सारा कमरा गंदा हो गया। दानव चीखने-चिल्लाने लगे लेकिन भोजन नहीं कर सके।

अंत में प्रजापति ने कहा कि देवता ही दानवों से श्रेष्ठ हैं। देवताओं ने एक-दूसरे का सहयोग करके जीओ और जीने दो की भावना के साथ भोजन किया जबकि दानव झगड़ते रहे और भूखे रहे। उन्होंने सबको यह पाठ पढ़ाया कि जिसके पास बुद्धि है, बल उसी के पास होता है।

3. पन्ना धाय और बनवीर

चित्तौड़गढ़ में महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद 14-15 वर्ष के विक्रमसिंह का राजतिलक किया गया। 7-8 वर्ष के छोटे पुत्र उदयसिंह की देखभाल पन्नाधाय करती थी। उसका भी उसी उम्र का एक पुत्र था चंदन। दासीपुत्र बनवीर चित्तौड़ की गद्दी हथियाना चाहता था। उसने नवरात्र में नाच-रंग का आयोजन कराया और विशेष रूप से दोनों राजकुमारों को बुलाकर धोखे से हत्या की योजना बनाई। विक्रमसिंह धोखे में आ गया, परंतु उदयसिंह के लिए पन्ना ढाल बनी हुई थी। मगर वह उसे लेकर बाहर भी नहीं जा सकती थी क्योंकि चारों ओर बनवीर के भेदिए मौजूद थे।

कीरत बारी नाम का व्यक्ति पन्नाधाय का भक्त था। वह महलों से जूठी पत्तलें एकत्र करता था। पन्ना ने उसे काम सौंपा कि वह अपने टोकरे में उदयसिंह को छिपाकर किले से बाहर पहुँचा दे। उधर चंदन तमाशा देखकर लौटा तो माँ ने उसे प्यार करते हुए, अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते हुए उदयसिंह के पलंग पर ही सुला दिया। थोड़ी देर बाद हत्यारा बनवीर विक्रमसिंह के खून से रंगी तलवार लेकर उदयसिंह के कक्ष में घुसा। पन्ना ने विरोध किया, परंतु उसने सोए बालक पर तलवार चला दी। पलंग पर से चीख तक नहीं उठी। माँ के दुलार में सोया हुआ चंदन फिर नहीं उठ सका। एक माँ ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बेटे का बलिदान दे दिया।

4. धनी व्यक्ति और उसका पुत्र

एक धनी व्यक्ति ने अपने आलसी, लापरवाह और कामचोर लड़के को कुछ कमाकर लाने के लिए कहा। लड़का काम करने के बजाय माँ के पास जाकर रोने लगा और माँ ने तरस खाकर उसे एक रुपया दे दिया। पिता के पूछने पर उसने एक रुपया अपनी कमाई का बताया। पिता अपने बेटे को अच्छी तरह जानता था। अपने बेटे को पाठ पढ़ाने के लिए उसने रुपया कुएँ में डालने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगली बार यही घटना दुबारा घटी। अबकी बार उसकी बहन ने तरस खाकर एक रुपया दे दिया। पिता ने रुपया कुएँ में फेंकने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगले दिन पिता ने माँ-बेटी को बाहर भेज दिया और पुत्र को कुछ कमाकर लाने को कहा। विवश होकर अंत में लड़का स्वयं परिश्रम करके एक सेठ का सामान पहुँचाकर चार आने पैसे कमाता है। इस बार पिता ने पैसे कुएँ में डालने को कहा तो लड़के ने इसका विरोध करते हुए कहा कि यह मेरी कमाई है, मैंने बड़ा कष्ट उठाकर ये पैसे कमाए हैं। जब अनुभवी पिता समझ गए कि बेटा मेहनती और समझदार हो गया है तो उन्होंने अपना सारा व्यापार लड़के को सौंप दिया।

5. गधा और गीदड़

रामू धोबी के पास एक गधा था। रामू उससे दिनभर काम करवाता और चरने के लिए रात को खुला छोड़ देता। वह मैदान में जाकर भर-पेट घास खाता और वापस घर आ जाता। गधा बहुत सीधा-सादा था। वह बहुत उदास रहता था, क्योंकि उसका कोई मित्र नहीं था। एक दिन जब वह मैदान में घास चर रहा था, तभी वहाँ एक गीदड़ आया और दोनों आपस में बातें करने लगे। गीदड़ का भी कोई मित्र नहीं था। दोनों में मित्रता हो गई। एक दिन गीदड़ बोला, ''मित्र तुम घास खाते-खाते ऊब गए होगे। चलो, तुम्हें खरबूजे खिलाता हूँ।'' गधा और गीदड़ दोनों खरबूजे के खेत में घुसकर खरबूजे खाने लगे। पेट भर जाने पर गधे ने प्रसन्न होकर ढेंचू-ढेंचू का राग अलापना शुरू कर दिया। गीदड़ ने कहा, ''अपना राग अलापना बंद करो, मालिक उठ गया, तो हम मुसीबत में पड़ जाएँगे।'' गधा न माना और रेंकता रहा। बेसुरा राग सुनकर खेत के मालिक की नींद टूट गई। वह डंडा लेकर खेत की ओर भागा। अपने खेत की दुर्दशा देखकर वह क्रोध से

आग-बबूला हो उठा। उसने जमकर दोनों को पीटा। गधे के साथ मित्रता करने का फल गीदड़ को भी भोगना पड़ा।

6. सूर्य और वायु

एक दिन सूर्य और वायु में बहस हो गई। सूर्य कहने लगा कि मैं अधिक बलवान हूँ। वायु कहने लगी कि मैं अधिक बलवान हूँ। बहुत देर तक दोनों आपस में बहस करते रहे। अचानक सूर्य ने देखा कि रास्ते पर एक यात्री कंबल ओढ़े चला आ रहा है। सूर्य को एक उपाय सूझा। उसने वायु से कहा, ''जो इस यात्री के शरीर से कंबल उतरवा देगा, वही अधिक बलवान होगा।'' वायु ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली। वायु जोर-जोर से चलने लगी। यात्री ने कंबल कसकर ओढ़ लिया। वायु और जोर से चली। यात्री ने और कसकर कंबल लपेट लिया। अब वायु ने बवंडर का रूप ले लिया। यात्री एक गड्ढे में कंबल ओढ़कर छिप गया। वायु ने थककर सूर्य से कहा, ''अब तुम्हारी बारी है।'' सूर्य ने अपनी धूप तेज कर दी। यात्री ने चलना जारी रखा। सूर्य ने अपना ताप और बढ़ाया। यात्री को पसीने आने लगे। सूर्य खूब जोर से चमका। अब यात्री गरमी सहन नहीं कर पाया। उसने कंबल उतार दिया और पेड़ की छाया में बैठ गया। सूर्य ने वायु से पूछा, ''अब बताओ, कौन अधिक बलवान है?'' वायु ने हार स्वीकार कर ली।

7. सिंह और सियार की गुफा

किसी वन में खरनखर नामक सिंह रहता था। वह दिनभर भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमता रहा परंतु उसे थोड़ा-सा भी भोजन प्राप्त न हुआ। भूख से व्याकुल उस शेर को एक बड़ी गुफा दिखाई दी। उसने सोचा अवश्य रात को कोई जानवर यहाँ आएगा। यह सोचकर वह उस गुफा में घुस गया। इस बीच उस गुफा का स्वामी दधिपुच्छ नामक सियार आया तो उसने गुफा में घुसते हुए शेर के पैरों के निशान देखे, परंतु बाहर निकलते पैरों के निशान नहीं दिखे। सियार ने सोचा अगर शेर अंदर हुआ तो मैं अवश्य मारा जाऊँगा। अत: उसने सोचकर गुफा से दूर खड़े होकर आवाज देना शुरू किया– हे गुफा! तुम्हें याद नहीं कि मेरे तुम्हारे बीच में एक समझौता हुआ था कि शाम को मेरे लौटने पर तुम मुझे आवाज देकर बुलाओगी। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं दूसरी जगह चला जाऊँगा। शेर ने मन में सोचा कि अवश्य ही यह गुफा अपने मालिक के आने पर आवाज देती होगी, परंतु मेरे भय से इसकी आवाज रुँध गई होगी। अत: मैं ही आवाज लगा देता हूँ। ऐसा विचार करके शेर ने गर्जना की। शेर की गर्जना सुनकर जंगलवासी पक्षी-जानवर भयभीत हो गए। दधिपुच्छ सियार भी यह कहता हुआ वहाँ से भाग चला जो व्यक्ति न आए हुए दु:ख का प्रतिकार करता है वह शोभा पाता है। जो न आए हुए दु:ख का प्रतिकार नहीं करता, वह चिंताग्रस्त होता है। वहाँ वन में रहते हुए मैं बूढ़ा हो गया हूँ, परंतु कभी भी मैंने गुफा की आवाज नहीं सुनी।

पाठ-5 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बधित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरक्षित हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।

2. (i) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।

(ii) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।

3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।

4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।

5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।

6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।

7. (i) 101 पर। (ii) 108 पर। (iii) 100 पर। (iv) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।

8. (i) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
(ii) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।

9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलत: वाहन से नियंत्रण हटते ही दुर्घटना हो जाती है। अत: वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।

10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्राय: वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।

11. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसे जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।

12. (1) सड़क संकेतक लगाए जाएँ जिनमें गति सीमा दर्शायी गयी हो। (2) स्कूल, कालेज, अस्पताल, राजकीय कार्यालयों के पास स्पीड ब्रेकर लगे हों। (3) ट्रैफिक पुलिस द्वारा निगरानी रखी जाए। (4) नागरिकों को सड़क सुरक्षा के विषय में पूर्ण जानकारी हो। (5) राजमार्गों और एक्सप्रेस वे पर गति सीमा के लिए विशेष निर्देश हों। हाँ, सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए ऐसा करना आवश्यक है।

13. (i) बच्चों को सड़क को खेल के मैदान के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिए। (ii) बच्चों को न तो सड़क पर दौड़ना चाहिए और न ही दौड़ने की होड़ करनी चाहिए। (iii) आवश्यकता होने पर यदि सड़क पर मुड़ना हो तो मुड़ने की दिशा में अपने हाथ द्वारा संकेत करना चाहिए। (iv) साइकिल नंगे पैर अथवा चप्पल पहनकर नहीं चलानी चाहिए बल्कि अच्छे किस्म के जूते पहनकर ही साइकिल चलानी चाहिए।

14. मेरी दृष्टि में घर से विद्यालय एवं विद्यालय से घर पहुँचने के सुरक्षित रास्ते की योजना बिन्दुवार निम्नलिखित हो सकती है–
(क) सड़क पर सदैव बायीं ओर चलना चाहिए। (ख) वाहनों से सदैव एक निश्चित दूरी बनाए रखनी चाहिए। (ग) यदि पीछे से कोई वाहन आ रहा हो तो फुटपाथ पर होकर चलना चाहिए। (घ) सड़क के संकेत चिह्नों एवं संकेतों के बारे में जानकारी रखकर उनका सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए। (ङ) पैदल होने पर सड़क को जेब्रा क्रासिंग से ही पार करना चाहिए।

15. विद्यालय जाते समय और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं–
(i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू-टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।

16. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए–

1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

17. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ-बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

18. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।

2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।
4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

19.
- यातायात के नियम हमारी सुरक्षा के लिये हैं, इसलिये हमें हमेशा उनका पालन करना चाहिये।
- हमें यातायात बत्ती/संकेतों का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये।
- हमें हमेशा सीट बैल्ट का प्रयोग करना चाहिये।
- दो पहिया वाहन चालकों को हमेशा हैलमेट पहनना चाहिये।
- हमें हमेशा निर्धारित गति सीमा के अन्दर ही वाहन चलाने चाहिये।
- हमें लेन ड्राइविंग अपनानी चाहिये।
- सड़क पार करने के लिये पैदल चलने वाले यात्रियों को हमेशा जेब्रा क्रॉसिंग का उपयोग करना चाहिये।
- वाहन चालकों को पैदल चलने वालों को पर्याप्त स्थान देना चाहिये।
- सड़क पार करते समय हमें आने वाले वाहनों की दूरी और गति का सही-सही अनुमान करना चाहिये।
- हमें अपने वाहन पार्किंग स्थलों पर ही खड़े करने चाहिये या फिर अन्य उचित स्थान पर खड़े करने चाहिए।

20.

त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अत: गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अत: वाहन की गति नियंत्रित करें।

21. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

22. कॉलोनी के कुछ लोग जगह-जगह कचरा एवं गंदगी फैलाते रहते हैं। इससे न केवल पूरी कॉलोनी गंदी नजर आती है बल्कि अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी फैलती हैं। स्वच्छ भारत अभियान इस समय पूरे देश में चलाया जा रहा है। हम अपनी कॉलोनी के लोगों को समझायेंगे कि सभी लोग अपने घरों से निकलने वाले कूड़े-कचरे को इधर-उधर न डालकर कूड़ेदान में व एक नियत स्थान पर ही डालें जिससे पूरी कॉलोनी साफ-सुथरी नजर आये और हम स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे सकें।

23. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है। जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए, क्योंकि कल पानी नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

24. हमारा घर साफ-सुथरा रहे इस हेतु हम प्रतिदिन अपने घर की सफाई करेंगे। गंदगी का एक निश्चित स्थान पर निस्तारण करेंगे। कूड़ा-कचरा जहाँ-तहाँ कदापि विखरने नहीं देंगे। गंदगी के निदान हेतु पड़ोसियों के साथ सामंजस्य बनाकर सामुदायिक योजना बनाएँगे ताकि इसका दीर्घकालिक एवं ठोस समाधान हो सके।

25. घर में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ प्रयोग की जाती हैं। इनसे उपयोगी चीजों के प्राप्त होने के साथ-साथ कूड़ा-कचरा भी निकलता है। इस कूड़े-कचरे से सर्वप्रथम हम दैनिक जीवन हेतु उपयोगी हस्तनिर्मित वस्तुएँ बनाने का प्रयास करेंगे; जैसे—गत्ते से डस्टबीन बनाना, सब्जी के छिलकों से जैविक खाद बनाना आदि। इसके बाद बिलकुल निष्प्रयोज्य कूड़े-कचरे का समुचित निस्तारण करेंगे।

26. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जायगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।
2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

27. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।

28. जो पानी हम पीने हेतु प्रयोग करते हैं, उसके प्रयोग में निम्नलिखित सावधानी बरतनी चाहिए —

(क) यह पानी सदैव ढककर रखना चाहिए ताकि यह प्रदूषित न हो।

(ख) पानी जिस स्रोत से प्राप्त हो रहा है, उसकी नियमित साफ-सफाई और औषधीय (रासायनिक) उपचार होना चाहिए।

(ग) पानी पीने हेतु, हैण्डल वाले लोटे का इस्तेमाल करना चाहिए।

(घ) जल पात्र को छोटे बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिए।